चैतन्य लहरी

खंड : XVI अंक : 3 व 4 मार्च - अप्रैल, 2004

2 श्री महाशिवरात्री पूजा, पुणे , 15–2–2004

6 गुरु पूर्णिमा, लन्दन, 29–7–1980

18 सहजयोगियों को श्रीमाताजी का परामर्श

28 सर सी. पी. श्रीवास्तव का भाषण, मुम्बई, 26–12–1980

33 कविता लेखन श्रीमाताजी का वरदान

36 चक्रों का वर्णन दिल्ली, 3–1–1978

बगैर आत्मसाक्षात्कार के कल्याण नहीं हो सकता।

महाशिवरात्रि पूजा
(पुणे 15-02-2004)

आज हम लोग यहाँ गुरु की पूजा करने के लिए उपस्थित हुए हैं। गुरु को सारे देवताओं से, देवियों से ऊँचा माना जाता है। वास्तविक ये गुरु कौन हैं? इसमें सबसे ज्यादा कौन–सी शक्ति संचरित है। ये गुरु तत्व जो है, यही शिव है। शिव स्वरूप जो शक्ति है उसी को हमें गुरु की शक्ति समझना चाहिए क्योंकि जब आप गुरु की शक्ति प्राप्त करते हैं और आपके अन्दर वह शक्ति प्लावित होती है तब आप स्वयं भी गुरु हो जाते हैं। पर कार्य जो इस शक्ति का है वो है आपका 'कल्याण'। जिसको यह शक्ति प्राप्त होती है उसको यह समझ लेना चाहिए कि अब उसका 'कल्याण' हो गया। 'कल्याण' का मतलब छोटे शब्दों में देना बड़ा कठिन है। 'कल्याण' मानें हर तरह से साफल्य, हर तरह से प्लावित होना, हर तरह से अलंकृत होना।

जब आशीर्वाद में कोई कहता है कि तुम्हारा 'कल्याण' हो तो क्या होना चाहिए? क्या होता है? ये कल्याण क्या है? यह वही कल्याण है जिसको हम 'आत्मसाक्षात्कार' कहते हैं। बगैर आत्मसाक्षात्कार के कल्याण नहीं हो सकता। उसकी समझ भी नहीं आ सकती और उसको आत्मसात भी नहीं किया जा सकता। ये सब चीजें एक साथ कल्याणमय होती हैं और जिसकी वजह से मनुष्य अपने को अत्यन्त सुखी, अत्यन्त तेजस्वी समझता है। इस कल्याणमार्ग के लिए आपको जो करना पड़ा वो कर दिया, जो मेहनत करनी थी सो कर ली, जो विश्वास धरने थे वो धर लिए। लेकिन जब कल्याण का मार्ग अब मिल गया, जब आपको गुरु ने मन्त्र दे दिया कि आपका कल्याण हो जाए तो क्या चीज़ घटित होगी? आपके अन्दर सबसे बड़ी चीज समाधान। इसके बाद कुछ खोजना नहीं। अब आप स्वयं भी गुरु हो गए। अब आपको कुछ विशेष प्राप्त होने वाला नहीं है। किन्तु इस समाधान का जो आशीर्वाद है उसको आप महसूस कर सकेंगे। उसको आप जान सकेंगे और उसमें आप रममाण हो सकेंगे। पहले तो देखिए, सबसे बड़ी चीज है शारीरिक-शारीरिक तकलीफें, शारीरिक दुर्बलता इस कल्याण के मार्ग से साफ हो जाएंगी। आपकी शारीरिक तकलीफें खत्म हो जाएंगी। यह नहीं हुई तो सोचना है कि अभी कल्याण नहीं हुआ। उसके बाद आपकी मानसिक दुर्बलताएं जो हैं वो भी कल्याण में सब खत्म हो जानी चाहिएं। जो दुर्बलता आपके अन्दर मानसिक है, जिसके कारण आप पूरी तरह से खिल नहीं पाते, वो शक्ति इसमें है और आप इसको जब प्राप्त करते हैं तो आपका वाकई कल्याण हो जाता है, माने आप पार हो जाते हैं। इसमें भी श्री महादेव जी सहायक हैं। जब आपकी कुण्डलिनी आपके सहस्रार

को छेदती है सो वहाँ महादेव बैठे हुए हैं। इसीलिए उनको महादेव कहते हैं। देवों में देव महादेव होते हैं।

इस कल्याण मार्ग में और बहुत सी **उपलब्धियाँ हैं। इसमें सबसे बड़ी उपलब्धि है शान्ति, मानसिक शान्ति, शारीरिक शान्ति और सबसे बढ़कर सांसारिक शान्ति। संसार की अनेक व्याधियाँ हैं, अनेक तकलीफें हैं! वो सब इसको पाकर, इस कल्याण को पाकर खत्म हो जाती हैं।** उसका अस्तित्व ही नहीं रहता है। ऐसे लोग आप देख सकते हैं दुनिया में होते हैं जो कि इस कल्याण की शक्ति को प्राप्त करके आराम से अपने स्थानापन्न होकर के ध्यानस्थ हो जाते हैं। यही कल्याण है जिससे मनुष्य में पूरी तरह का सन्तुलन आ जाता है। और वो सन्तुलन पाने के लिए आपको सिर्फ़ गुरु शरण लेनी चाहिए। गुरु के शरण जाने से आपमें वो सन्तुलन आ जाएगा। कि आपको ऐसा लगेगा कि आपने सब कुछ पा लिया, अब और कुछ पाने का नहीं। इस प्रकार का सन्तुलन एक विलक्षण शक्ति देता है। और वो शक्ति, मैं उसे प्रेम की शक्ति कहती हूँ , जिसे मनुष्य जब प्राप्त करता है तो उसका सारा शरीर रोमांचित हो जाता है। माने किसी अद्वितीय शक्ति ने उनको आलिंगन किया हो। और उनके अन्दर ये शक्ति भी जिससे वो सारी दुनिया की परेशानियाँ, उथल पुथल, असन्तुलन, सब से ऊपर उठकर एक सन्तुलन में विचरण करते हैं। इसलिए इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए लोग बहुत कोशिश करते हैं। और वो दूसरे मनुष्य से, मानव से ही इसे प्राप्त करते हैं जो स्वयं भगवान स्वरूप हो जाता है और जो स्वयं ही इस चीज़ को प्राप्त किए हुए हैं।

प्रवचन (अंग्रेज़ी से अनुवादित)

ये ऐसा विषय है जिसे केवल हिन्दी भाषा में ही वर्णन किया जा सकता है। इसमें बताया गया है कि गुरु पद किसी अन्य व्यक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है परन्तु स्वयं उस व्यक्ति में भी यह शक्ति होनी चाहिए, आरम्भ में मानसिक शान्ति की शक्ति तथा सभी सांसारिक, मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं पर विजय पाने कि शक्ति। गुरु के आशीर्वाद तथा अपने मानसिक सन्तुलन से आप इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। जब आप स्वयं गुरु बन जाते हैं तो आप में भी अन्य

लोगों को आशीर्वादित करने को शक्ति आ जाती है। आशीर्वाद देने की इस शक्ति से आप बहुत से लोगों को गुरु बना सकते है। एक बार जब कोई गुरु बन जाता है और उसमें शक्ति होती है तो यह अत्यन्त तुष्टदायी और श्रेयस्कर होती है। व्यक्ति में इतना संतोष होता है कि उसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं रहती। यह श्री शिव की शक्ति है। आपने देखा है कि श्री शिव के पास बहुत अधिक कपड़े नहीं हैं। वे कोई श्रंगार नहीं करते, हर समय ध्यान अवस्था में बैठे रहते हैं। किसी चीज़ की उन्हें आवश्यकता नहीं रहती। अपने आप में वे इतने संतुष्ट हैं कि उन्हें किसी चीज़ की चाहत नहीं है। यदि आपका कोई गुरु है जो उस स्तर का है और योग्य है तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद आपको भी यही शक्ति प्राप्त होती है। गुरु बननें के लिए व्यक्ति को प्रयत्न नहीं करना चाहिए। ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है। गुरु बनने का यदि आप प्रयत्न करेंगे तो आप कभी गुरु नहीं बन पाऐंगे। बिना मांगे, बिना प्रयत्न किए, यह स्थिति स्वतः आप में आनी चाहिए। 'ध्यान' ही इस स्थिति को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है। ध्यान अर्थात Meditation। केवल ध्यान करें, कुछ मांगे नहीं। ध्यान ही आपको वह शरीर यन्त्र प्रदान करता है जो गुरु की महान शक्ति को धारण कर सके। और तब स्वतः आप यह शक्ति अन्य लोगों को भी देते हैं। इसके लिए आपको परिश्रम नहीं करना पड़ता। आपकी उपस्थिति मात्र से ही लोगों को पूर्ण सन्तोष की यह शक्ति प्राप्त हो जाती है तथा आपको और अन्य लोगों को मोक्ष मिल जाता है। इस प्रकार उत्थान यात्रा के मार्ग की सभी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं और स्वर्गीय शान्ति एवं आनन्द के आशीर्वाद में आप शराबोर हो जाते हैं। इसी कारण से इसे 'कैवल्य' कहा गया है अर्थात केवल आशीर्वाद। इसके लिए कोई अन्य शब्द नहीं बनाया जा सकता। इसका वर्णन करने का कोई अन्य मार्ग नहीं है। आपने इसी स्थिति में उन्नत होना है। आप जानते हैं कि आप उस अवस्था में हैं। यह इतनी उच्चावस्था है कि एक बार इसमें पहुँचने के पश्चात् मांगने के जैसा कुछ नहीं रह जाता। आप इतने संतुष्ट हो जाते हैं। इस विशिष्ट शक्ति के विषय में मैं लगातार बोल सकती हूँ। अतः कृपया मैंने जो कुछ कहा है उस पर ध्यान लगाएं। आप सबमें ये अवस्था प्राप्त करने की योग्यता है, पूर्ण शान्ति एवं आनन्द की अवस्था प्राप्त करने की।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सहजयोगियों को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का परामर्श

गुरु पूर्णिमा

लंदन, 29 जुलाई 1980

(अंग्रेजी से अनुवादित)

आज आपने अपने गुरु, जो कि आपकी माँ भी हैं, की पूजा का आयोजन किया है।

इस पूजा का आयोजन क्यों किया गया है?

व्यक्ति को समझना चाहिए कि हर शिष्य के लिए अपने गुरु की पूजा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परन्तु गुरु को भी सच्चा गुरु होना आवश्यक है, ऐसा गुरु नहीं जो अपने शिष्यों का अनुचित लाभ उठाता हो या जिसे परमात्मा द्वारा अधिकार न दिया गया हो। पूजा का आयोजन किया गया है क्योंकि आप लोगों को श्री ईसा–मसीह के कायदे कानूनों की दीक्षा दी गई है। आपको बताया गया हैं कि मानव के धर्म क्या हैं? इसके लिए वास्तव में आपको गुरु की आवश्यकता नहीं है, केवल पुस्तक पढ़कर आप ईसामसीह के अधिनियमों को जान सकते हैं। परन्तु गुरु को ये देखना होता है कि आप इन पर चलते भी हैं कि नहीं। इन अधिनियमों पर चलना चाहिए, इन्हें अपने जीवन में लाया जाना चाहिए। परन्तु गुरु, एक सुधारक शक्ति, के बिना ऐसा कर पाना कठिन है, ईसा–मसीह के नियमों का अनुसरण करना बहुत कठिन है क्योंकि मानवीय चेतना और परमेश्वरी चेतना के मध्य बहुत दूरी है और इस दूरी को केवल ऐसा गुरु पाट सकता है जो स्वयं पूर्ण हो।

आज पूर्णिमा है अर्थात पूर्ण चन्द्र है। केवल पूर्ण–व्यक्तित्व गुरु ही इन अधिनियमों के विषय में बात कर सकता है तथा अपनी सूझ–बूझ के स्तर पर अपने शिष्यों को उन्नत कर सकता है ताकि वे इन धर्मादेशों को आत्म–सात कर सकें। इस खाई को पाटने के लिए गुरु होता है। अतः ये आवश्यक है कि गुरु उच्चकोटि का आत्म–साक्षात्कारी तथा अत्यन्त उन्नत (Evolved) व्यक्ति हो, सन्यासी या जंगलवासी होना आवश्यक नहीं है। सम्राट भी गुरु हो सकता है। व्यक्ति के जीवन की बाह्य अभिव्यक्तियों का कोई विशेष महत्व नहीं है, आप किस पद पर हैं, इन सांसारिक पदवियों का भी गुरुत्व के लिए कोई विशेष महत्व नहीं है। आवश्यक बात तो परमात्मा (Lord) के धर्मादेशों को आत्म–सात करना है।

मैं पुनः कह रही हूँ कि आपको ये अधिनियम (Statutes) आत्म–सात करने होंगे। आइए देखते हैं कि ये धर्मादेश हैं क्या? पहला धर्मादेश है, "आप किसी को हानि न पहुँचाएं" (You do not do harm to anyone) यह प्रथम नियम है। पशु, बिना ये जाने, चोट पहुँचाते हैं कि वे किसी को चोट पहुँचा रहे हैं। यदि आप साँप के समीप जाएंगे तो वह काटेगा। बिच्छू का कार्य डंक मारना है। परन्तु मानव को चाहिए कि किसी को हानि नहीं पहुँचाए। मानव सुधार कर सकता है हानि नहीं पहुँचा सकता। परन्तु अहिंसा का ये सिद्धान्त उस सीमा तक ले जाया गया जहाँ वास्तविकता समाप्त हो गई। उदाहरण के रूप में जब ये कहा गया कि 'हिंसा मत करो' तो लोग कहने लगे कि हम मच्छरों और खटमलों के साथ हिंसा नहीं करेंगे। कुछ लोग ऐसे धर्मों का अनुसरण कर रहे हैं जिनमें मच्छरों और खटमलों से हिंसा नहीं की जाती। किसी चीज़ को मूर्खता की सीमा तक ले जाना वास्तविकता नहीं हो सकती। सर्वप्रथम तो हमें उस व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए जो परमात्मा के मार्ग पर चल रहा है, जो आत्म–साक्षात्कारी है। उसमें कुछ गलतियाँ

भी हो सकती हैं। हो सकता है उसे सुधार की आवश्यकता है क्योंकि अभी तक कोई भी पूर्ण नहीं है, अतः किसी को हानि न पहुँचाएं, सदैव सहायता करने का प्रयत्न करें। दूसरे कोई जो सत्य–साधक है वह गलत भी हो सकता है। हो सकता है वह गलत गुरुओं के पास गया हो और उसने गलत कार्य किए हों, उसके लिए हृदय में करुणा भाव रखें क्योंकि किसी ज़माने में आप भी गलत कार्य करते रहे होंगे। कभी आप भी भटके होंगे। अतः आपमें सहानुभूति होनी चाहिए, इसलिए सहज में आने से पूर्व आपने गलतियाँ की भी तो एक प्रकार से यह अच्छा है क्योंकि अब आपके हृदय में उनके लिए सहानुभूति होगी। तो किसी भी प्रकार से आपको मानव को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए, उनके प्रति शारीरिक हिंसा नहीं करनी चाहिए और न ही उन्हें भावनात्मक कष्ट देनें चाहिए, सुधारने के लिए यदि कुछ करना पड़े तो किसी सीमा तक ठीक है।

दूसरा धर्मादेश ये है कि आपको अपने पैरों पर खड़ा होना है और समझना है कि यहाँ पर आप सत्य के सामंजस्य में हैं, सत्य के साक्षी हैं तथा 'सत्य' को आपने देखा है। आप जानते हैं कि सत्य क्या है और असत्य से आप समझौता नहीं कर सकते। ये कार्य आप नहीं कर सकते। ऐसा करने के लिए आपको किसी को चोट पहुँचाने की आवश्यकता नहीं है, आपने तो बस इसकी घोषणा करनी है। खड़े होकर आपने कहना है कि आपने सत्य को देखा है, यही सत्य है। इसी से आपको एकरूप होना है ताकि लोग सत्य का प्रकाश आपके अन्दर देख सकें और इसे स्वीकार कर सकें।

यह अन्य लोगों को भाषण देने की बात नहीं है कि आप सच्चे बनें, यही सत्य हमने देखा है तथा परमात्मा के यही आदेश हैं और इस प्रकार ये कार्यान्वित होते हैं। चैतन्य चेतना (Vibratory Awareness) हम इसे देख पाए कि यही सत्य है। परन्तु इसके विषय में पूरी तरह से विश्वस्त हो जाएं। इसके लिए सर्वप्रथम अपने को परखें, अन्यथा हो सकता है कि आप आसुरी प्रवृत्तियों (Evil) के हाथों में खेल रहे हों। सहजयोग शुरु करने वाले कई लोगों के साथ आरम्भ में ऐसा होता है। अतः सावधान रहें, विश्वास रखें कि आप 'सत्य' बता रहे हैं कुछ अन्य नहीं, तथा सत्य को आपने पूरी तरह से महसूस कर लिया है। **जिन लोगों को चैतन्य लहरियाँ महसूस नहीं हुई हैं उन्हें सहजयोग के विषय में नहीं बोलना चाहिए। यह अधिकार उन्हें नहीं है। उन्हें चैतन्य लहरियाँ प्राप्त करनी होंगी।** अपने अन्दर पूरी तरह से चैतन्य को आत्म–सात करना होगा केवल तभी वे कह सकते हैं, "हाँ हमने महसूस किया है।" इस आधुनिक काल में सहजयोगियों के करने के लिए यह महत्वपूर्ण कार्य है–उद्घोष करना कि उन्होंने सत्य पा लिया है यह भाग बहुत दुर्बल है। जिस भी प्रकार से आप चाहें 'सत्य' की घोषणा कर सकते हैं। आप पुस्तकें लिख सकते हैं, मित्रों–सम्बन्धियों तथा सभी से बातचीत करके उन्हें बता सकते हैं कि अब यही सत्य है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं, कि परमात्मा की कृपा का आशीर्वाद आपको प्राप्त हो गया है, कि आप आत्म–साक्षात्कारी हैं तथा सर्वव्यापी परमेश्वरी शक्ति (Divine Power) को आपने महसूस कर लिया है, कि आप अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं।' ये बात आपने अन्य लोगों को बतानी है और समझाना है कि आपके सत्य को स्वीकार करने से किसी भी प्रकार आप सत्य में कुछ जोड़ नहीं रहे, आप अपने को अलंकृत कर रहे हैं। सत्य का आनन्द लेने के लिए भी व्यक्ति को साहस की आवश्यकता है। हो सकता है कि कभी लोग आप पर हँसें, आपका

मज़ाक बनाऐं, आपको दण्डित करें। परन्तु इसकी चिन्ता आपको नहीं होनी चाहिए क्योंकि आपका सम्बन्ध धर्मादेशों से है परमात्मा की कृपा से है। इस तरह का दृढ़ योग (Connection) जब आपका हो जाएगा तब आपको इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोग क्या कहते हैं और इसके विषय में उन्हें क्या कहना चाहिए। आपको खड़े हो जाना है, सत्य से स्वयं को अलंकृत करना है और लोगों से बातचीत करनी है। तब लोग समझ जाएंगे कि आपने सत्य को प्राप्त कर लिया है। अधिकार के साथ सत्य के विषय में जब आप लोगों के सम्मुख बोलेंगे तो वे जान जाएंगे कि आपने सत्य प्राप्त कर लिया है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति तथा एक सामान्य व्यक्ति में मूलतः यही अन्तर है कि आत्मासाक्षात्कारी व्यक्ति दुखों तथा परमात्मा से विरह की बात नहीं करता, वह कहता है, "अब मुझे ये प्राप्त हो गया है। ये सत्य है।" जैसे ईसा–मसीह ने कहा था, **"मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही मार्ग हूँ।"** कोई अन्य व्यक्ति भी ये बात कह सकता है। परन्तु आप इसे समझ सकते हैं कि इस तरह की कही हुई बात सत्य नहीं है। आपके हृदय से, आत्म विश्वास से तथा पूरी सूझ–बूझ से जब सत्य निकलेगा तो लोग समझ जाएँगे कि यही पूर्ण सत्य है। तब सभी प्रकार के असत्य त्याग दिए जाएँगे। कोई यदि बुरा मानता है तो कोई बात नहीं क्योंकि सत्य बात कहकर आप उनकी रक्षा कर रहे हैं, आप उन्हें हानि नहीं पहुँचा रहे। परन्तु ये सब ठीक प्रकार से कहा जाना चाहिए, उथले–पन से नहीं। प्रेमपूर्वक समझाते हुए आप उन्हें बताएँ कि गलत क्या है, उस समय की प्रतीक्षा करें जब आप अत्यन्त विश्वास के साथ उन्हें बता सकें। लोगों को बताएँ, "यह चीज़ गलत है, ये गलत है, आप ये बात नहीं जानते, हमने भी यही कार्य किया था।" इस प्रकार से आप अपने गुरु सिद्धान्त को, 'गुरु तत्व' को प्रकट करेंगे। आपको सच्चा होना चाहिए। प्रथम बात ये है कि आपको सत्य को जानना है, इसका साक्षी होना है और इसका उद्घोष करना है।

तीसरा गुण जो सहजयोगी ने अपने अन्दर विकसित करना है वह है 'निर्लिप्तता'। शनैः शनैः ये गुण आप अपने अन्दर विकसित कर लेते हैं क्योंकि आप ये बात जान जाते हैं कि अपने अन्दर निर्लिप्तता विकसित किए बिना आपको चैतन्य–लहरियाँ पूरी तरह से नहीं आ रहीं। सभी प्रकार की निर्लिप्तता विकसित करनी होगी। कहने से अभिप्राय ये है कि आपकी प्राथमिकताएँ ही बदल जाएँगी। एक बार जब आपका चित्त आत्मा पर स्थापित हो जाएगा तो महत्वहीन चीज़ों की पकड़ स्वतः ही घटने लगेगी। उदाहरण के लिए आपके माता–पिता और बहन भाई हैं। भारत में ये बहुत बड़ी समस्या है। यहाँ (लन्दन) नहीं। पर आप लोग कुछ अधिक ही निर्लिप्त हैं। परन्तु भारत में लोग अपने बच्चों के मोह में बहुत अधिक फँसे हुए हैं। "ये मेरा बेटा है, और बाकी सब यतीम हैं? केवल आपके बेटे और बेटी ही वास्तव में बच्चे हैं।" मेरी बेटी, अपने बेटे के लिए तो मुझे करना ही होगा, मेरे पिता, मेरी माँ। दो तरह की लिप्साएँ हैं– एक तो मोह है – कि आप उनके लिए ये करना चाहते हैं, वो करना चाहते हैं, उन्हें सम्पति देना चाहते हैं, उनका बीमा कराना चाहते हैं आदि–आदि।

और दूसरी एक अन्य प्रकार की है जैसे यहाँ पर है। आप अपने पिता से घृणा करते हैं, अपनी माँ से घृणा करते हैं, सभी से घृणा करते हैं, दोनों प्रकार की लिप्साएँ एक सी हैं। अतः गहन निर्लिप्तता विकसित होनी आवश्यक है। निर्लिप्तता ये है कि आप ही अपने पिता हैं, आप ही अपनी माँ हैं आप ही अपने सभी कुछ हैं। आपकी आत्मा ही

आपके लिए सभी कुछ है। केवल अपनी आत्मा का आनन्द आपने लेना है। तभी आप उनके प्रति निर्लिप्त होते हैं और उनका वास्तव में भला करते हैं। क्योंकि निर्लिप्त होकर ही आपको उनकी पूरी तरह से जानकारी होती है और आप ये भी जान जाते हैं कि क्या करना है। उदाहरण के तौर पर लोगों को कुछ शौक होते हैं। मनुष्य हमेशा किसी न किसी चीज़ के लिए पागल होता है। ये कोई भी चीज़ हो सकती है। व्यक्ति को समझना है कि केवल एक ही धुन होनी चाहिए–आत्मा में स्थापित होना, पूरी तरह से आत्मा में स्थापित होना, बाकी सब लगाव समाप्त हो जाएंगे क्योंकि आत्मा सर्वोच्च आनन्दप्रदायी चीज़ है। ये अत्यन्त पोषक है और सुन्दरतम।

अतः अन्य सभी चीजें छूट जाती हैं और आप केवल उसका आनन्द उठाते हैं जो पूर्ण आनन्द का स्रोत है। आप अपनी आत्मा से लिप्त हो जाते हैं और निर्लिप्तता कार्यान्वित हो उठती है। कभी–कभी निर्लिप्तता को रूखेपन की अनुमति (लाइसेंस) मान लिया जाता है। परन्तु ऐसा करना हास्यास्पद है। हर सुन्दर चीज़ को गंदा करना मानव का गुण है। वास्तव में वही व्यक्ति सबसे सुन्दर है जो निर्लिप्त है तथा अत्यन्त प्रेममय है, जो प्रेम है। फूलों को देखें वे निर्लिप्त हैं। कल उनकी मृत्यु हो जानी है उन्होंने जीवित नहीं रहना परन्तु हर क्षण वो जीवित रहते हैं और आपको सुगन्ध देते हैं। पेड़ किसी चीज़ से लिप्त नहीं हैं, कल उनकी मृत्यु हो जाएगी, परन्तु कोई बात नहीं। कोई भी जब उनके पास आता है तो वे उसे छाया देते हैं, फल देते हैं। लिप्सा का अर्थ है प्रेम की मृत्यु, प्रेम की पूरी तरह से मृत्यु ही लिप्सा है। उदाहरण के रूप में पेड़ के अन्दर जड़ों से जीवनजल उठता है। सभी हिस्सों में जाता है, फूलों में, फलों में, और बाकी का पृथ्वी माँ में लौट जाता है। ये किसी एक हिस्से से लिप्त नहीं होता। मान लो ये रस जाकर किसी एक फल से लिप्त हो जाए तो क्या होगा? फल की मृत्यु हो जाएगी और पेड़ की भी। निर्लिप्तता आपके प्रेम को, प्रेम के प्रसार को गति प्रदान करती है।

और अब भौतिक चीज़ों की बात करें। भौतिक चीजें तब तक मूल्यहीन हैं जब तक उनके पीछे कोई भावना न हो। उदाहरण के रूप में जो साड़ी आज मैंने पहनी हुई है वो गुरु दिवस (गुरुपूर्णिमा) के लिए लाई गई थी। परन्तु उनके पास और कोई साड़ी न थी। उस दिन उन्होंने पूजा के लिए एक साड़ी खरीदनी चाही। मैंने कहा "आप लोग यदि विवश करते हैं तो मैं ले लूंगी परन्तु वह साड़ी मैंने आज पहन ली। केवल ये बताने के लिए कि ये लोग इतनी श्रद्धा और प्रेम से ये साड़ी खरीदकर लाए थे कि गुरु दिवस पर माँ हल्के रंग की साड़ी पहनना पसन्द करेंगी।–सफेद रेशम का शुद्ध रंग–पूर्ण निर्लिप्तता। परन्तु सफेद रंग में सारे रंग मिश्रित हैं, केवल तभी यह श्वेत बनता है, इसमें इतना संतुलन और एकता है! यही होना चाहिए–आपको भी सफेद बनना है, बर्फ से भी सफेद। निर्लिप्तता पावनता है, अबोधिता है, और अबोधिता एक ऐसा प्रकाश है, एक ऐसा प्रकाश जो सारी गंदगी के प्रति आपकी आँखें बन्द कर देता है। (गंदगी देखने की क्षमता समाप्त कर देता है) आप ये भी न देख पाएँगे कि कोई गलत नीयत से आया है। कोई व्यक्ति चोरी करने की नीयत से आपके पास आता है उसे भी आप कहेंगे आइए आपको क्या चाहिए।" आप उसे चाय आदि पेश करेंगे, उसके बाद यदि वह कहता है, "मैं तुम्हें लूटने आया हूँ।" "ठीक है अगर आप लूटना चाहते हो तो लूट लो।" तो वह आपको बिल्कुल भी न

लूटेगा। तो यही अबोधिता है जिसे व्यक्ति ने अपने अन्दर विकसित करना है और यह कार्य केवल निर्लिप्तता के माध्यम से किया जा सकता है, निर्लिप्तता चित्त से होती है। अपने चित्त को किसी भी चीज़ में न फसने दें, किसी भी प्रकार के कर्मकाण्डों में भी नहीं। कहें, हमने श्रीमाताजी के चरण नहीं धोए हैं, ठीक है कोई बात नहीं। आप मुझे प्रेम करते हैं ठीक है। कुछ गलतियाँ हो भी जाएँ तो भी कोई बात नहीं। निराकार क्षेत्र को यदि आप देखें तो यह केवल प्रेम है। यह एक कदम आगे बढ़ना है जैसे दौड़ लगाते हुए कोई व्यक्ति मुझ तक पहुँचने से एक कदम पहले गिर जाए और कहे माँ मुझे खेद है मैं आप तक पहुंचने से पहले गिर गया, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। परन्तु माँ आप देखें कि किस प्रकार मैंने आपको साष्टाँग प्रणाम किया। निर्लिप्तता तो काव्य की तरह से है।

अतः गुरु बनने के लिए व्यक्ति को निर्लिप्तता विकसित करनी होती है और निर्लिप्तता का अर्थ सन्यास बिल्कुल नहीं है और न ही ऐसा कुछ और। कभी–कभी विश्व के सम्मुख घोषणा करने के लिए व्यक्ति को ऐसे वस्त्र पहनने पड़ते हैं क्योंकि यदि आपको थोड़े समय में कोई कार्य समापन करना हो तो ईसा–मसीह की तरह से गहन आचरण अपनाना पड़ता है या हम कह सकते हैं, आदिशंकराचार्य की तरह। इन सभी लोगों का जीवन बहुत छोटा था और इस संक्षिप्त जीवन में इन लोगों को इतने महान कार्य करने थे कि इन्हें वास्तव में फौज की वर्दी की तरह से वस्त्र अपनाने पड़े। ये वस्त्र इन्होंने किसी को प्रभावित करने के लिए नहीं पहने थे। आजकल लोग सन्यासियों के वस्त्र इसलिए पहनते हैं कि इनसे वे लोगों को प्रभावित कर सकें कि वे निर्लिप्त हैं परन्तु उनके कारनामे बिल्कुल विपरीत होते हैं। तो पहली बात हमें समझनी चाहिए कि **हमें किसी को हानि नहीं पहुँचानी-अहिंसा।** किसी की हत्या न करना। इसका अर्थ ये भी नहीं है कि आपने मांस नहीं खाना या मछली आदि नहीं खानी। ये सब बेवकूफी है। निःसन्देह आपको भोजन आदि के पीछे नहीं दौड़ना, इस बात में कोई सन्देह नहीं। आपको हत्या नहीं करनी का अर्थ ये है कि आपने मानव हत्या नहीं करनी, 'THOU SHALT NOT KILL' अतः पहली बात किसी को हानि न पहुँचाना है।

दूसरी बात इस बात का ज्ञान है कि आपने सत्य को प्राप्त कर लिया है आपने इसका साक्ष्य (Testimony) बनना है।

तीसरे स्थान पर **निर्लिप्तता है।** जिस प्रकार से मैंने निर्लिप्तता के बारे में बताया, किसी एक व्यक्ति से लिप्त नहीं होना चाहिए क्योंकि वो हमारा सम्बन्धी आदि है। **सार्वभौमिक प्रेम की भावना विकसित करनी चाहिए** तथा किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए। यह निकृष्ट प्रकार की लिप्सा है। 'मैं घृणा करता हूँ' शब्द ही सहजयोगियों के मुँह पर नहीं आना चाहिए। इसे दण्डक कहते हैं ये आदेश (Statutes) हैं। किसी से घृणा करने का अधिकार आपको नहीं है चाहे वह राक्षस ही क्यों न हो, बेहतर होगा कि उनसे घृणा न करें। उन्हें अवसर दें।

ईसा–मसीह द्वारा दिया गया चौथा धर्मादेश है, **नैतिकता पूर्वक जीवनयापन करना** (To Lead a Moral Life) ये धर्मादेश सभी गुरुओं ने दिए थे सुकरात से लेकर मोज़िज, इब्राहम, दत्तात्रेय, जनक, गुरुनानक और मोहम्मद साहब तक और सौ वर्ष पूर्व श्री साईनाथ तक। सभी ने कहा कि नैतिक जीवन यापन करें। किसी ने भी नहीं कहा, कि आप विवाह न करें, अपनी पत्नी से बात न करें या पत्नी से सम्बन्ध न रखें। यह सब मूर्खता है। नैतिक जीवन बिताएँ। आप यदि अविवाहित युवा हैं तो अपनी

दृष्टि पृथ्वी पर रखें, पृथ्वी माँ आपको अबोधिता प्रदान करती है। पाश्चात्यजीवन में अधिकतर भ्रम और समस्याएं इसलिए पनप उठी हैं क्योंकि उन्होंने नैतिकता को त्याग फेंका है और नैतिकता को समाज का आधार मानना उनके लिए अत्यन्त कठिन है। यह बिल्कुल उल्टा है। परन्तु आपको यह कार्य करना होगा। पहिए को एक बार पूरी तरह से उलटना होगा। आरम्भ में समाज में इन पावन रिश्तों को स्थापित करने के लिए बहुत कुछ किया गया। कुछ कायदे कानून हैं जो कार्य करते हैं जैसे रसायनों के नियम, भौतिक विज्ञान के नियम जो रसायन तथा भौतिक शास्त्र में कार्य करते हैं। मानवीय नियमाचरण भी हैं जिन्हें व्यक्ति को समझना चाहिए–परस्पर सम्बन्ध। सम्बन्धों की उत्कृष्टता, सम्बन्धों की पावनता को समझा जाना आवश्यक है। केवल तभी आप सफल वैवाहिक जीवन बिता सकते हैं जो कि आधार है (Thou Shalt not Commit Adultery) पति–पत्नी के अतिरिक्त आप किसी अन्य से सम्बन्ध नहीं बनाएंगे। ईसा–मसीह ने ये कहा, क्योंकि शायद वे आधुनिक लोगों को समझते थे कि वे इस कार्य के लिए भी अपना मस्तिष्क चलाएँगे। ईसा–मसीह ने कहा, "आपकी दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए "Thou shall not have adulterous eyes" । उन दिनों में ये सोचना कितना महान स्वप्न था। भारत में होते हुए मैं भी इस बात को न समझ सकी। यहाँ आने के पश्चात् ही मैं देख पाई कि इसका अर्थ क्या है। ये दृष्टि की भूत–बाधा है, भूत–बाधा। ये आनन्द विहीन तथा निकृष्टतम आचरण है। चित्त पूरी तरह से भ्रमित हो जाता है। गरिमा समाप्त हो जाती है। दृष्टि स्थिर होनी चाहिए। स्थिरता पूर्वक यदि आप किसी की ओर देखें तो वो ये समझ लें कि सहज योग आपमें बसा हुआ है। प्रेम, सम्मान एवं गारिमापूर्वक देखें। टकटकी बाँधकर लोगों को न देखें। ऐसा करना तो बाधाओं के हाथ में खेलना है। पूरा समाज ही बाधाग्रस्त है। सभी आसुरी शक्तियों को खुला छोड़ दिया गया है और मैं सोचती हूँ कि जिस प्रकार लोग भूत–बाधित हैं वे वास्तविकता को देख भी नहीं सकते। कहने को वो इसाई हैं (ईसा–मसीह के अनुयायी) चित्त का ध्यान रखा जाना चाहिए। ये कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि चित्त ने ही प्रकाशमय होना है।

अतः हमें समझना है कि नैतिकता क्या है लोगों को हँसने दें और कहने दें, 'ये बड़े अजीबो गरीब लोग हैं'। परन्तु हमें अपने धर्मपरायण होने पर गर्व है, इसके लिए हम लज्जित नहीं हैं। धर्मपरायणता का यह महत्वपूर्ण भाग है। जो लोग इसका अनुसरण नहीं करते उनकी चैतन्य लहरियाँ बहुत तेज़ी से समाप्त हो जाएँगी।

अब गुरु के विषय में, गुरु को परिग्रह नहीं करना चाहिए, चीज़ें एकत्र नहीं करनी चाहिएं। यदि वह कुछ इक्ट्ठा करता भी है तो वह केवल आवश्यकता को पूरा करने के लिए होना चाहिए। गुरु को चाहिए कि अपनी एकत्र की हुई सारी चीज़ें बाँट दे। उसके पास टिकट संग्रह आदि चीज़ों के संग्रह नहीं होने चाहिएं। जो भी कुछ उपयोगी एवं सुन्दर है, जो भी कुछ प्रसन्नता एवं आनन्ददायक है, जो आँखों को सुख देता है, ऐसी चीज़ें एकत्र की जानी चाहिए। उसके पास ऐसी चीज़ें होनी चाहिए जिनका उनके जीवन में प्रतीकात्मक महत्व (Symbolic Importance) हो। ऐसी प्रतीकात्मकता हो जो ये दर्शाये कि वह व्यक्ति धार्मिक है। अधार्मिक जीवन की प्रतीकात्मक चीज़ों का संग्रह उसे नहीं करना चाहिए। जो भी वस्त्र वह पहनता है, जो भी कुछ दर्शाता है वह सब धार्मिकता का प्रतिनिधित्व करने वाले होने चाहिएं। यहाँ की स्थिति का ज्ञान तो हमें

नहीं है परन्तु भारत में जब हम लोग छोटे थे तो हमें सभी प्रकार का संगीत सुनने की आज्ञा न थी। कोई भी गन्दी चीज़ें, कोई भी गन्दे वृत्तचित्र (Documentary) देखने की आज्ञा न थी, कोई भी अपवित्र चीज़, जिससे गन्दी लहरियाँ आती हों वो आपके पास नहीं होनी चाहिए। कोई चीज़ यदि आपके पास है भी तो आपको सोचना चाहिए कि वह आप किसे दे सकते हैं अर्थात अपनी उदारता की अभिव्यक्ति करने के लिए ही आपको संग्रह करना चाहिए। सहजयोगी को समुद्र की तरह से उदार होना चाहिए। 'कंजूस सहजयोगी' की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। ये तो ऐसे होगा जैसे प्रकाश में अंधेरे का मिश्रण कर दिया गया हो। सहजयोग में कंजूसी की आज्ञा नहीं है।

किसी व्यक्ति का मस्तिष्क यदि इस बात पर जाता है कि मैं कितना पैसा बचा सकता हूँ, कितनी मेहनत बचा सकता हूँ – पैसा तथा परिश्रम बचाने के बहुत से तरीके हैं तथा अन्य लोगों को धोखा देने के या यहाँ–वहाँ कुछ चीजों में पैसा बनाने के भी बहुत से तरीके हैं, परन्तु यह सब सहजयोग के विरोध में है। ये आपको पतन की ओर ले जाएँगे। अपनी उदारता का आनन्द लें। कितनी ही बार मैं आपको उदारता के विषय में बता चुकी हूँ। मुझे याद है कि एक बार विदेश से लाई हुई एक साड़ी मैं उपहार में देना चाहती थी। भारत में लोग बाहर से लाई गई चीज़ों को पसन्द करते हैं यद्यपि मेरी समझ में नहीं आता कि वे इस प्रकार की नाईलॉन की साड़ियाँ क्यों पसन्द करते हैं! एक महिला ने कहा, मेरे पास कोई विदेशी साड़ी नहीं है ऐसी साड़ी यदि मुझे मिल जाए तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मेरे पास केवल एक ऐसी साड़ी बची थी, क्योंकि मुझे देने में बहुत आनन्द आता है, तो मैंने अपनी एक भतीजी – बहू को कहा, कि मैं ये साड़ी इस महिला को देना चाहती हूँ। त्योहार के दिन हम बड़ों को इस प्रकार का उपहार दे सकते हैं। वह (बहू) कहने लगी, "आपके पास केवल एक ही साड़ी बची है, आप वह भी क्यों दे देना चाहती हैं? जितनी भी साड़ियाँ आपके पास थी आपने सभी दे डाली हैं।" मैंने कहा, "मुझे देने की इच्छा होती है, मैं इसे दे डालूंगी।" रसोई में हम इनके बारे में बातचीत कर रहे थे, मैंने कहा, तुम क्यों मुझे रोक रही हो, इस मामले में मैं किसी की राय नहीं लूंगी। उसी समय दरवाजे की घण्टी बजी और एक भद्र पुरुष आया, वह अफ्रीका से मेरे लिए तीन बिलकुल वैसी साड़ियाँ लेकर आया था जैसी एक साड़ी मेरे पास बची थी। क्योंकि अफ्रीका जाने वाली एक महिला को मैंने कुछ रेशम की साड़ियाँ दीं थी तो उसने सोचा कि वह मुझे कुछ साड़ियाँ उपहार के रूप में भेजे और उसने ये साड़ियाँ मुझे भेजी थीं। आप बीचों–बीच खड़े हैं एक दरवाज़े से आ रहा है, एक दरवाज़े से जा रहा है। यह सारी गतिविधि देखना बहुत अच्छा लगाता है यह अत्यन्त दिलचस्प है।

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार आप देते हैं उसका भावनात्मक पक्ष इतना सुन्दर है कि आप इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। लन्दन में तीस साल से विवाहित एक महिला से मैं मिली, अचानक उसने कहा, "क्या संयोग है।" मैंने कहा, "क्यों?" उसने कहा, "आज के दिन जो मोतियों का हार आपने मेरे विवाह पर दिया था मैंने वही पहना हुआ है और आज ही आपसे मेरी मुलाकत हुई है! इस मुलाकत से सारा नाटक बदल गया। छोटा सा उपहार देने पर भी ऐसा होता है। सहजयोग में देने की ये महानतम कला हमें सीखनी चाहिए। दुनियावी चीज़ें त्याग दें, जैसे आप यदि किसी के जन्मोत्सव पर जाएँ तो एक कार्ड भेजें, 'आपका हार्दिक धन्यवाद' और इस प्रकार इस उत्सव को अधिक

गहन महत्व का अवसर बना दें। हमें देखना है कि किस प्रकार हम अपने प्रेम के प्रतीक विकसित करते हैं। चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण चीज़ें जब आप किसी को देंगे तो वह जान जाएगा कि यह क्या है? सहजयोगियों के प्रति उदारता में कभी कमी न आने दें। शनैः शनैः, आप हैरान होंगे कि छोटी–छोटी चीज़ों के माध्यम से किस प्रकार आप लोगों के हृदय जीतते हैं, मानों उन वस्तुओं में से चैतन्य लहरियाँ प्रभावित होती हैं और उनके लिए कार्य करती हैं। तत्पश्चात्, सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि ऐसी वस्तुएं इस्तेमाल करे जो प्राकृतिक स्वभाव की हैं। बनावट को त्याग दें। अधिक स्वाभाविक बनें। कहने से मेरा अभिप्राय ये नहीं है कि पेड़ों की जड़ों को निकाल कर खाने लगें या कच्ची मछलियाँ खाएं। मेरा ये अभिप्राय नहीं है। चीज़ों की अति में जाने से बचें। परन्तु अधिक प्राकृतिक जीवन बिताने का प्रयत्न करें। प्राकृतिक अर्थात लोग जान जाएँ कि आपमें मिथ्या अभिमान नहीं है। कुछ लोग आवारागर्दों की तरह से वस्त्र धारण करते हैं ताकि अधिक लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकें। मैं देखती हूँ कि कुछ लोग अपने बाल रंगते हैं! आपको सहज व्यक्ति होना चाहिए। आपका आचरण अत्यन्त स्वाभाविक होना चाहिए। विवेकहीन लोगों को ये बात बड़ी हास्यास्पद प्रतीत हो सकती है। सहजयोग में विवेक का बहुत महत्व है। हर समय आपको विवेक बनाए रखना होगा। प्राकृतिक का अर्थ है कि आपको स्वाभाविक वेश–भूषा पहननी चाहिए जो आप पर फबे। उदाहरण के रूप में इस जलवायु में श्री राम की तरह से वस्त्र पहनने का कोई लाभ नहीं है, वे तो शरीर के ऊपरी हिस्से में कोई वस्त्र पहनते ही नहीं थे। जिस भी देश के आप वासी हैं उसके हिसाब से और अवसर के अनुरूप वस्त्र धारण करें, जिसे आप सोचते हों अच्छा और गरिमामय है। इस प्रकार के वस्त्र आपकी सुरुचि तथा व्यक्तित्व को दर्शाएँगे। आपको वही वस्त्र पहनने चाहिएं जो आप पर फबते हैं। काई के रंग के वस्त्र, लम्बे सूट जो बड़े अटपटे लगते हैं और जिनमें व्यक्ति विदूषक लगता है, ऐसे वस्त्र न पहनें। विदूषकों जैसी चीज़ें अनावश्यक हैं और तड़क–भड़क वाली चीज़ें भी। सादे–सुन्दर वस्त्र पहनने चाहिएं जो आपको गरिमा प्रदान कर सकें। वास्तव में पूर्व के लोगों का ये मानना है कि परमात्मा ने हमें सुन्दर शरीर दिया है तथा इसे मानव सृजित सुन्दर चीज़ों से सजाया जाना चाहिए ताकि शरीर का सम्मान हो, इसकी पूजा हो। उदाहरण के तौर पर भारतीय महिलाएँ साड़ियाँ पहनती हैं। साड़ियाँ उनकी मनोदशा तथा शरीर की पूजा तथा सम्मान को अभिव्यक्ति करती हैं। वस्त्र ऐसे होने चाहिएं जिनका उपयोग भी हो और गरिमामय हों। सभी सहजयोगियों को एक से वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं है, ये मुझे अच्छे नहीं लगते। प्रकृति की तरह से वस्त्रों में भी विविधता होनी चाहिए। हर मनुष्य भिन्न व्यक्ति लगना चाहिए। पूजा आदि के लिए यदि एक ही जैसे वस्त्र पहन लिए जाऐं तो कोई बात नहीं ताकि आपका चित्त वैचित्र्य पर न जाऐ परन्तु आम जीवन में आपको सामान्य व्यक्ति होना है। आप सभी गृहस्थ हैं। किसी को कुछ त्यागने की आवश्यकता नहीं। आप लोगों को मैं कुमकुम लगाकर सड़कों पर जाने का परामर्श भी नहीं देती। आपको सामान्य व्यक्ति होना है जिसकी ओर कोई अंगुली न उठा सके। आपको हास्यास्पद या अटपटे वस्त्र नहीं पहननें। आपको सामान्य व्यक्ति की तरह से वस्त्र धारण करने हैं, सहजयोग में सामान्य होना अत्यन्त आवश्यक है।

इसके बाद हमें समझना है कि जाति, रंग

और भिन्न धर्मों के आधार पर हमें भेद–भाव आदि से ऊपर उठ जाना चाहिए। यदि आप इसाई हैं तो भी आपका पुनर्जन्म चर्च में तो नहीं होगा, आप चर्च से सम्बन्धित नहीं है। परमात्मा का धन्यवाद अन्यथा वहाँ की सारी प्रेतआत्माएँ तुरन्त आपको पकड़ लेतीं। परन्तु ये सब संस्कार काफी देर तक चलेंगे। किसी भी नई चीज़ को स्वीकार करने के लिए आपको नया जन्म लेना होगा, आपको पुनर्जन्म लेना होगा। और अब आपका पुनर्जन्म हो गया है। अब आप धर्मातीत हैं अर्थात किसी धर्मविशेष का अनुसरण करने की आपको आवश्यकता नहीं है। सभी धर्मों का मार्ग आपके लिए खुला है। आपने सभी धर्मों का सार तत्व ग्रहण करना है। किसी भी धार्मिक व्यक्ति की निन्दा या अपमान आपने नहीं करना, ऐसा करना अपराध है। सहजयोग में ये बहुत बड़ा अपराध है। आप जानते हैं कि ये कौन है। जाति–पाति के आधार पर अपना आंकलन नहीं किया जाना चाहिए। आप चीनी (Chinese) हों या किसी अन्य समूह के, आप कुछ भी हों, मानव होने के नाते हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि हम सब एक ही प्रकार से हँसते हैं, एक ही प्रकार से मुस्कराते हैं, सबका एक ही तरीका होता है। हमारे मस्तिष्क में समाज द्वारा बनाए हुए बन्धनों के कारण कुछ लोग छूत हैं और कुछ लोग अछूत। भारतीय समाज में ये सब है। भयानक! भारत में ब्राह्मण–वाद ने सब कुछ पूरी तरह नष्ट कर दिया है। आपको ऐसा उदाहरणों से सीखना चाहिए कि श्रीव्यास कौन थे। गीता के लेखक व्यास कौन थे? वो एक मछुआरिन के नाजायज़ पुत्र थे। गीता के इस महान लेखक को जान–बूझ कर इस प्रकार का जन्म दिया गया। गीता पाठी सभी ब्राह्मणों से आप पूछें की व्यास कौन थे। ब्राह्मण तो वो होते हैं जो आत्मसाक्षात्कारी हैं और आत्मासाक्षात्कारी लोगों के लिए इस तरह की बेवकूफी, जाति तथा समाज–बन्धन नहीं है।

पश्चिम में इतनी शिक्षा आदि के बावजूद भी प्रजातिवाद की मूर्खता बनी हुई है। ये बात मेरी समझ में नहीं आती। कोई व्यक्ति गोरा हो या काला, परमात्मा को रंगों में भी वैचित्र्य बनाना था। आपको किसने बताया कि आप ही सबसे अधिक सुन्दर व्यक्ति हैं? हो सकता है कि यहाँ या हॉलीवुड के कुछ बाज़ारों के हिसाब से ये बात ठीक है। परन्तु परमात्मा के साम्राज्य में इन तथाकथित सुन्दर लोगों को, जो सात पतियों से विवाह करती हैं सभी–प्रकार के दुष्कर्म करती हैं, प्रवेश नहीं दिया जाएगा। उन सबको नर्क में डाला जाएगा। सौन्दर्य हृदय का होता है चमकने और दिखाई देने वाली शक्ल का नहीं। हो सकता है कि लोगों को इस बात की जानकारी हो इसलिए वे धूप में चेहरे को तपाने के लिए चल पड़ते हैं। मै नहीं समझ पाती! वे अच्छी तरह से जानते हैं फिर भी बहुत अधिक दिखावा किया जा रहा है। कुछ लोगों को काले बाल पसन्द है; कुछ को लाल। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि सभी रंगों के बाल होने चाहिएं! एक ही रंग के बाल आपको क्यों पसन्द आते हैं ये बात मैं नहीं समझ सकती। पसन्द ना पसन्द नाम की कोई चीज़ नहीं है। परमात्मा ने जो भी कुछ बनाया है सब सुन्दर है। आप निर्णय करने वाले कौन हैं कि ये मुझे पसन्द है ये मुझे पसन्द नहीं। 'मैं', ये मैं कौन है? ये श्रीमान अहं हैं जिसे ये समाज बिगाड़ रहा है, जो आपको सिखाता है कि आपको सिगार कैसे पीनी है, सुबह से शाम तक उल्टे सीधे कार्य कैसे करने हैं। ये सारा प्रशिक्षण गन्दगी मानकर त्याग दिया जाना चाहिए और देखना चाहिए कि परमात्मा ने तो हमें अपने बच्चों के रूप में बनाया है। ये कितनी सुन्दर बात है? क्यों आप उसे अपने गन्दे विचारों से गन्दा

करना चाहते हैं? "मुझे ये पसन्द है और ये नहीं है का सारा भद्दापन मूर्खता है। केवल एक ही शब्द होना चाहिए मैं प्रेम करता हूँ। ये याद रखने की आवश्यकता नहीं है कि अंग्रेज़ों ने भारतीयों के साथ क्या किया या जर्मन लोगों ने यहूदियों के साथ क्या किया। सभी–कुछ भूल जाएँ। ऐसा करने वाले सभी लोग मर चुके हैं; समाप्त हो चुके हैं। हम सन्त हैं। ये धर्मादेश (Statutes) हैं जो मैंने आपको बताए हैं और जिनको आपने आत्म–सात करना है।

आज मैं आपको गुरु बनने का अधिकार देती हूँ ताकि आपके चरित्र, आपके व्यक्तित्व, आपके जीवन में सहजयोग के तौर तरीके तथा प्रकाश की अभिव्यक्ति के माध्यम से लोग आपका अनुसरण कर सकें और उनके हृदय में ईसा–मसीह द्वारा दिए गए धर्मादेश स्थापित हों और आप उन्हें मुक्त कर सकें। उनका उद्धार करें क्योंकि आपको मोक्ष प्राप्त हो चुका है। आप ही मेरी वाहिकाएँ (Channels) हैं, वाहिकाओं के माध्यम के बिना सर्वव्यापी शक्ति अपना कार्य नहीं कर सकती, यही विधि है। आप यदि सूर्य को देखें तो इसका प्रकाश भी किरणों के माध्यम से फैलता है, आपके हृदय से भी रक्त धमनियों के माध्यम से प्रभावित होता है, धमनियाँ सूक्ष्म होती चली जाती हैं। आप ही वो धमनियाँ हैं जिनके माध्यम से मेरा प्रेम–रक्त लोगों तक प्रवाहित होगा। धमनियाँ ही यदि टूटी हुई होंगी तो लोगों तक रक्त न पहुँच पाएगा। इसी लिए आप महत्वपूर्ण हैं। जितने विशाल आप होंगे धमनियाँ भी उतनी ही विशाल हो जाएँगी। तभी आप अधिकाधिक लोगों तक पहुँच पाऐंगे। यही कारण है कि आप बहुत अधिक जिम्मेदार हैं। गुरु शब्द का अर्थ 'वज़न' है, गुरुत्वाकर्षण, गुरु अर्थात गुरुत्वाकर्षण। अपने वज़न का गुरुत्वाकर्षण आपमें होना आवश्यक है अर्थात आपके चरित्र का वज़न, आपकी गरिमा का वज़न आपके आचरण का वज़न, आपकी श्रद्धा का वज़न तथा आपका प्रकाश। क्षुद्रता एवं मिथ्याभिमान से आप गुरु नहीं बन जाते। घटियापन, अभद्रभाषा–गन्देमज़ाक, गुस्सा, क्रोध आदि से पूरी तरह मुक्त होना आवश्यक है। ज़ुबान और गरिमा के माधुर्य का भार प्रदर्शित करें, यह उसी तरह से लोगों को आकर्षित करेगा जिस तरह से रस से परिपूर्ण पुष्प चहुँ ओर की मधुमक्खियों को आकर्षित करता है। आप भी इसी प्रकार से लोगों को आकर्षित करेंगे। इस पर गर्व महसूस करें, लोगों के प्रति करुणामय एवं सेवा–भाव से परिपूर्ण हों।

अब संक्षिप्त में मुझे ये बताना है कि आपने स्वयं ये कार्य किस प्रकार करना है। आपको अपना भवसागर अच्छी तरह से कार्यान्वित करना है। तो ये जान लें कि यदि आपका कोई गलत गुरु रहा हो तो आपका भवसागर पकड़ता है। अपने गुरु के बारे में पूरा ज्ञान प्राप्त करें, उसके चरित्र को जानने का प्रयत्न करें। ये कार्य कुछ कठिन है क्योंकि आपके गुरु तो भ्रान्ति रूप हैं। वे महामाया हैं, उनके विषय में जानना आसान नहीं हैं। सामान्य तरीके से वे आचरण करती हैं और कभी–कभी तो आप भ्रमित हो जाते हैं। परन्तु आप देखें कि वो छोटी–छोटी चीज़ों में किस प्रकार अचरण करती हैं, किस प्रकार उनके चरित्र एवं प्रेम की अभिव्यक्ति होती है! उनकी क्षमा को याद रखने का प्रयत्न करें। आपको इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि आपको ऐसा गुरु प्राप्त हुआ है **जैसा बहुत से साधकों ने पाने की इच्छा की होगी, जो सभी गुरुओं का गुरु है। ब्रह्मा विष्णु और महेश की इच्छा भी ऐसा ही गुरु पाने की है। उन सबको आपसे ईर्ष्या होती होगी। परन्तु ये गुरु अत्यन्त भ्रान्ति रूप है। अपने भवसागर को सुधारें और कहें कि श्रीमाताजी आप हमारी गुरु हैं।** इस भय के कारण गुरु के लिए

आवश्यक सम्मान स्थापित नहीं हो पाता। अपने अन्दर जब तक आप गुरु के प्रति वह श्रद्धा एवं सम्मान स्थापित नहीं कर लेते तब तक आपका गुरुतत्व स्थापित नहीं हो पाएगा। कोई छूट नहीं ली जानी चाहिए। मैं स्वयं आपको यह सब बता रही हूँ परन्तु मैं अत्यन्त भ्रान्तिरूप हूँ। अगले ही क्षण में आपको हँसा कर सब भुला देती हूँ क्योंकि मैं यह सब करने की आपकी स्वतन्त्रता को परख रही हूँ – पूर्ण स्वतन्त्रता को। मैं आपसे इस प्रकार खेलती हूँ कि क्षण–क्षण आप भूल जांए कि मैं आपकी गुरु हूँ।

तो सर्वप्रथम अपने गुरु के बारे में ज्ञान प्राप्त करें, उन्हें अपने हृदय में स्थापित करें। मेरा अभिप्राय है कि **काश मुझे भी ऐसा ही गुरु मिला होता!** वे इच्छा एवं दोष विहीन हैं। पूर्णतः पाप मुक्त। मै जो भी कार्य करूं वह मेरे लिए पाप नहीं है। चाहे मैं किसी का वध करूं या कोई षड़यन्त्र करूं या कुछ और। मैं जो आपको बता रही हूँ वास्तव में ये सच्चाई है। मैं जो चाहे करूँ मैं पाप से ऊपर हूँ। फिर भी मैं इस बात का ध्यान रखती हूँ कि आपकी उपस्थिति में ऐसा कार्य करूँ जो मुझे करते देख कर आप भी करने लगें। आपका गुरु सर्वोत्तम है इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु आपको ये भी जान लेना चाहिए कि आपमें वो सर्वोत्तम शक्तियाँ नहीं हैं। मैं इन सब चीजों से ऊपर हूँ। मैं ये भी नहीं जानती कि प्रलोभन होता क्या है, कुछ नहीं। मैं तो बस कार्य करती हूँ। जो भी मुझे पसन्द हो या जो मेरी मौज में आए। परन्तु इन सब चीज़ों के बावजूद भी मैंने अपने आपको अत्यन्त सामान्य बना लिया है ताकि आपके सम्मुख मैं इस प्रकार से पेश हो सकूं कि आप समझ जाएँ कि धर्मादेश क्या होते हैं। मेरे लिए कोई धर्मादेश नहीं है। मैं धर्मादेश बनाती हूँ। आप ही के कारण मैं ये सारा कार्य करती हूँ और छोटी छोटी चीज़ें आपको सिखाती हूँ क्योंकि अभी तक आप बच्चे हैं।

इसी प्रकार से आपको भी याद रखना है कि जब आप अन्य लोगों से सहजयोग के विषय में बात करते हैं तो वे हर समय आपको देखेंगे और जानने का प्रयत्न करेंगे कि किस सीमा तक आप सहजयोग में हैं। जिस प्रकार मैं आपको समझती हूँ आप उनको समझने का प्रयत्न करें। जिस प्रकार मैं आपको प्रेम करती हूँ आप उन्हें प्रेम करने का प्रयत्न करें। निःसेन्दह मैं आपसे प्रेम करती हूँ, मैं निर्मल हूँ। निःसन्देह मैं प्रेम से परे हूँ। बिलकुल ही भिन्न अवस्था।

इन परिस्थितियों में आपकी स्थिति बहुत उत्तम है क्योंकि कोई भी अन्य गुरु इस सीमा तक नहीं जाता। इसके अतिरिक्त मैं सभी शक्तियों का स्रोत हूँ। आप सभी शक्तियाँ मुझसे प्राप्त कर सकते हैं, जो भी आपको पसन्द हों। मैं इच्छाविहीन हूँ परन्तु जो भी इच्छा आप करेंगे वो पूर्ण होगी। मेरे बारे में भी आपको इच्छा करनी होगी। इस बात को देखें। इस ओर देखें कि मैं आपसे कितनी जुड़ी हुई हूँ। आप जब तक मेरे सुन्दर स्वास्थ्य की कामना नहीं करते मेरा स्वास्थ्य खराब ही रहेगा। इस सीमा तक मैं आपसे जुड़ी हुई हूँ। परन्तु मेरे लिए क्या बुरा स्वास्थ्य क्या अच्छा स्वास्थ्य! इन सुन्दर परिस्थितियों में आपको बहुत अच्छी अवस्था तक उन्नत होना चाहिए। गुरु बनने में आपके सम्मुख कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। भवसागर को स्थिर करना होगा। सर्वप्रथम आपको अपने गुरु को समझना होगा क्योंकि वो सभी चक्रों पर विराजमान हैं। कल्पना करें आपका गुरु कितना महान है! इससे आपमें आत्म–विश्वास आएगा और इतने शक्तिशाली गुरु के कारण ही सभी लोग अत्यन्त आसानी से आत्म–साक्षात्कार पा सकते हैं। किसी धनी व्यक्ति

के पास यदि आप भिक्षा लेने जाएँ तो वो आपको दो कौड़ियाँ भी नहीं देगा। क्योंकि आपकी गुरु इतनी शक्तिशाली हैं इसलिए आपको शक्तियाँ इतनी आसानी से मिल रही हैं। अतः आपको इसके विषय में प्रसन्न होना चाहिए अत्यन्त प्रसन्न एवं प्रफुल्लित कि आपको ये शक्तियाँ प्राप्त हो गई हैं। कम से कम जो लोग सहजयोग में है वे ये बात अच्छी तरह से जानते हैं। जो लोग पहली बार मेरा प्रवचन सुनने के लिए आए हैं, हो सकता है वो लोग थोड़े से उलझन में हों। परन्तु आप सभी लोग भलीभांति जानते हैं।

अपनी गुरु शक्ति को समझने के लिए सर्वप्रथम आपको ये जानना है कि आपकी गुरु कौन है - 'साक्षात आदिशक्ति'। 'हे परमात्मा'! ये बहुत बड़ी बात है। तब अपने भवसागर को स्थापित करें। गुरु किसी अन्य के सम्मुख अपना सिर नहीं झुकाता। विशेष रूप से मेरे शिष्य – माँ, बहन या किसी बुजुर्ग सम्बन्धी के सम्मुख आप अपना सिर झुका सकते हैं। इनके अतिरिक्त वो किसी अन्य के सम्मुख सिर नहीं झुकाते।

दूसरे आपके लिए ये जानना आवश्यक है कि आपकी गुरु बड़े महान लोगों की माँ थीं। यह विचार मात्र ही आपके गुरुतत्व को स्थापित कर देगा। मेरे कितने महान बेटे थे! कितने महान व्यक्तित्व! शब्दों से उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। एक के बाद एक महान बेटे हुए और आप भी उसी परम्परा में से हैं, मेरे शिष्य। उन्हें अपना आदर्श बनाए रखें। उनका अनुसरण करें, उनके विषय में पढ़ें, उन्हें समझें कि उन्होंने क्या कहा है किस प्रकार उन्होंने ये ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं, उन्हें पहचानें, उनका सम्मान करें। इसमें आपका गुरु तत्व स्थापित हो जाएगा।

अपने अन्दर ये सारे धर्मादेश स्थापित करें, उन पर गर्व करें। लोगों की बातें सुनकर भ्रमित न हों क्योंकि हम तो सारी जनता को अपनी ओर खींचने वाले हैं ! सर्वप्रथम हमें अपना वज़न तथा गुरुत्वाकर्षण स्थापित कर लेना चाहिए। जिस प्रकार पृथ्वी माँ सभी कुछ अपनी ओर खींचती रहती हैं इसी प्रकार हमने भी सभी को अपनी ओर खींचना है। आज आप सबने अपनी आत्मा से वायदा करना है कि आप ऐसे गुरु बनेंगे जिन पर आपकी माँ को गर्व हो।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

सहजयोगियों को
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का परामर्श
दिल्ली, 11-3-1981

(अंग्रेजी प्रवचन से अनुवादित)

उस दिन मैंने आपको बताया था कि चैतन्य लहरियाँ ब्रह्मशक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं–ब्रह्मा की शक्ति। ब्रह्मा की शक्ति वह शक्ति है जो सृजन करती है, इच्छा करती है, उत्क्रान्ति करती है तथा आपको जीवन्त–शक्ति प्रदान करती है। यही शक्ति हमें जीवन्त शक्ति प्रदान करती है। अब ये समझना सुगम नहीं है की मृत शक्ति क्या है और जीवन्त शक्ति क्या है। जीवन्त शक्ति को समझना अत्यन्त सुगम है। कोई पशु या हम कह सकते हैं, एक छोटा सा कीड़ा जीवन्त शक्ति है। इच्छानुसार ये अपने को घुमा सकता है, किसी खतरे से अपनी रक्षा कर सकता है। ये जितना चाहे छोटे आकार का हो परन्तु जीवन्त होने के कारण ये अपनी रक्षा कर सकता है। परन्तु कोई भी मृत चीज़ अपने आप हिलडुल नहीं सकती। जहाँ तक 'स्व' (Self) का प्रश्न है वह तत्व इस में नहीं होता।

जीवन्त शक्ति होने के नाते अब हमें यह पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए कि, "क्या हम जीवन्त शक्ति बनने वाले हैं या जीवन- विहीन।" इस विश्व में रहते हुए हम अपनी सुख सुविधाओं के विषय में सोचने लगते हैं कि हमें कहाँ रहना है और क्या करना है। जब हम इन चीज़ों के विषय में सोचते हैं तो हम मृत चीज़ों के विषय में सोच रहे होते हैं। परन्तु जीवन्त कार्य करने के लक्ष्य से जब हम कोई स्थान, कोई आश्रम प्राप्त करने के विषय में सोचते हैं तब हम उस स्थान को जीवन प्रदान करते हैं। सारी जीवन विहीन चीज़ों से उस वातावरण की सृष्टि की जानी चाहिए – जीवन्त शक्ति का सृजन करने के लिए।

अब यह अत्यन्त सूक्ष्म बात है जिसे बहुत कम लोग समझते हैं। उदाहरण के रूप में कोई व्यक्ति मेरे पास श्री गणेश का फोटो लाकर पूछता है, "क्या मुझे श्री गणेश के इस फोटो की पूजा करनी चाहिए या नहीं?" सर्वप्रथम हमें देखना चाहिए कि इसमें चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं या नहीं? मान लो आप एक घर लेते हैं, तो आपको अवश्य देखना चाहिए कि घर से चैतन्य आ रहा है या नहीं। हम सुख–सुविधा को देखते हैं, अन्य चीज़ों को देखते हैं, हम यह भी देखते है कि वहाँ पर आने वाले अन्य लोगों के लिए ये स्थान ठीक है या नहीं, परन्तु चैतन्य लहरियों के नज़रिये से उस घर को नहीं देखते। अब जो भी कुछ हम करते हैं उसे चैतन्य चेतना के दृष्टी–कोण से सोचना आवश्यक है, अर्थात जीवन्त चीज़ों पर कार्य करने वाली चेतना के दृष्टिकोण से। जैसे हम कह सकते हैं कि पेड़ की ज़ड़ के सिरे का तन्तु जीवन्त चीज़ है। बेशक इस में सोचने की शक्ति नहीं है, परन्तु जीवन्त शक्ति स्वयं इसका पथ प्रदर्शन करती है। अतः इसे इस बात का ज्ञान है कि जीवन्त शक्ति के साथ किस प्रकार चलना है, इस के साथ किस प्रकार रहना हैं, और इसके साथ चलने के लिए, इसमें विलीन होने के लिए, इसकी योजनाओं को किस प्रकार समझना है।

परन्तु मानव को निर्णय लेने की स्वतन्त्रता प्राप्त है। एक बार जब आपको आत्मक्षात्कार मिल जाता है तो आपको जीवन्त शक्ति प्राप्त हो जाती है। इसी जीवन्त शक्ति को आप महसूस करते हैं। अतः अपने शरीर, मस्तिष्क, अहं, प्रतिअहम् तथा अन्य सभी चीज़ों को ज्योतिर्मय अवस्था में बनाये रखने के लिए इस जीवन्त शक्ति की योजनाओं को समझकर इस का उपयोग करना आपने सीखना है।

अधिकतर समस्याओं के विषय में यह आपको विचार प्रदान करती है। उदाहरण के रूप में इस

देश में विशेष रूप से दिल्ली में, आप लोगों को बाईं नाभी की पकड़ होती है, दाएं स्वाधिष्ठान की भी पकड़ होती है और इसके बाद हृदय और आज्ञा की पकड़ होती है। यह चक्र हमारे अस्तित्व को देखते हैं। अतः हमें चाहिए कि बाईं ओर से देखना आरम्भ करें कि क्या होता है?

बाईं ओर समस्या का आरम्भ बाएं स्वाधिष्ठान से होता है क्योंकि ये पहला चक्र है जो हमारे अन्दर नकारात्मकता प्रवाहित करने लगता है। वास्तव में बाएं स्वाधिष्ठान के शासक श्री गणेश हैं। क्योंकि श्री गणेश ही जीवन का आरम्भ हैं तथा जीवन और मृत्यु के बीच की कड़ी हैं अतः श्री गणेश ही सन्तुलन प्रदान करते हैं, आपको वह विवेक, वह सूझबूझ प्रदान करते हैं जिसके द्वारा आप समझ पाते हैं कि किस सीमा तक जाना है। जब बायां स्वाधिष्ठान पकड़ता है तो आप उन लोगों के पास जाना शुरु कर देते हैं जो ऐसी चीज़ों का वचन आपको देते हैं जैसे "मैं आपको यह दूंगा, मैं आपको वह दूंगा, ऐसा हो जाएगा, आपके साथ वैसा घटित हो जाएगा।" परन्तु आपकी अपनी गलत इच्छाओं के कारण भी आपमें यह बाईं ओर की पकड़ आ सकती है। उदाहरण के रूप में हम किसी गलत चीज की इच्छा कर सकते हैं, सोच सकते हैं कि यह मृत चीज हमें मिल जानी चाहिए या इसी प्रकार की कोई विशेष बात सोच सकते हैं। मान लो किसी को रैफ्रीजरेटर चाहिए और वह उसी के बारे में ही सोचता रहता है। वह सोचता है कि उसके पास फ्रिज होना ही चाहिए। उसे फ्रिज के पास जाना चाहिए क्योंकि उसे फ्रिज चाहिए। वह उसे मिलना ही चाहिए। फ्रिज उसे क्यों चाहिए? क्योंकि वह सोचता है कि इससे उसे अधिक सुविधा मिलेगी। परन्तु फ्रिज लाने के बाद उसे पता चलता है कि वास्तविकता यह नहीं है। अतः सभी भौतिक चीज़ों को देखने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि इनमें बहुत अधिक न उलझा जाए। आपको यदि यह चीज मिल जाए तो ठीक है और न मिल जाए तो भी ठीक है। अधिक से अधिक चीज़ों के साथ भी आप रह सकते हैं और कम से कम चीज़ें पाकर भी। परन्तु अपनी भौतिक (मृत) चीज़ों को जब हम बढ़ाने लगते है तो यह बहुत बुरी बात है। तब हमारा चित्त इन्हीं मृत (भौतिक) चीज़ों की ओर ही जाता है। इस प्रकार से हम अपने अवचेतन में चले जाते हैं और फिर सामूहिकअवचेतन में। फिर यह पकड़ ऊपर की ओर बाईं नाभि पर चली जाती है और बाईं नाभि की पकड़ से हम भौतिक पदार्थों के लिए पगला जाते है। उदाहरण के लिए घड़ी, समय। समय मृत है यह जीवन्त नहीं है। जीवन्तता से इसका कोई लेना देना नहीं है। उदाहरण के लिए आप यह नहीं कह सकते कि किस समय फूल फल बन जाएगा। अतः घड़ी या समय को जीवन्त शक्ति से कोई लेना देना नहीं है। यह सब मानव रचित चीजे हैं जैसे घड़ी; समय भी मानव का ही बनाया हुआ है। आज यहाँ पर कुछ समय है परन्तु इंग्लैड में कुछ और है। आप यदि कहते हैं कि भारत में चार बजे हैं तो इंग्लैंड में समय वही नहीं है। अतः समय महत्वहीन है। आप कब पहुँचते हैं, कब जाते हैं, कितनी बार कार्य करते हैं, यह सब महत्वहीन है।

क्योंकि जीवन्त शक्ति असीम है इसलिए इसकी न तो कोई समय–सीमा हैं और न ही कोई दूरी सीमा है। जिस प्रकार ये कार्य करती है आप इसका हिसाब नहीं लगा सकते। यदि हम ये समझते कि यह जीवन्त शक्ति है जो स्वचालित है और जो हमारे भौतिक विचारों की तनिक भी परवाह नहीं करती तो हम भौतिकता (Dead) से मुक्त हो जाते हैं। तो हमारा चित्त हर समय भौतिक (Dead) पदार्थों की तरफ है। हमें क्या प्राप्त करना चाहिए, क्या पा लेना चाहिए, हमारी आवश्यकता क्या है?

हर समय हम इस नश्वर शरीर की चिंता में लगे रहते हैं।

आत्मा की आवश्यकताओं को हम नहीं देखते। आत्मा की आवश्यकता को देखने से आप बाईं ओर की समस्याओं पर काबू पा सकते हैं. आप अपनी आत्मा की देखभाल करने लगते हैं जिससे आप जान पाते हैं कि आपको चैतन्य लहरियाँ आने लगी हैं। आप की आत्मा यदि प्रसन्न है तो आपको चैतन्य लहरियाँ आती हैं, यदि यह प्रसन्न नहीं है तो आपको चैतन्य लहरियाँ नहीं मिलतीं। इतनी साधारण सी बात है! आपको यदि बाईं ओर की कोई बीमारी या समस्या है तो इसे संतुलित करनें के लिए आप अपना चित्त भविष्य पर डालें। परन्तु मैं जब भविष्य पर चित्त डालने के लिए कहती हूँ तो लोग भविष्य पर ही अड़ जाते हैं। क्योंकि मृत मृत है और मिथ्या है। इसी प्रकार भविष्य भी मिथ्या है, इसका कोई अस्तित्व नहीं। दोनों ही काल एक सम (मिथ्या) हैं, चाहे आप बाएं को जाएं या दाएं को (तामसिकता में या राजसिकता में) आप चाहे अवचेतन मन में जाएं (Subconcious Mind) या अतिचेतन मन (Supra-concious Mind) में। दोनों ही चीज़ें एक सी हैं। अतः भूतकाल में जाने का कोई लाभ नहीं। परन्तु यदि आप भूतकाल में बहुत अधिक हैं तो भविष्य के विषय में सोचना बेहतर होगा ताकि आप थोड़ा सा मध्य (Centre) की ओर जा सकें। परन्तु आप मनुष्यों के लिए ये कर पाना मुश्किल है।

अब एक अन्य समस्या का आरम्भ तब होता है जब हममें किसी चीज़ के विषय में दोष भाव आ जाता है। जब बाईं विशुद्धि पकड़ जाती है तब हममें दोष भाव आ जाता है। "मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।" तब आप कहनें लगते हैं, "मैं अत्यन्त दुःखी हूँ, मैं बहुत दोषी हूँ। इस प्रकार आप स्वयं को कोसने लगते हैं। ये एक अन्य मूर्खता है। इस प्रकार से एक बार जब आप करने लगते हैं तो पुनः आप मृत स्थिति में आ जाते हैं क्योंकि जीवन्त शक्ति कभी किसी को दोषी नहीं ठहराती। नहीं, ये कभी ऐसा नहीं करती। यह स्वतः उन्नत होती चली जाती है, देखती है कि किस ओर को चलना है, इस ओर या उस ओर। यह स्वयं को कोसती नहीं है। किसी चीज के प्रति यह आक्रामक नहीं होती, मध्य में बने रहने का विवेक इसमें होता है। इस प्रकार अपना चित्त मृत चीज़ों से हटा कर आपको बाईं ओर की समस्याएं दूर कर लेनी चाहिएं। जब आप बाईं ओर को हों तो आपको चाहिए की मध्य में रहते हुए देखें। जो चीज़ आप देखना चाहते हैं, उसे नहीं देखते और अन्ततः इनसे पलायन करने के लिए हर समय स्वयं को दोष देने लगते हैं और दुःखी रहते हैं। इस प्रकार बाईं ओर की समस्याओं का परिणाम अत्यन्त खिन्नता की अवस्था में चले जाना है। बाईं ओर के लगावों का यही अन्तिम परिणाम है। अन्ततः आप सोचने लगते हैं कि आप किसी काम के नहीं, बेकार हैं। आपको ऐसा कर लेना चाहिए था, वैसा कर लेना चाहिए था।

अब इस समय इस पर काबू पाने के लिए आपको प्राप्त हुए आशीर्वाद गिनने होंगे। जो आर्शीवाद आपको प्राप्त हुए हैं उन्हें एक एक करके गिनिए। आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। पिछले हजारों वर्षों में कितने लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया? आपको चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हो गई हैं। इतनी सदियों मे कितने लोगों को चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हुई? ज़ेन (Zen) ग्रन्थों में लिखा हुआ है कि आठ शताब्दियों में कुल मिलाकर 26 कश्यप (आत्मसाक्षात्कारी) हुए। बुद्व के पश्चात् भी कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिला? आप एक बात अवश्य सोचें कि इतने सारे साक्षात्कारी लोग हैं जो एक ही भाषा और एक ही जुबान बोलते हैं। आप शुक्रगुजार हों कि आप सभी कुछ जान सकते हैं।

परन्तु यदि आपको बाईं ओर की पकड़ हो तो आप भूतकाल में चले जाते हैं और कहते हैं, "हे परमात्मा! मैं इतना बेकार हूँ, मैं किसी काम का नहीं। मैं इतना बेकार, निकम्मा हूँ कि अब भी मुझे पकड़ है। जैसा आप जानते हैं कि जिन लोगों को बांई ओर की पकड़ रहती है वे सदा शिकायत करते रहते हैं और छोटे–छोटे कष्टों की शिकायत करते रहते हैं। अब इसी के मुकाबले एक अन्य पक्ष है। मैं यदि आपसे कहूं कि दूसरी ओर भी जाएं तो वह अत्यन्त भयानक खेल होगा। उदाहरण के रूप में हमारे जीवन में बहुत से बन्धन हैं। आप देखें, सर्वप्रथम हमारी इच्छाएं हैं, हमारी इच्छा है कि शानदार सहजयोगी बनें, महान गुरु बनें या कुछ महान चीज बन जाएं। हमारी यह भी इच्छा होती है कि हमारे बहुत से शिष्य हों जो हमारे चरण छुएं और हम महान गुरु कहलाएं।

अतः सहजयोग में कुछ चीज़ों की मनाही है। कि न कोई किसी के चरण छुए और न कोई सहजयोगी किसी को चरण छूने दे। सभी सहजयोगियों के लिए यह बहुत बड़ा बन्धन है। कोई किसी के पैर न छुए और न ही किसी को अपने चरण छूने के लिए कहे, चाहे आपमें कितने भी गुण हों। चरण छूने वाले लोगों की चैतन्य लहरियाँ समाप्त हो जाएंगी और जो लोग प्रणाम करवाते हैं उनका भी हृदय चक्र पकड़ जाएगा। अतः सहजयोग के विषय में भी इस प्रकार के जो बन्धन हममें हैं उन्हें दूर किया जाना चाहिए।

हम सब सामूहिक रूप से उन्नत हो रहे हैं। हम एक ही व्यक्तित्व के अंग प्रत्यंग हैं, न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। इससे अलग यदि कोई सोचता है तो बड़ी तेजी से उसका पतन हो जाएगा। यह बाई ओर के बन्धन हैं जिनमें लोग बहुत अधिक लड़खड़ाते हैं। सहजयोग में बहुत अधिक इच्छाएं त्याग दी जानी चाहिएं।

सहजयोग में आपमें बहुत विशाल इच्छा होनी चाहिए कि हम सब आत्मसाक्षात्कार को पा लें। जितना भी अधिक से अधिक हो सके अधिक से अधिक लोगों की रक्षा करने का प्रयत्न हमें करना चाहिए। जहाँ तक हो सके हम अपने को सुधारें। हम स्वयं को सुधार सकते हैं तथा बहुत से आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

बाईं ओर से भी विचार आ सकते हैं। मान लो आपके सिर में कुछ भूत हैं, तो वे आपमें विचार पैदा कर सकते हैं कि, "ओह, आप बेकार हैं या किसी काम के नहीं।" ऐसे में अपने दाएं हाथ से अपनी दाईं ओर को उठाएं और बाईं को नीचे गिराएं। ऐसा हम क्यों करते है? क्योंकि अपनी दाईं ओर से आप कृपा प्राप्त करते है और बाईं ओर को कम करते हैं। जिन लोगों को बाईं ओर की समस्या है वे इस विधि को अपना कर देखें। एक अन्य विधि यह है कि जब भी आपको ऐसे विचार आएं कि आप किसी काम के नहीं आदि आदि तो स्वयं को, अपने नाम को जूते मारना बेहतर होगा। जाकर परमात्मा की स्तुति गाएं और कहें "मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, मुझे सभी कुछ प्राप्त हो गया है।"

दूसरी चीज दाईं ओर के विषय में है, दाईं ओर प्रायः आपको स्वाधिष्ठान की पकड़ आती है। यह सोचने के कारण होता है। यह दूसरी तरह की सोच आपको दाएं स्वाधिष्ठान की पकड़ देती है। विचार चाहे बाएं से आए या दाएं से इनसे आपको जिगर की समस्या होगी। सबसे बुरा प्रभाव तो तब आता है जब दोनों पक्ष (बायां और दायां) प्रभावित हों। कुछ भूत आपको विचार देते हैं कि आप बेकार हैं या फिर आप स्वयं को बहुत महान चीज मान लेते हैं या समझ लेते हैं। इससे स्थिति अत्यन्त डावांडोल हो जाती है और भ्रम उत्पन्न होने लगता है।

अतः व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि

सहजयोग में आपको एक तेजधार, एक मध्य बिन्दु विकसित हो रहा है जिससे आपको न तो बाईं ओर जाना है न दाईं तरफ। ये इतनी सूक्ष्म चीज़ है कि यदि आप तामसिक प्रवृत्ति हैं तो आवश्यक नहीं कि आप तामसिक ही बने रहें। कल हो सकता है, आप राजसिक प्रवृत्ति बन जाएं। निःसन्देह कल आप राजसिक समस्याओं के साथ आएंगे। अतः सन्तुलन सीखना आवश्यक है, वैसे ही जैसे साइकिल सीखते हुए करते हैं। आप इस ओर भी गिर सकते हैं उस ओर भी।

साइकिल चलानी आप कब सीखते हैं। आप यदि मुझसे पुछें तो मैं कहूंगी कि जब आप साइकिल चलाते हैं तभी सीखते हैं। अतः सहजयोग में भी संतुलित होने के लिए आपको स्वयं को सावधानी से देखना पड़ेगा कि आप किधर जा रहे हैं। यदि बायें को जा रहे हैं तो दायें को आ जाएं, यदि दायें को जा रहे हैं तो बाएं को आ जाएं। और फिर मध्य में आयें। स्वयं को अलग कर लीजिए, हर समय स्वयं को निर्लिप्त कर लीजिए। न अपनी अलोचना करनी है, न किसी के प्रति आक्रामक होना है और न ही किसी की आलोचना करनी है। यह युक्ति स्वयं को देखने के लिए उपयोग करनी है। केवल देखें और अपना पथ प्रदर्शन करें। पथ प्रदर्शन भटक जाने से बहुत भिन्न है। यही वास्तविकता है। मानलो कोई मृत चीज़ है। इसे यदि मैं फेंकूं तो यह फेंके हुए स्थान पर गिरेगी। परन्तु यदि मैं किसी जीवन्त चीज़ को फेंकूं तो यह ठीक उसी स्थान पर नहीं गिरेगी। अतः जीवन्त शक्ति जानती है कि स्वयं का पथ प्रदर्शन किस प्रकार करना है। इसी प्रकार से आप भी अपना पथ प्रदर्शन करना सीख जाएंगें। ऐसा करना यदि आप सीख लेते हैं तब आप सहजयोग में कुशल हो जाते हैं।

किसी भी प्रकार से अपनी भर्त्सना करने का या ये सोचने का कि मैं महान हूँ या तुच्छ हूँ, कोई लाभ नहीं है। अब तो केवल ये देखें कि घोड़ा कहाँ जा रहा है। आप घोड़े की पीठ पर बैठे हैं, स्वयं घोड़ा नहीं हैं। आत्मसाक्षात्कार से पूर्व आप घोड़ा होते हैं। जहाँ वो आप को ले जाता है आप चले जाते हैं। घोड़े को जहाँ घास नज़र आती है घोड़ा वहीं रुक जाता है। घोड़ा कभी कभी किसी को दुलत्ती भी मारना चाहता है और वह ऐसा करता है। अब आप घोड़े से बाहर आ गए हैं और सवार बनकर घोड़े पर बैठे हैं। अब आप सवार हैं अतः अब आपको पता होना चाहिए कि किस प्रकार ये चीजें आपको मूर्ख बनाती रहीं। आपके अन्दर ये सभी इच्छाएं प्राचीन तथा युगों पुरानी हैं। आप देखें कि आक्रामकता, कर्म जो आप कर रहे हैं, भी प्राचीन है। ऐसा करने से आपको ये मिल जाएगा या वो मिल जाएगा। बहुत से लोग कहते हैं, "श्रीमाताजी हम यह कार्य कर रहे हैं, सहजयोग के लिए हम इतना कार्य कर रहे हैं फिर भी हमें कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई।" क्या करें? कुछ नहीं कर सकते! आप स्वयं पता लगाएं कि आपमें क्या कमी है?

हृदय चक्र यदि पकड़ता है तो ऐसे लोग कभी उन्नति नहीं कर सकते। हृदय प्रकाश का स्रोत है, यह ब्रह्म शक्ति का स्रोत है। यह आत्मा का सिहांसन है। हृदय में यदि जीवन्त शक्ति नहीं होगी तो आप उन्नत कैसे हो सकते हैं?

आपको ज्ञान होना चाहिए कि क्या चुनना है। सहजयोग से आपमें यह परिवर्तन आना चाहिए। आपको उस बिन्दु तक परिपक्व होना चाहिए जहाँ आप यह समझ सकें कि क्या चुनना है। यही उन्नति है। तब आपको न तो श्रीमाताजी से कुछ पूछना पड़ता है न किसी अन्य से। यह विकास आपमें होना चाहिए कि, "मै जो कर रहा हूँ उसका मुझे पूरा ज्ञान होना चाहिए। मुझे पता होना चाहिए कि क्या ठीक है। इसे ठीक करने की विधि का

ज्ञान भी मुझे होना चाहिए।" इस 'मैं' की समझ मुझे होनी चाहिए कि ये आत्मा है अहम् नहीं। अब अहम् या प्रतिअहम् का अस्तित्व नहीं बचा। आत्मा ही आपका पथ प्रदर्शन करती है। आत्मसाक्षात्कारी बच्चों को आप देखें, वे ऐसे ही प्रश्न पूछते हैं। वो जानते हैं कि पकड़ा हुआ कौन है, वो जानते हैं कि किसका मुंह बन्द करना है और किससे बहस करनी है। पकड़े हुए लोगों से उन्हें कोई हमदर्दी नहीं होती। वो तो बस देखते हैं। कोई यदि आता है तो वो मुझे बताते हैं, "श्रीमाताजी ये व्यक्ति पकड़ा हुआ है।" मात्र इतना ही। कोई अन्य व्यक्ति आता है तो एकदम से वे कहते हैं, "ये ठीक है।" बस। मात्र इसकी घोषणा करते हैं। न वे किसी चीज की चिन्ता करते हैं और न वे किसी से घृणा करते है। भंयकर बाधा वाला कोई व्यक्ति यदि आता है तो वे कहते हैं, "बेहतर होगा कि आप चले जाएं", उस व्यक्ति के प्रति बिना किसी दुर्भाव के।

पहाड़ की चोटी पर जब आप पहुँच जाते हैं तो सड़क पर चलने वाले वाहनों की चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं। अभी तक आप चोटी पर नहीं पहुंचे, इसीलिए चिन्तित हैं कि मैं चढ़ता हूँ। ये सब मिथक (Myth) हैं। आपके मस्तिष्क पर मानसिक साया। ये वास्तविकता है कि आप पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए हैं। परन्तु आपको पूर्ण विश्वास नहीं है, पूर्ण विश्वास का अभाव है।

परमात्मा ही आनन्द भोक्ता हैं। आप आनन्द नहीं उठा सकते। आप तो केवल परमात्मा का आनन्द ले सकते हैं। यही महानतम आनन्द है, ये महसूस करना कि परमात्मा ने आपके लिए क्या सृजन किया है, मानवीय चेतना में परमात्मा ने आपको कितना सुन्दर जीवन दिया है! इसी के द्वारा आप जान सकते हैं कि वो आपको कितना प्रेम करते हैं और आपके लिए उन्होंने कितना कार्य किया है। वे ही आपको इस स्तर पर लाए हैं। परमात्मा ने जो आपको दिया है वो आप अन्य लोगों को दे सकते हैं और उन्हें आनन्दित कर सकते हैं। आप यदि ऐसा सोचें तो आपके दोनों पक्ष (बायां और दायां) एक दम से ठीक हो जाएंगे और दिव्य चैतन्य लहरियों से आप परिपूर्ण हो जाएंगे।

हिन्दी प्रवचन

अब हिन्दी में बतायें। आपको विराजना चाहिये। विराजिये, आसन पर विराजिये। आसन पर बैठकर भीख मांग रहे हैं, रो रहे हैं! आसन पर बैठकर पागलपन कर रहे हैं! इनका किया क्या जाये? अरे भई, आसन पर विराजो। आप राजा साहब हैं। बैठिये, और अपनी पाँचों इन्द्रियों को आप आज्ञा दीजिए, "जनाब आप अब ऐसे चलिए, बहुत हो गया। अब ये ठीक है, अब वो ठीक है, हाँ बहुत समझ लिया आपको।" जब आप इस तरह से (Command) कमाण्ड में अपने को करेंगे, जब आप अपने को पूरी तरह कण्ट्रोल (Control) में करेंगे, तभी तो आप अच्छे सहजयोगी हुए। नहीं तो आपके मन (Mind) ने कहा, "चलो इधर", आप बोलते हैं, "माताजी, क्या करूं, इतना मन को रोकता हूँ, पर मन इधर जाता है।" फिर मन क्या है? मन तो एक (Living force) जीवन्त शक्ति है, वो जाएगा ही। मन तो उसी जगह जाएगा, जहाँ जाना है। हमारी जो इन्द्रियां हैं, वो जागृत हो जाती हैं और फिर हम इधर–उधर जाना ही नहीं चाहेंगे और बहुत सी चीजें छोड़ते चले जायेंगे।

इन सब चीज़ों में हमको एक ही ध्यान रखना चाहिए; अपने हृदय को स्वच्छ रखना। जिन लोगों का हृदय स्वच्छ रहता है, उनको समस्या (Problem) कम होती है। इसका मतलब यह नहीं है, कि आप लोग गंदी बातें सोचते रहते हैं। स्वच्छ हृदय का मतलब है, समर्पण। **सहजयोग में अगर**

समर्पण में कमी हो जाय या कोई समझे कि मैं कोई विशेष हूँ, तो उस आदमी में (Growth) प्रगति नहीं हो सकती। उसके लिए कोई पढ़े–लिखे नहीं चाहिएं, कोई विशेष रूप के नहीं चाहिएं।

"मुझे यह नहीं हुआ, मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई"–तो दोष आपका है या सहजयोग का? लोग तो कभी कभी इस तरह से मुझसे बातें करते हैं जैसे कि मैंने ठेका ही ले रखा है या मेरे पास आपने कोई रुपया पैसा जमा किया हुआ है कि माँ, हम तो आपके पास पच्चीस साल से आ रहे हैं।" पच्चीस क्या, तीस साल तक; बूढ़े होने तक भी कोई काम नहीं होने वाला। इसलिए अगर यह नहीं हो रहा है, इसका मतलब है कि आपमें कोई न कोई कमी है। लेकिन जैसे ही आप अपने को अपने से हटाना शुरु करेंगे, आपको अपने दोष बड़ी ही जल्दी दिखाई देंगे और जैसे ही दिखाई देंगे, वैसे ही आप पूरी तरह से विराजिये, जैसे कोई राजा साहब हैं; अपने सिहासन पर बैठे हैं। आपको अगर सुनाई दिया कि हमारे प्रजाजन, कुछ गड़बड़ कर रहे हैं; तो कहिए, "चुप रहिये, ऐसा नहीं करने का है। यह नहीं कि ऐसा करो, वैसा करो।" अपने को पूरी तरह (Command) कमाण्ड में जो आदमी कर लेता है, वही शक्तिशाली है।

मिसाल के तौर पर लोगों की बातचीत लें। लोग जब बात करते हैं यानी हमसे भी बातचीत करने में ख्याल ही नहीं रहता कि किससे बात कर रहे हैं। ऐसी बात करते हैं कि बड़ा आश्चर्य सा होता है। उनको अन्दाज नहीं रह जाता कि हमें क्या कहना चाहिये, क्या नहीं कहना चाहिए। हमारी जबान पर भी काबू होना चाहिए। यह काबू भी तभी होता है, जब आप अपने को अपने से हटे देखेंगे। यह जबान है न, उसे ठीक रखना पड़ता है।

धीरे धीरे, आपकी नई आदतें हो जायेंगी, नए तरीके बन जायेंगे, नया अन्दाज बन जायेगा फिर आप अपने को (order) आदेश देंगे। हमेशा 3rd Person में। जो आदमी पार होता है वो कभी 1st Person (प्रथम पुरुष) में बात नहीं करता, हमेशा 3rd Person में बात करते हैं, वहां चलिये, वहां बैठिये।" बच्चे भी ज्यादातर ऐसा ही करते हैं 3rd Person में बात करते हैं," ये निर्मला अब जाने वाली नहीं है। ये यहीं बैठी रहेगी।" सहजयोगियों को भी इसी तरह बात करनी चाहिये। अपनी जो इच्छाएं हैं, अपने जो ideas (विचार) हैं, या और कोई ideas, जैसे सत्ता के ideas, इत्यादि, ये सब छोड़कर हमें यह सोचना चाहिए कि हम सहजयोग के लिए क्या कर रहे हैं और क्या करना है।

अभी भी हिन्दुस्तान में ये चीजें कम हैं, परदेस में बहुत ज्यादा हैं। वो लोग कभी मुझसे आकर यह नहीं कहते कि मेरे बाप के, दादा के चाचा के सगे भाई का फलाना फलाना बीमार है उनको आप ठीक कर दें। कभी भी अपनी Material difficulties या Problems नहीं कहते हैं। हालांकि, आप पार जल्दी होते हैं, वो लोग बिचारे अपनी गलतियों की वजह से ज्यादा समय लेते हैं। पार आप जल्दी होते हैं पर आपको उसकी कीमत नहीं, वो जो पार देर से होते हैं, उनको उसकी कीमत है उनको तरीका मालूम है, क्या चीज है। उनकी आँखों में ही देखिये, कितनी एकाग्रता है। एक एक शब्द को अगर मैं हिन्दी में बोल रही हूँ एक एक शब्द को अगर मैं हिन्दी में बोल रही हूँ, पूरे ध्यान से सुनते हैं। हालांकि भाषा नहीं समझते लेकिन उसमें कैसे वाइब्रेशन (Vibrations) निकल रहे हैं, हाथ में कैसे (vibrations) पूरा चित्त रहता है। अब इन्होंने अपना जीवन ही सहजयोग को दे दिया है। वो कोई चीज नहीं सोचते, कि भई यह भी कर लेंगे, वो भी कर लेंगे। तभी आप गहरे उतरेंगे। जीवन सहजयोग को देने से ही आप पनपते हैं; यह भी बात है। उसमें आपका कुछ लेना देना तो है

नहीं। कोई आपको कमी नहीं हो जाती। सारा क्षेम आपके अन्दर आ जाता है।

सारा जीवन ही सहजयोग को दे देना चाहिये। एक-एक क्षण सहजयोग को देना चाहिये। इसका मतलब है living spontaneously। कहाँ से आयेगी spontaneity? वो living force से आती है। हमारे अन्दर हर समय जो जीवन्त शक्ति है, उससे। और सब बातों को सोचना ही नहीं चाहिये।

वैसे भी आप कभी भोग नहीं सकते। भोगने वाला सिर्फ परमात्मा है। आपको गलतफहमी है कि आप भोग रहे हैं। आप भोग ही नहीं सकते। भोगने वाला परमात्मा है और वही रचयिता है और आप तो सिर्फ बीच में हैं। जिस तरह पाइप (Pipe) होते हैं, उसी तरह आप हैं। अगर थोड़ा भोग ही सकते हैं, तो एक चीज भोग सकते हैं वह है परमात्मा जिसे आपसे अनन्त प्रेम है। बस, यही एक सत्य है जिससे आप पूरी तरह से आनन्दित रह सकते हैं, पुलकित रह सकते हैं, पुलकित रह सकते हैं। बाकी किसी भी चीज से आपको आनन्द नहीं मिल सकता, किसी भी चीज को भोगने वाला सिर्फ वही है।

बात यह है कि आपको आज कुछ चाहिये वो ला दिया, फिर भी आप खुश नहीं। कल फिर आपको कुछ चाहिये, कल दूसरी चीज ला दी, फिर तीसरी चीज ला दी, फिर भी खुश नहीं। आप कभी भी सांसारिक चीज़ों से खुश नहीं हो सकते।

भोगने वाला सिर्फ परमात्मा है, इसलिये सबको चाहिए कि हम उसको भोगें। हमको परमात्मा को भोगना चाहिये, वही जो सबको भोगने वाला है। अगर उसको भोगना शुरु कर दिया तो फिर हमें और क्या भोगने की जरूरत है। उसका ही सुख भोगें। परमात्मा ने क्या–क्या सृष्टि रची है, कितना सुन्दर सारा संसार बनाया है, कितनी सारी चीजें हमें दी हैं! हम सहजयोगी हो गये हैं। हमारे अन्दर ये शक्ति परमात्मा ने दी है। अब आप अपनी आत्मा को पा सकते हैं, दूसरे की आत्मा को पहचान सकते हैं। कितनी अनन्त कृपा परमात्मा की हमारे ऊपर है। बस यही सोच–सोच कर अपने अन्दर फूलिये! इस तरह से जब आप परमात्मा को भोगना शुरु करेंगे तो आप देखेंगे कि आपका heart (हृदय) बहुत बड़ा हो जाता है। ऐसा लगेगा कि सारी सृष्टि उस हृदय (heart) में समा गई है।

आज का मेरा आपको सन्देश है–आप परमात्मा को भोगना शुरु करें। बाकी सब चीजों का भोग आप छोड़ कर परमात्मा का भोग करें और उसका आनन्द उठायें कि आपको परमात्मा ने क्या क्या दिया। क्या क्या चीजें दी हैं? हर जगह इसका आनन्द उठाना शुरु कर दीजिये। आप देखेंगे कि आपका चित्त एक दम स्थिर हो जायेगा। सहजयोग में प्रगति इसी तरह से होगी।

हर मिनट में हमें क्या मिला। इतना मिल गया, इतना मिल गया, ऐसे कहते हुए चलिये, नहीं तो आपके complaints कभी नहीं खत्म होने वाले और आप का aggression भी कभी खत्म नहीं होने वाला।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

सहजयोग महायोग क्यों है

सहजयोग महायोग क्यों है? मानव इतिहास में यह पहली बार घटित हुआ है कि बिना किसी मानसिक, शारीरिक या भावनात्मक प्रयत्न के मनुष्य शीतल चैतन्य लहरियों का अनुभव कर सके। इस अवस्था में व्यक्ति पूर्णतः शान्त होता है और उसका मस्तिष्क विचार मुक्त होता है। अपने अन्दर पूरी तरह से मौन (शान्त) स्थिति में होते हुए भी वह पूरी तरह चुस्त होता है और घटित होने वाली चीजों के प्रति चेतन। उसकी पाँचों कर्म–इन्द्रियाँ कार्य शील होती हैं। बाल सुलभ उस व्यक्ति के सभी कार्य स्वतः होते हैं।

व्यक्ति वर्तमान क्षण में होता है, जो कि एकमात्र वास्तविकता है। यही सहजयोग है–महायोग। परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी पृथ्वी पर अवतरित आदिशक्ति का अवतरण हैं। उनके सम्मुख याचना करने मात्र से व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है, वह ज्योर्तिमय हो उठता है।

सहजयोग महायोग है क्योंकि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् मनुष्य अपनी आत्मा को चेतन अवस्था में महसूस कर सकता है और उसके हाथों से शीतल चैतन्य लहरियाँ बहनें लगती हैं तथा वास्तविकता का ज्ञान उसे हो जाता है। चैतन्य लहरियाँ विद्युत चुम्बकीय तरंगों की तरह से होती हैं। हृदय स्थित आत्मा जिनका स्रोत है। एक स्टेशन से ये संचारित होती हैं और एक एन्टीना इन्हें ग्रहण करके दूरदर्शन उपकरण तक भेजता है। इन तरंगों को हम माप सकते हैं। ये विद्युत चुम्बकीय लहरें केवल त्रिआयामी होती हैं जबकि सहजयोग में प्राप्त होने वाली चैतन्य लहरियाँ बहुआयामी होती हैं–इनमें भावनात्मक मानसिक एवम् शारीरिक शक्तियाँ मिश्रित होती हैं। ये सर्वव्यापी हैं। मनुष्य भी इन्हें पाकर एन्टीना की तरह से बन जाता है, इन्हें प्राप्त करता है, प्राप्त करता है और पुनः संचारित करता है। दूसरे व्यक्ति से आते हुए इन चैतन्य लहरियों को हम महसूस कर सकते हैं। यह बात अत्यन्त अविश्वसनीय प्रतीत होती है परन्तु यदि हमारे मस्तिष्क का सृजन इन्ही तंरगों से हुआ है तो ऐसा होना ही था। अन्य लोगों को देने से ही ये चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होती हैं क्योंकि इनका स्रोत सामूहिकता को–पूर्ण को–चाहता है। सहजयोग में व्यक्ति (अकेले) व्यष्टि में साधना करके बहुत उन्नति नहीं कर सकता। आदान प्रदान सहजयोग में आवश्यक है–भौतिक वस्तुओं का नहीं चैतन्य लहरियों का।

मैंने दूरसंचार में M.Sc. की उपाधि प्राप्त की है और पिछले चार वर्षो से सूक्ष्मतरंग (Microwave Antenna) एन्टीना में कार्यरत हूँ। जब मैं सहजयोग में आया तो मुझे गुरुओं, धर्म, यहाँ तक की परमात्मा में भी बिल्कुल विश्वास न था। मैं पूरी तरह से वैज्ञानिक था। परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के सम्मुख मुझे यह चैतन्य लहरियाँ महसूस होने लगीं। शक्की मिजाज होने के कारण, पहले तो मैंने सोचा कि ये शीतल वायु खिड़कियों से आ रही है, तत्पश्चात् मुझे लगा कि ये कोई युक्ति या सम्मोहन है। परन्तु मैं पूर्णतः चुस्त और चेतन था। वहाँ कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ था सिवाय इसके की मेरे हाथों से चैतन्य लहरियाँ बहनें लगीं थी। इससे पूर्व कभी भी अपने जीवन में मैंने इतनी शन्ति और चुस्ती अनुभव नहीं की थी।

विद्युत चुम्बकीय तरंगों तथा उनकी कार्य शैली का ज्ञान मैंने अपनी पढ़ाई के दौरान प्राप्त किया था। पानी के तालाब में यदि पत्थर फेंकें तो जिस तरह से लहरें अपनी धुरी से आगे की ओर जाती हैं उसी प्रकार ये विद्युत चुम्बकीय तरंगें भी अपने स्रोत से निकल कर सारी बाधाओं को दूर

करती हुई चहुँ ओर बढ़ती हैं। रडार में भी टकरा कर आने वाली इन्ही तरंगों को पकड़ने का सिद्धांत कार्य करता है क्योंकि ये तरंगें रडार की ओर आने वाली चीज़ की उपस्थिति तथा स्थिति को बताती हैं। इन विद्युत चुम्बकीय तरंगों का वास्तविक आकार–प्रकार एक रहस्य है। केवल इतना कहा जा सकता है कि विद्युत चार्ज़ द्वारा ये उत्पन्न होती हैं और इनका प्रभाव जाना जा सकता है। वास्तव में इनका वर्णन नहीं किया जा सकता। अपने कार्य में दूर से आती हुई इन विद्युत चुम्बकीय तरंगों की शक्ति को मैं एक मीटर द्वारा माप सकता हूँ तथा तरंग–पथ–प्रदर्शन के माध्यम से मनचाही दिशा में भेज सकता हूँ। टेलीफोन पर भी बात करते हुए हम विद्युत चुम्बकीय तरंगों का इस्तेमाल करते हैं।

यहाँ पर मैं आश्चर्य चकित था कि मेरे अन्दर यही सारी प्रक्रिया घटित हो रही थी। मैं वास्तव में एन्टीना था जो इन तरंगों को महसूस कर सकता था तथा मेरी अंगुलियाँ मीटर की तरह से कार्य कर रही थीं। मैं यह ऊर्जा प्राप्त कर रहा था और इसे इच्छा अनुरूप चला रहा था। मेरे लिए ये बात अविश्वसनीय और आश्चर्यकर थी।

वैज्ञानिक होने के नाते मैंने अपने मस्तिष्क का उपयोग किया और सोचा कि क्यों मेरे हाथों में ये शीतल लहरियाँ महसूस हो रही हैं? क्या मेरे अन्दर ऐसा कुछ है जो सहजयोग के सत्य को पहचानता है और शीतल लहरियों के रूप में अपनी अभिव्यक्ति करता है? अगर इसका सम्बन्ध परमात्मा से है तो निश्चित रूप से मैं इसे अपने मस्तिष्क के माध्यम से नहीं समझ सकूँगा क्योंकि परमात्मा ने ही तो मेरे मस्तिष्क का सृजन किया है। एक वैज्ञानिक होने के नाते यदि मैं किसी रोबोट की रचना करूं तो वह रोबोट किसी भी प्रकार से मुझे–अपने रचयिता को समझ नहीं सकता। अतः परमात्मा को समझने का एक मात्र मार्ग किसी घटना के माध्यम से उसे अनुभव करना है या विवेक बुद्धि के माध्यम से उसे जानना है।

ये चैतन्य लहरियाँ वास्तव में शक्तिशाली हैं। चैतन्य लहरियों की शक्ति की तुलना में अन्तरिक्षयान प्रणाली कहीं भी नहीं ठहरती। ये तो चैतन्य लहरियों का एक छोटा सा रूप है क्योंकि चैतन्य लहरियाँ पूरे ब्रह्माण्ड में पैठ जाती हैं, हम इन का अनुभव करते हैं, इच्छा अनुरूप चलाते हैं, इनका आनन्द लेते हैं और अन्य लोगों को रोग मुक्त करने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं। ये चैतन्य लहरियाँ जब बहने लगती हैं तो हम अपने अन्दर मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक पक्षों को ठीक करके सन्तुलित अवस्था प्राप्त कर सकते हैं। हमारी सारी समस्याओं का मूल कारण ही हमारा मध्यमार्ग पर न होना है, हम या तो भावनात्मक पक्ष में होते हैं या मानसिक या शारीरिक।

सहजयोग तकनीक द्वारा जब हम अपना सन्तुलन करने लगते हैं या इसके लिए प्रयत्न करते हैं तो हमारा अहम् हमें एक ओर या दूसरी ओर ले जा रहा होता है। स्थिर होकर हम इसे देख नहीं सकते। एक क्षण हम प्रसन्न होते हैं और तरंगित एवम् सशक्त परन्तु अगले ही क्षण निराशा से परिपूर्ण, चिन्तित या क्रोधित और इस प्रकार हमारी सारी शक्तियाँ किसी न किसी प्रकार नष्ट होती रहती हैं। जब भी हम असन्तुलित स्थिति में होते हैं तो कैंसर जैसे कई भयानक रोग हमें हो सकते हैं। सहजयोग में आने के पश्चात् जब हमारे अन्दर चैतन्य लहरियाँ बहने लगती हैं तो ये मध्य मार्ग पर आने में हमारी मदद करती हैं।

.....शेष भाग पृष्ठ संख्या 32 पर

सर सी० पी० श्रीवास्तव का भाषण

(26 दिसम्बर 1980 मुम्बई)

(अंग्रेजी से अनुवादित)

26 दिसम्बर 1980 को बम्बई तथा विदेशों से आए सहजयोगियों ने सर सी० पी० श्रीवास्तव के लगातार तीसरी बार समुद्रवर्ती सलाहकार संस्था के महासचिव (Secretary General of IMCO) बनने पर उनका गर्म जोशी से स्वागत किया। उत्तर देते हुए इस अवसर पर सर सी० पी० श्रीवास्तव ने कहा:–

विश्व सहजयोग परिवार के प्रिय सदस्यो! मेरे और मेरे कार्य के विषय में जितनी उदारता पूर्वक आपने कहा है तथा आप लोगों का स्नेह व प्रेम पाने के लिए मैं जो कुछ भी कर पाया और जो कुछ कृपा आप लोगों ने की, यह मेरे लिए अत्यन्त सम्मानमय है। इससे मैं अभीभूत हूँ। आप लोगों ने कहा कि अपनी पत्नी, आपकी माताजी को सहजयोग कार्य करने की आज्ञा देकर मैंने बहुत बड़ा त्याग किया है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि ये बलिदान नहीं है, ये तो महान सम्मान है। लगभग एक तिहाई सदी (34 वर्ष) पूर्व जब हमारा विवाह हुआ तो हमारा परिवार बना, एक छोटा सा परिवार। तभी हमनें मिलकर निर्णय किया कि अपनी दोनों बेटियों का पालन पोषण करना हमारा प्रथम कर्तव्य होगा। हम इस बात पर भी सहमत हुए कि बेटियों का विवाह करने के पश्चात् वे (श्रीमाताजी) मानव कल्याण के लिए जितना भी हो सकेगा समय देंगी। हमारे बच्चे जब बड़े हो रहे थे तो उन्होंने पूर्ण समर्पण पूर्वक उनके पालन पोषण में अपना समय लगाया और मेरी भी जी जान से सेवा की। उनके सहारे और देखभाल के बिना सरकार द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरी तरह से निभा पाना मेरे लिए सम्भव न होता। मैं उनका हृदय से अभारी हूँ। परन्तु आज मैं ये कहना चाहता हूँ कि मैं केवल उनका अभारी ही नहीं हूँ मुझे उन पर अत्यन्त गर्व भी है। क्यों मुझे उन पर गर्व है?

उन पर मुझे इसलिए गर्व है कि एक ऐसे समय पर, चाहे वह पूर्व हो, पश्चिम हो, उत्तर हो या दक्षिण हो, विश्व पीड़ित है। सर्वत्र, बेचैनी खिन्नता और निराशा की भावना है। पूरे विश्व के लोग ये जानना चाहते हैं कि विश्व–निर्मल–धर्म के हम लोग किस प्रकार शन्ति एवम् सुख से रह लेते हैं? विश्व के सभी विचारशील लोगों के सम्मुख यह प्रश्न है और इसका कोई उत्तर तो अवश्य होगा, क्योंकि हम सबने एक साथ रहना है। उत्तर वास्तव में यह है कि चाहे जिस भी देश से हम सम्बन्धित हों, हम सब एक ही विश्व परिवार के सदस्य हैं। हमें यदि स्मरण है तो जिस ब्रह्माण्ड के विषय में हम जानते हैं उसके केवल एक ही उपग्रह पर जीवन है। यह उपग्रह हमारा है। हम लोग अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि परमात्मा ने हमें सर्वोत्तम बनाया है। यह अपने आप में एक महान आशीर्वाद है और हमें चाहिए कि कम से कम कुछ ऐसा करें कि सच्चे भाई बहनों की तरह से मिलकर हम लोग रह सकें। यह केवल जुबानी जमा खर्च न होकर हार्दिक प्रेम हो। इस अवस्था तक पहुंचना अत्यन्त आवश्यक है। मुझे लगता है कि अब विश्व एक नई क्रान्ति के लिए तैयार है। उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति हुई जिससे बहुत से देशों में आर्थिक वैभव आया और जिसने अन्य देशों को भी वैभवशाली बनाया। परन्तु यही सब काफी नहीं है। मानव के लिए भौतिक समृद्धि आवश्यक है परन्तु यह अन्तिम लक्ष्य नहीं है। भौतिक समृद्धि के अतिरिक्त भी मानव के प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ है – 'आध्यात्मिक लक्ष्य'। केवल आध्यात्मिक उपलब्धियों, आध्यात्मिक

तुष्टि के माध्यम से ही सच्ची खुशी प्राप्त की जा सकती है। कोई चिंगारी होनी आवश्यक है जो चमक उठे। और आप लोगों के सम्मुख तो इस प्रकाश का स्रोत है 'ये महिला' (श्रीमाताजी)! अतः जब मैं कहता हूँ कि मै कोई त्याग नहीं कर रहा तो निःसन्देह मैं स्वयं को आप ही का एक हिस्सा मानता हूँ। इस प्रयत्न का एक छोटा सा अंश। मुझे उनपर तथा उनके इस कार्य पर गर्व है।

इसके अतिरिक्त भी मैं आपको कुछ बताना चाहूँगा। हाल ही में मुझे एक अद्वितीय अनुभव हुआ। वे अत्यन्त व्यस्त व्यक्ति हैं और बिना किसी धृष्टता के, यदि मैं कहूँ कि मैं भी अपने कार्य में बहुत व्यस्त हूँ, फिर भी एक शाम लन्दन के इसी प्रकार के एक उत्सव में उन्होंनें मुझे आमन्त्रित किया। वहाँ पर मैंने एक अन्य सहजयोगी परिवार को देखा – सहजयोगी और सहजयोगिनियों को। उनकी भाव भंगिमाएं कितनी सुन्दर थीं! कितनी आन्तरिक शन्ति का भाव उनमें था, सामूहिकता की कितनी भावना उनमे थी! मुझ पर इसका बहुत गहन प्रभाव पडा। मैने महसूस किया कि भिन्न देशों से आए हुए इन दुस्साहसी व्यक्तियों के इस परिवार का अन्तर्परिवर्तन कर दिया गया है, उन्हें एक ही लक्ष्य वाले परिवार के सूत्र में पिरो दिया गया है। उन्हें इस बात का अहसास हो गया है कि हम एक ही परिवार के सदस्य हैं। सभी आध्यत्मिकता के विकास के लिए एक दूसरे की सहायता करने के लिए उत्सुक थे। यह कितना चमत्कारिक कार्य है? मैं सोचता हूँ कि आज विश्व को किसी अन्य चीज की अपेक्षा इसकी कहीं अधिक आवश्यकता है। किसी भी अन्य चीज़ की अपेक्षा इस देश को इसकी बहुत आवश्यकता है। यह अन्तपरिवर्तन है व्यक्ति का आन्तरिक उत्थान, जो कि अत्यन्त आवश्यक है। ये उत्थान यदि नहीं होता तो आपको विरोध का सामना करना पड़ेगा तथा एकरूपता एवम् सदभावना आपको न मिल पाएगी। परस्पर शन्ति पूर्वक रहने के लिए ये दोनों नितान्त आवश्यक हैं।

अतः वे (श्रीमाताजी) आपका अध्यात्मिक पथ–प्रदर्शन कर रही हैं और निःसंशय मैं भी उन्हीं हजारों लोगों में से एक हूँ जो उनके प्रशंसक हैं, उनका सम्मान करते हैं तथा जो कार्य वह कर रही हैं उसके लिए सभी प्रकार से मेरा पूर्ण समर्थन उन्हें प्राप्त है। मेरे विचार से 'समर्थन' शब्द ठीक नहीं है क्योंकि उन्हें किसी के समर्थन की आवश्यकता नहीं है। आशा है आप मुझे क्षमा करेंगें क्योंकि मैं दो भागों में बंटा हुआ हूँ। मेरे लिए ये भूल पाना कठिन है कि मै उनका पति हूँ, अतः मेरी अभिव्यक्ति के लिए मुझे क्षमा करें क्योंकि उनका पति होने के नाते मैंने ये शब्द उपयोग किया था। मेरी इच्छा है कि आप सब ये बात समझ लें कि, जो कार्य वो कर रही हैं, वह मानव मात्र के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में, मेरे विचार से, विश्व भर में पुरुषों और महिलाओं के उत्थान से ही हम अपने सृष्टा सर्वशक्तिमान परमात्मा के योग्य बन सकेंगे।

अब अन्तरराष्ट्रीय समुद्रवर्ती सलाहकार संस्था (IMO) जिस संस्था में कार्य करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है, उसमें मेरे पुनर्चयन के विषय में जो शब्द कहे गए हैं उनके लिए मैं आभारी हूँ। ये अत्यन्त सुखकर थे। सम्भवतः आप लोग जानते हैं कि मेरा चुनाव सर्वसम्मति से था। इस बात का वर्णन मैं केवल एक वजह से कर रहा हूँ कि ऐसे बहुत से मामले हैं कि जिनके कारण विश्व बंट जाता है। बहुत ही कम विषयों पर विश्व सरकारें एक मत होती हैं। मेरे पुनर्चयन पर यदि वे सहमत हुए–चाहे वह सोवियत गणतंत्र हो, अमेरिका हो, बर्तानिया हो, विकसित देश हों, चीन हो या पकिस्तान,

सभी एक विशेष सिद्धांत को मान्यता देने के लिए सहमत हुए हैं और एक प्रकार से उनसे (श्रीमाताजी) प्राप्त हुआ सहजयोग संदेश मेरे माध्यम से सब लोगों को दिया जा रहा था। संस्था के सदस्य देशों को मैं जो संदेश देता हूँ वह ये है कि हम समूहों में बंटे हुए नहीं है। झुंड बनाने में मेरा विश्वास नहीं है, परस्पर विरोध में मेरा विश्वास नहीं है। मैं नहीं मानता कि युद्ध से संसार चल सकता है, मैं नहीं मानता कि विकसित देशों से लड़कर विकासशील विश्व विकसित हो सकता है। मेरा विश्वास है, मैं वास्तव में सत्य पूर्वक मानता हूँ कि हम सब परस्पर एक होकर सहयोग मार्ग से साथ–साथ चल सकेंगें। मैं यही संदेश सदैव देता हूँ।'' यह सहजयोग का केवल एक पक्ष है। परन्तु यही सन्देश है जो मैं संस्था को देता हूँ कि इसमें कार्य करना मेरा सौभाग्य है तथा इस बात की मुझे प्रसन्नता एवम् सन्तोष है कि संयुक्तराष्ट्र प्रणाली की समुद्रवर्ती संस्था की प्रतिनिधि सरकारें इस दर्शन को मानती हैं और स्वीकार करती हैं कि परस्पर मिलकर कार्य करने से समुद्रवर्ती गातिविधियों में काम करने वाले विश्व के लोग आगे बढ़ सकते हैं। इससे सभी को सन्तोष होगा। सर्वसम्मति से मेरा पुनर्चयन करके उन्होंनें मेरा और मेरे देश का सम्मान किया है। परन्तु मैं सोचता हूँ कि इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का पथ प्रदर्शन करने वाले इस सिद्धान्त का उन्होंने सम्मान किया है। इस प्रकार एक ओर तो सहजयोग तथा दूसरी और संयुक्तराष्ट्र की गातिविधियों के बीच कार्यशैली सिद्धान्त समन्वयन हुआ है। संयुक्तराष्ट्र प्रणाली में मेरी बहुत छोटी सी जिम्मेदारी है। परन्तु जहाँ तक हो सके ये मेरा कर्तव्य है और सदा मेरा प्रयत्न रहा है कि विश्व समाज की एक अत्यन्त उन्नत सिद्धान्त के माध्यम से–आध्यात्मिक विधि से–सेवा की जाए। विदेशों से आए हुए मित्रों का, भारतीय होने के नाते, मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। यहाँ आकार नववर्ष का दिन इस देश में बिताकर आपने मुझे महान सम्मान प्रदान किया है। इस अवसर पर मैं वर्ष 1981 के लिए आप सबको मंगलकामनाएं देता हूँ और कामना करता हूँ कि सहजयोग निरन्तर बढ़ता चला जाए तथा पूरे विश्व को चेतना के, स्नेह एवम् प्रेम सम्बन्धों के एक नए स्तर पर उन्नत कर सके तथा उन्हें महसूस करवा सके कि मानव का जन्म महान लक्ष्यों के लिए हुआ है, सर्वसाधारण जीवन यापन करने के लिए नहीं। उसका लक्ष्य आध्यात्मिक, बहुत ऊँचा जीवन है। इन शब्दों से आपकी सफलता, प्रसन्नता और सुख शन्ति के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ और एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूँ। सभी वक्ताओं ने मेरे विषय में सम्मान जनक शब्द बोले। मै उनका (श्रीमाताजी) भी धन्यवादी हूँ कि मुझे आश्रय देकर वो मेरे लिए इतना कुछ कर रही हैं।

आप सबका हार्दिक धन्यवाद
(निर्मल योग 1981)

बाइबल से कथन

ओ३म आमीन तथा सृष्टि की उत्पत्ति

चैतन्य लहरियों के विषय में :

"मैं ही वह जीवन्त भोजन हूँ जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया। जो भी इस भोजन को खाएगा वह अमर हो जाएगा विश्व के जीवन के लिए जो भोजन मैं दूँगा वह मेरा अपना माँस (Flesh) है।

(John 6.5)

"कोई यदि प्यासा है तो वह मेरे पास आए और जलपान करे जिसे मुझ पर विश्वास है, जैसा धर्म–ग्रंथों मे लिखा है, "उसके हृदय से जीवन्त जल की सरिता बह निकलेगी।"

(John 7.37)

आज्ञाचक्र के विषय में :

"संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने के लिए संघर्ष करें। क्योंकि, मैं आपको बताता हूँ कि बहुत से लोग इस द्वार से प्रवेश करने के लिए साधना करेंगे परन्तु वे सफल न होगें।"

(Luke 13.24)

"मै ही द्वार हूँ। कोई यदि मुझेसे प्रवेश करेगा तो उसकी रक्षा होगी, वह अन्दर बाहर आ जा सकेगा तथा उसे चरागाह (मोक्ष) मिल जाएगी"

(John 10.9)

कुण्डलिनी के विषय में :

"परमात्मा के साम्राज्य की तुलना मैं किससे करूं? यह उस खमीरे (Leaven) की तरह से है जिसे लेकर महिला गुंथे हुए आटे की तीन तहों के बीच में तब तक रखती है जब तक आटा खमीरा न हो जाए।

परमात्मा का साम्राज्य कैसा है? और इस की तुलना मैं किस से करूं? यह सरसों के उस दाने जैसा है जिसे लेकर कोई व्यक्ति अपने बाग में ऊगा लेता है। अंकुरित होकर यह दाना पेड़ बन जाता है, और वायु–मार्ग में उड़ने वाले पक्षी उसकी डालियों में घोंसले बना लेते हैं।

(Luke 13.8.)

श्रीमाताजी के विषय में :

"मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि मानव–पुत्रों के सभी अपराध क्षमा हो जाएंगे और उनके द्वारा की गई ईश निन्दा को भी क्षमा कर दिया जाएगा। परन्तु आदिशक्ति (Holy Spirit) के निन्दक के लिए कोई क्षमा नहीं है। उसका अपराध दोष तो कभी समाप्त नहीं होता, सदैव बना रहता है

(Make 3.28)

"मानव पुत्र के विरोध मे कोई यदि कुछ कहेगा तो उसे भी क्षमा कर दिया जाएगा परन्तु आदिशक्ति के विरोध में बोलने वाले को क्षमा नहीं मिलेगी।"

(Mathew 12.32)

"अभी भी आपको बताने के लिए मेरे पास बहुत सी बाते हैं परन्तु उन्हें सहन करने की योग्यता आप में नहीं है। जब सत्यआत्मा अवतरित होंगी तो वे इस सत्य को समझने में आपका मार्ग दर्शन करेंगीं।"

(John 16.12)

"आप के साथ होते हुए मैंने ये सब बाते आपको बताई हैं परन्तु मार्ग दर्शक आदिशक्ति को जब परमपिता परमात्मा मेरे नाम पर भेजेंगे तो वे सभी चीज़ों का ज्ञान आपको सिखायेंगी और जो भी कुछ मैंने आपको बताया है उसे आपके स्मृतिपटल पर लायेंगी।

(John 14.25)

विराट में सहजयोगियों की सामूहिक चेतना के विषय में :-

"उस दिन आप जान जाएंगे कि मैं अपने पिता (परमात्मा) में स्थित हूँ और आप मुझ में हैं तथा मैं आप में स्थित हूँ"।

(John 14.18)

"हे। परमपिता जो गौरव आपने मुझे प्रदान

किया था वो मैंने इनको दे दिया है ताकि वे भी वैसे ही एकरूप हो जाऐं जैसे हम हैं, मैं उनमें हूँ और आप मुझ में है, ताकि वे पुर्णतया एकरूप हो सकें, ताकि ये विश्व जान जाए कि आपने मुझे भेजा है और उनसे भी आपने उसी तरह से प्रेम किया है जिस प्रकार आपने मुझ से प्रेम किया है।"

(John 17:22)

ॐ त्वमेव साक्षात श्री मेरी जीसज़ साक्षात श्री आदिशक्ति भगवती माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

संकलन–ग्रैगोर डी कल्बरमैटन
(निर्मल योग 1981)

(पृष्ठ संख्या 27 का शेष भाग.....)

सहजयोग पूर्णतः निशुल्क है क्योंकि चैतन्य लहरियाँ ही भौतिक पदार्थो का सृजन करती हैं, किस प्रकार हम इन्हें खरीद सकते हैं? चैतन्य लहरियाँ तो प्रेम का प्रवाह है। अतः सभी सच्चे साधकों को इन्हें अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक लेना चाहिए। इनकी प्राप्ति के लिए न तो कोई तकनीक है और न कोई रहस्यमय मन्त्र।

श्रीमाताजी कौन है? वे एक कूटनीतिज्ञ की पत्नी हैं जो इस देश में सरकारी कर्तव्यों के कारण आई हैं। गुरु नहीं। महारानी की तरह से वे अपने घर में रहती हैं फिर भी सभी कुछ छोड़कर हमें आत्मसाक्षात्कार तथा चैतन्य चेतना प्रदान करने के लिए वे आती हैं ताकि हम अपनी दिव्य शक्तियों को पहचान सकें।

यह दिव्य प्रेम का योग है जो शारीरिक मानसिक और भावनात्मक संवेदनाओं से परे है, यह पावन है, आत्मा का प्रेम है जो चैतन्य लहरियों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है। इसी कारण से यह महायोग कहलाता है।

हरि जयराम
सहजयोग आश्रम
44 चैलशम रोड
लन्दन
(निर्मल योग – 1981)

कविता लेखन

श्रीमाताजी का वरदान

"मानव मस्तिष्क में एक ऐसा आयाम है जो पशुओं में नहीं होता – मानसिक या भावनात्मक आयाम जिसके द्वारा हम प्रेम को समझते हैं। हम ये समझ पाते हैं कि किस प्रकार प्रेम प्राप्त करना है और किस प्रकार लौटाना है। हम समझते हैं कि काव्य को किस तरह से लेना है और किस प्रकार उसका सृजन करना है।"

(अहं और प्रतिअहं पर श्रीमाताजी की वार्ता के कुछ अंश-1977)

भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में कविता लिखना एक ऐसा आनन्द है जो हर सहजयोगी के लिए संभव है। कविता में भावनाएं छुपी होती हैं लय, संगीत एवं चैतन्य लहरियों के प्रति खुलेपन की संवेदना निहित होती है। सर्व–व्याप्त देवी प्रतीक्षा करती हैं। हमें केवल अपना चित्त इस ओर लगाना होता है तथा लिखने की इच्छा मात्र करनी होती है।

व्यक्ति की भक्ति सीधी हो सकती है जैसे श्रीमाताजी के किसी विशेष पक्ष को सामने रखकर लिखी गई, या प्रकृति के सौन्दर्य को सामने रखकर या आत्मा को प्रतिबिम्बित करने वाली जीवन की घटनाओं को सामने रखकर लिखी गई कविताएँ।

उत्कृष्ट पाश्चात्य काव्य प्रायः बाई ओर के उदासीन स्वभाव का वर्णन करती है तथा कष्ट पर आधारित जीवन की कलात्मकता से जुड़ी होता है। खोए प्रेम, त्रासदी तथा विरह को पाश्चात्य कलाकृतियों में एतिहासिक पहचान मिली है। विषय वस्तु और मूलभूत ढाँचे में यद्यपि ये काव्य बहुत जटिल है फिर भी इसमें दिव्य प्रेरणा का अभाव है। आश्चर्य की बात नहीं है कि स्कूल में पढते हुए हममें से अधिकतर इस काव्य को नहीं समझ पाए। सच्चा काव्य आत्मा की अभिव्यक्ति लयपूर्ण शब्दों में करता है। छन्द के बन्धनों से मुक्त कविता नए योगी कवियों के लिए बहुत उपयुक्त है क्योंकि उन्हें इसका कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं प्राप्त होता। अधिकतर आधुनिक कविताएं छन्दमुक्त शैली में लिखी जाती हैं बिना दोहे बनाए या लय का प्रबन्ध किए शब्द–प्रवचन से ही उनमें स्वाभाविक लय विकसित हो जाती है। छन्द–मुक्त कविता कल के जाज़ (Jazz) शैली के बहुत करीब है–एक ऐसा स्वाभाविक ढाँचा जिसमें स्वरों, शब्दों तथा अर्थों का अनौपचारिक सम्बन्ध स्वीकार्य होता है।

लेखन में किसी पहेली या किसी पुष्प की चित्रकारी करने का आनन्दमय दृष्टिकोण होना आवश्यक है। व्यक्ति का चित्त अन्दर कुण्डलिनी पर होता है परन्तु साथ ही साथ उसकी संवेदना साक्षी रूप में हाथ से किए जाने वाले कार्य के साथ होती हैं। अत्यन्त दिलचस्प बात है कि लिखते समय जितना अधिक निर्लिप्त आप होंगे उतनी ही सशक्त पावन भावनाएं परमात्मा (श्रीमाताजी) आपको भेजेंगी।

"अपने ही ढंग से सोचें कि हम सहजयोग के लिए क्या कर सकते हैं। हर चीज़ में आप सहजयोग के लिए क्या कर सकते हैं। हर चीज़ में आप सहज देख सकते हैं। आपको विचार प्राप्त हो जाएंगे। उन्हें आपने प्रसारित करना हैं। इन्हें लिख डालें, अपनी कविता लिखें। आप सभी बहुत कुछ कर सकते हैं। अब बर्बाद करने के लिए समय नहीं है। क्या?

(अलीबाग 1988)

"अपने विचारों को लिखें, अपनी कविता लिखें" माँ के ये शब्द हमें बताने हैं कि हम सबके अन्दर कविता विद्यमान है तथा लेखन का ये कार्य तुच्छ नहीं है। यह तो ऐसी चीज़ है जो सहजयोग

की गहनता से उत्पन्न होती है।

"आप अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति बन जाते हैं–सौन्दर्य विवेक आपमें आ जाता है। अचानक आप महान कवि बन सकते हैं।" (सत्चित्त आनन्द फरवरी 1977)

बिना योजना बनाए या सोचे विचारे स्वतः हृदय से लिखी गई कविता ही उत्कृष्ट होती है। प्रायः प्रकृति के किसी भी पक्ष पर (जैसे आकाश, फूल या समुद्र) चित्त डालना ही कविता लेखन के लिए पर्याप्त उत्प्रेरक (Catalyst) है। श्रीमाताजी अपने बचपन का एक अत्यन्त दिलचस्प उदाहरण देती हैं जिससे उनका स्वाभाविक सृजनात्मक गुण प्रतिबिम्बित होता है।

श्री सरस्वती पूजा-धुलिया-1983

आज हम धुलिया (Dhulia) में पूजा करेंगे धुलिया का अर्थ है 'धूल'। मुझे याद है कि बचपन में मैंने एक कविता लिखी थी जो अत्यन्त रुचिकर थी। मैं नहीं जानती ये कविता अब कहाँ है परन्तु इसमें मैंने कहा–मैं हवा के संग उड़ने वाले धूल के कण की तरह से छोटी बनना चाहती हूँ। यह कण सर्वत्र जाता है। उड़कर चाहे तो सम्राट के सिर पर बैठ सकता है और चाहे तो किसी के चरणों में गिर सकता है। कहीं भी जाकर यह बैठ सकता है। परन्तु मैं धूल का ऐसा कण बनना चाहती हूँ जो सुगन्धमय हो, पौष्टिक हो, ज्योति प्रदायक हो।

मुझे याद है कि जब मैं सात वर्ष की थी तो मैंने यह सुन्दर कविता लिखी थी–'धूल का कण बनना'। इतने समय बाद भी मुझे वह कविता अच्छी तरह से याद है कि मुझे धूल का कण बनना चाहिए ताकि लोगों के अन्दर प्रवेश कर सकूं। धूल का कण बन जाना बहुत बड़ी बात है।

जिस भी चीज़ को आप छूएं वो जीवन्त हो उठे। जो भी आप महसूस करें वह सुगन्धमय हो। ऐसा बनना बहुत बड़ी बात है। ये मेरी इच्छा थी जो अवश्य पूर्ण होगी। उस युवा आयु में भी मुझे धूल का कण बनने का विचार था और आज आपसे बात करते हुए मुझे ये बात याद आई कि मैं धूल का कण बनना चाहती थी। इस स्थान (धुलिया) का यही महत्व है।

एक सहजयोगिनी का अनुभव
(निर्मल योग 1981)

मुम्बई

मार्च 1981

जय श्रीमाताजी,

30 नवम्बर 1980 को टूटे मेरे कूल्हे (Hip) की हड्डी का अनुभव मैं लिख रही हूँ। मेरे डाक्टर ने मुझे बताया कि 6 महीनों तक अब मैं बिना छड़ी के चल न पाऊंगी। परन्तु शल्य क्रिया (Operation) के पांचवे दिन हमारी प्रिय परम पूजनीय श्रीमाताजी अस्पताल में मुझे देखने आई। श्रीमाताजी की कृपा और चैतन्य लहरियों से मैंने अगाध शक्ति का अनुभव किया। इतनी तीव्र चैतन्य लहरियाँ मुझसे बहने लगीं कि पन्द्रह दिनों के अन्दर ही मैं बिना छड़ी के चलने लगी। यह वास्तविकता देखकर मेरा डाक्टर आश्चर्यचकित हो गया और पूज्य श्रीमाताजी से मिलने के लिए उत्सुक हो उठा। वह श्रीमाताजी के पास आया और उनसे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। मेरी प्रार्थना है कि अधिक से अधिक लोग सहजयोग में आऐं और परमपूज्य श्रीमाताजी से आशीर्वाद प्राप्त करें। दैवी रूप में वे पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं। प्रेम एवम् आशीर्वाद से परिपूर्ण महान माँ के चरण कमलों का सानिध्य प्राप्त करने वाले हम सब अत्यन्त सौभाग्यशाली लोग हैं।

जय श्रीमाताजी

श्रीमति मेहतन्ये

सहजयोग, कुण्डलिनी और चक्र
(मूलाधार व नाभि चक्र)
गुरुतत्व - दिल्ली 3-1-78

सहज क्या होता है? बहुतों को मालूम भी है आपमें से। नानक साहब ने बड़ी मेहनत की है और सहज पर बहुत कुछ लिखा है। आप लोगों को बड़ा वरदान है उनका यहाँ पर, लेकिन उनको कोई जानता नहीं समझता नहीं। सहज का मतलब होता है सहज 'सह' माने साथ, 'ज' माने पैदा हुआ, आप ही के साथ पैदा हुआ। ये योग का अधिकार आपके साथ पैदा हुआ है, हर एक मनुष्य को इसका अधिकार है कि आप इस योग को प्राप्त करें। लेकिन आप मनुष्य हों तब, गर आप जानवर हो गए हैं तो इस अधिकार से आप च्युत हो जाते हैं, गर आप दानव हो गए हैं तो भी इस अधिकार से आप च्युत हो जाते हैं। गर आप मनुष्य हैं साधारण तरह से तो आपको अधिकार है कि इस योग को आप प्राप्त करें। यही एक योग है बाकी कोई योग नहीं है। बाकी जितने भी योग हैं वे सब इसकी तैयारियाँ हैं।

सहजयोग के और दूसरे माने हम ये भी लगाते हैं कि सहज माने सरल effortless, spontaneous। अकस्मात घटित होने वाली चीज़ है क्योंकि ये एक जीवन्त घटना है। जैसे आपका जन्म होना, जैसे आपका माँ के गर्भ में रहना, जैसा पेड़ों का फूलों से लद जाना, फलों में परिवर्तित होना, उसी प्रकार ये बड़ी भारी सहज घटना है spontaneous, natural नैसर्गिक घटना है और ये घटना जो है मनुष्य की उत्क्रान्ति की चरम सीमा है। मनुष्य जानवर से परमात्मा ने बनाया आप जानते है! मनुष्य क्यों बनाया गया अमीबा से? प्रश्न करना चाहिए सब Scientist को बैठकर के कि आखिर क्या वजह है? समझ लीजिए मैं दो चार कलपुर्जे इक्ट्ठे करती हूँ और एक इस तरह की गोल चीज़ लाती हूँ और उसमें एक डंडा जोड़ती हूँ तो कोई भी पूछेगा कि यह सब क्या कर रही हो? किस के लिए कर रही हो? कोई भी इंजीनियर से पूछे कि वो अगर कोई बैठकर चीज़ बनाता है तो किसी न किसी काम के लिए, किसी utility के लिए ही बनाता है। कोई पागल आदमी होगा जो बैठे हुए यूं ही जोड़कर बैठा रहे। कोई भी समझदार आदमी किसी न किसी कारण से बनाता हैं। तो परमात्मा ने मनुष्य को किसी न किसी कारण वश बनाया। लेकिन ये सब बनाने के बाद भी जब तक इसको मैं मेन से नहीं जोडूंगी तब तक ये useless हो जाता है, इसका कोई काम नहीं रह जाता। ये बिल्कुल व्यर्थ की चीज़ हैं। इसको इस्तमाल करने से कोई फायदा नहीं क्योंकि इसमें से कनेक्शन ही नहीं हुआ है। ये साधारण समझदारी की बाते हैं, बिल्कुल commonsense जिसे कहते हैं। कोई इसको बड़ा पढ़ने लिखने की ज़रूरत नहीं है। कोई भी आदमी ग़र देहात से आए और वो कहे कि भई ये light कैसे जलती है? तो आप कहेंगे कि चलो भई वो जो बटन है उसको दबाओ तो light जल जाएगी। तो शुरु में देखकर अवाक रह जाएगा कि भई ये कैसे हुआ! बड़ी कमाल की चीज़ है! ऐसा तो हो ही नहीं सकता। पर देखता है तो उसे लगता है कि भई ऐसे ही हुआ। इसी प्रकार कुण्डलिनी का भी है कि वाकई बटन दबाने से खड़ी होती है। इसमें कोई शंका नहीं। परन्तु इसके पीछे में बड़ी भारी engineering लगी हुई है। इसके पीछे में कितनी engineering लगी है? सदियों की इसमें मेहनत लगी हुई है। पहले तो electricity का किसी ने पता लगाया फिर उसको ये किया, फिर वो किया, फिर उसको वहन किया, फिर उसके बाद यहाँ लाया,

फिर Tubelights बनीं, फिर ये सब बना। आप तो जानते हैं कितना लम्बा चौड़ा इसके पीछे में काम किया गया। इसी प्रकार आपके अन्दर में जो कुण्डलिनी हैं सहज आपको ज़रूर मिल गई है पर इसका मतलब ये नहीं कि इस पे काम किया नहीं गया। ये आपकी पेशानी पर भी बहुत काम किया गया है, इस पेशानी को भी बड़ी शान से बनाया गया। मनुष्य ने जब अपनी गर्दन ऊपर उठाई तब उसकी ये पेशानी जगी। इसीलिए कहा जाता है कि सिर को किसी के सामने झुकाना नहीं क्योंकि ये पेशानी बहुत मेहनत से बनायी गयी है, मनुष्य बहुत मेहनत से बनाया गया है और मनुष्य क्या है? और असल में अन्दर क्या बनी हुई Engineering है? वो ये है। मेरा तो विचार अपना ये रहता है कि भई पहले light जला लो उसके बाद Engineering समझाती रहूंगी क्योंकि Engineering जो है वो बड़ी सिरदर्द की चीज़ है। कोई लोग तो बोर भी हो जाएंगे। इसलिए मैंनें कहा पहले पार कर दूँ तो मेरी बातचीत का मज़ा उठाते हुए आप सुन भी लीजिएगा। नहीं तो बोर भी हो जाते हैं। मैं खुद ही बोर हो जाती हूँ समझाते समझाते। तो कुण्डलिनी जो है वो क्या चीज़ है? ये भी समझ लो। जो कुण्डलिनी के बारे में दुनिया भर की बातें दुनिया में लोगों ने फैला रखी है वो कैसी गलत हैं वो भी मैं धीरे–धीरे इसी में समझा दूंगी। तो उसके साथ–साथ ये भी समझ लो कि ये लोग अज्ञानी हैं और अज्ञान में ऐसा कार्य करते हैं। कुण्डलिनी के जागरण के बाद क्या होता है वो मैं कल आपको बताऊँगी और इसकी पहचान क्या है?

कैसे पहचानना चाहिए कि आदमी की कुण्डलिनी जागृत है या नहीं? यानि कि यहाँ तक ये लोग कहते हैं कि कुण्डलिनी के जागरण के बाद कोई आदमी जीवित ही नहीं रहता। यहाँ से लेकर दुनिया भर की चीज़ माने ये कि आप जागरण ही नहीं कराओ, इसकी जागृति नहीं कराओ ऐसे ही मर जाओ और इन राक्षसों के हाथ में आओ। क्योंकि जागृति हो जाएगी तो आप पहचानना शुरु कर देंगे की कौन भूत है, कौन राक्षस है और कौन सन्त है। क्योंकि इनके पेट पर पैर आएगा। इसलिए तुमको इतनी उल्टी सीधी बातें बताते हैं कि कुण्डलिनी जागरण में आप कूदते हैं और छलांगे मारते हैं। एक आदमी तो मुझे कहने लगा कि मेंढक जैसे उड़ते हैं। मैंनें उनसे कहा कि भई ये कैसे जाना? उन्होंने कहा कि भई हमारे गुरु ने किताब में लिखा है। इतनी बड़ी किताब है। उसका जो गुरु हैं उसने लिखी हुई है। उसमें लिखा हुआ है कि आप मेंढक जैसे उड़ते हैं। सोचिए बात! इन लोगों को क्या कहा जाए? अब आप लोग यहाँ देख रहे हैं कितनों की जागृति हुई है और होती रही है, और हज़ारों की हुई है। कोई भी मेंढक जैसे कूदा? ये बच्चे हँस रहे हैं क्योंकि ये पार भी है और इनके हाथ में Vibrations भी हैं, ये जानते हैं क्या चीज़ है? बिल्कुल हँसने की बात है इस तरह की जो ऊट पटाँग सब बातें theories चल चुकी हैं इससे कुछ भी नहीं होता। रही बात ये कि कुण्डलिनी अत्यन्त सूक्ष्म चीज है। आपको अपनी सूक्ष्मता में उतारती हैं। इसलिए जो चीज़ अति सूक्ष्म है उसके लिए भी आपको अति सूक्ष्मता में उतरना चाहिए क्योंकि हम लोग बहुत जड़ता में रहते हैं। सुबह से शाम materialism के बीच में पनपते रहते हैं। आजकल तो आप जानते हैं कि हम लोग developing बहुत कर रहे हैं, रजोगुण पर बहुत चल पड़े हैं। इन सब कारणों की वजह से हमको बहुत सतर्क रहना चाहिए। किसी चीज़ में उलझें नहीं, देखते रहें नाटक मात्र। और वो हो सकता है।

सहजयोग में दिल्ली में बहुत लोग आते हैं

पार भी हो जाते है। उनमें से पच्चीस फीसदी लोग सहजयोग में असली उतरते हैं बाकी जो हैं वो फिर उड़ जाते हैं। और इसी तरह से चलते रहता है क्योंकि मैंने आपसे कहा हैं सहजयोग में पार होने की क्रिया तो घटित हो सकती है, छू भी सकते हैं आप। लेकिन उसको बिठाना पड़ता है जैसे कि Motor तो start कर देते हैं हम लेकिन motor को चलाना पड़ता है। Start करने के बाद वो थोड़ी देर खड़ खड़ खड़ खड़ करेगी फिर वहीं रुक जाएगी। लेकिन आप मोटर को जब तक चलाना नहीं जानेंगे उसके कलपुर्जे नहीं जानिएगा, उसको चलाइगा नहीं, जब तक आप जानिएगा ही नहीं कि आपके अन्दर कोई गति भी हुई है, मोटर खड़ी है तो खड़ी है। उसके अन्दर गति होनी पड़ती हैं।

अब सब लोग मेरी ओर ऐसे हाथ करके बैठिए। मैं आपको कुण्डलिनी क्या चीज़ है वो समझा देती हूँ। ये आपके आगे एक नक्शा है, ये भी एक बड़े भारी सहजयोगी ने बनाया है और दो Deaf and Dumb लड़कों से बोलता किया हुआ है। बहुत साधारण है म्युन्सिपैलिटि टीचर हैं वो उन्होंने बनाया हुआ है बड़े प्रेम से। देखिए कितना सुन्दर चित्र है। इनका idea है कि इस तरह से इसके बनाने से, इसके reflections से ही लोगों की जागृति होनी चाहिए। और बड़े कमाल किए हैं जितने भी उन्होंने colour लगाए हैं मेरे पैर से छुआ करके, vibrate करा करके बड़ी मेहनत से बनाया है। ये भी बहुत ज़रूरी होता है (आप लोग भी, ऐसा है आपको कुछ दिखाई नहीं दे रहा? जिनको नहीं दिखाई दे रहा है वो इस तरफ आ जाएं थोड़ा सा, आजाइए और इधर आ जाइए। क्योंकि समझने की चीज़ है)। आगे इसमें जो त्रिकोणाकार अस्थि में ये जो देख रहे हैं यही कुण्डलिनी है। मनुष्य जब माँ के गर्भ में रहता है यह अवस्था पुर्नजन्म की है, जो उत्क्रान्ति की है, जो मैंनें कहा Mains में लगने की बात है, ये जो मैं आपको कहती हूँ आप लोग computer के जैसे हैं। जब तक computer को आप main से नहीं लगाइएगा तब तक आपका computer कुछ बोलेगा नहीं। उसी प्रकार मनुष्य जाति का है। अब देखिए, अब ठीक है? अब इसमें जो कुण्डलिनी दिखाई है ये माँ के गर्भ में जब बच्चा होता है तभी अन्दर प्रवेश करती है। लेकिन यहीं नहीं प्रवेश करती, ऊपर से यहाँ जहाँ बच्चे का तालू होता है, जिसे हम fontanel Bone कहते हैं वहाँ से ये देखा न आपने ये जो त्रिकोणाकार बना है वो Brain है आपका। मनुष्य ही का Brain त्रिकोणाकार हो जाता है, जानवर का flat होता है। मनुष्य का त्रिकोणाकार होता है। तो ऊपर से कुण्डलिनी नीचे उतर के और यहाँ बैठ जाती है और इसके अलावा ये जो दोनों शक्तियाँ हैं, ये दोनों शक्तियाँ Right Side और Left Side, ये दो नाड़ियाँ होती हैं ईड़ा और पिंगला–ये दो नाड़ियाँ होती हैं ईड़ा left की और वो right की पिंगला। अब गर इसको Science से समझाएं तो ये समझ लीजिए कि अपने अन्दर एक स्वचालित संस्था है जो हमारे हृदय को चलाती है हमारे अन्दर अन्न का पाचन करती है माने हमें उसको digest कराती हैं, जो Automatically हमारे शरीर के अन्दर होती रहती हैं क्रियाएं, जैसे हमारी श्वसन क्रिया है, जो श्वास लेने की क्रिया है उसको जो कराती रहती है उसको हम Autonomous nervous system कहते हैं। लेकिन अब किसी से पूछा जाए कि Auto माने स्वयं चालित जो चीज़ है वो क्या है? ये स्वयं कौन है? तो कोई भी इसका जवाब नहीं दे सकता। कोई भी डॉक्टर। डॉक्टर तो ये कहेगा कि हम इसको स्वयंचालित कहते हैं। कह देने से नहीं है, explanation नहीं हैं उनके पास। ये जो स्वयं चालित संस्था है इसमें दो तरह

की संस्था होती है। उसको एक को तो parasympathetic कहते हैं और एक को sympathetic कहते हैं। यही जो ऊपर से जो यहाँ तक दिखाई हुई है, बीच की चीज़ है। ये अपने रीढ़ की हड्डी में सूक्ष्म स्वरूप में रहकर के और parasympathetic को चलाती है और ये जो दोनों संस्थाएं हैं ये left and Right sympathetic nervous system को चलाती हैं। पर ये मैंने आपको सूक्ष्म नाड़ियाँ बताई, ये बाहर में Gross में ये नाड़ियाँ हैं। अब मुझे तो आश्चर्य है कि उस आदमी ने इतनी बड़ी किताब रखी हुई हैं कुण्डलिनी पर वो क्या कहता है कि पेट में, पेट में होती है कुण्डलिनी। जिन्होंने अपनी आँख से देखी है वो ये बता सकते हैं की त्रिकोणाकार अस्थि में होती है। अब इस तरह की उसने गर किताब लिख दी और इतनी बड़ी बात लिख दी तो उससे अब कौन झगड़ा करने जाए? उसको मरे भी अब काफी दिन हो गए हैं।

अभी जिन्दा भी ऐसे बैठे हुए हैं कि वो कुण्डलिनी के बारे में 1760 बातें बताते रहते हैं। लेकिन वैसी बात है नहीं। असल में जो है सो है असत्य। कोई किसी के लिख देने से क्या होता है? कोई चाहे हजारों किताबें लिख सकता है। असत्य बहुत कुछ लिखा गया है आप जान लीजिए। जो कुछ लिखा गया है वो सब कुरान नहीं है, सब पुराण भी नहीं है और बाइबल, गीता भी नहीं है। जो कुछ लिखा गया है उसमें बहुत कुछ झूठ है। यहाँ तक कि हमारे शास्त्रों में भी लोगों ने झूठ घुसेड़ने की कोशिश की क्योंकि झूठ जो होता है वो हमेशा आक्रमण करता है, आप जानते हैं सब कुछ। और इस वजह से अपनी आँख से देखो जो आपमें घटित हो, जो घटना हो, उसे जानो। पढ़ लिखकर के आप कहीं से कुछ पढ़ कर आए, तो कुण्डलिनी नहीं है ऐसे तो। तो जब है ही नहीं तो बताओ हम कैसे करें? आप गर कहीं पढ़ कर आएं कि गुलाब के फूल का रंग नीला होता है और फिर कहें कि साहब ये तो गुलाब का फूल नहीं क्योंकि इसका रंग नीला नहीं तो ऐसे लोगों को क्या कहा जाए, ऐसे लोगों को कौन सी बात समझाई जाए? कि उन्होंने कहा है। आप उनको जानते नहीं? आपने किताब खरीदी, कितने में? दो रुपये में। फिर। मैंने पढ़ी, उसमें ये लिखा है माताजी, फिर आप ऐसे क्यों कह रहे हैं? अब क्या मैं आपसे कहूं कि वो झूठा आदमी है? कहूँ तो आप मुझे डंडा लेकर मारने दौड़ेंगे। क्योंकि आप फौरन उसके, फौरन वकील बन जाते हैं। आपने किताब क्या पढ़ ली, आपके पास किताब क्या आ गई, आप फौरन उस किताब वाले के वकील बन जाते हैं और मेरी जान को लग जाते हैं कि माँ ऐसा तो है नहीं। आप ऐसे ही बोल रही हैं! यानि मैं झूठी हो जाती हूँ। वो सच्चा हो जाता है क्योंकि आपने दो रुपये देकर उसको खरीद लिया। क्या किसी गुरुको आपने बनाया? गुरु महाराज ने जो भी कहा वो आपके लिए सत्य हो गया! भई उसने आपको कुछ किया, उसने आपको पार किया? उसने आपके साथ क्या किया? कुछ नहीं, वो तो सात मंजिल पर बैठते हैं और मुझे नाम दे दिया। मैंने कहा जिसने तुम्हें नाम दिया उसने तुम्हारा कुछ देखा कि नहीं? माँ मुझको तो Heart Attack आ रहा है इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ। मैंने कहा उसी को क्यों नहीं कहते, तुम अब मेरे पास काहे को आए हो? वो आपको देखता भी नहीं कि आपको Heart Attack आ रहा है कि तुमको कोई बीमारी है, तुमको कोई तकलीफ है। ऐसे गुरु को लेकर के क्या उसका अचार डालना है? और ये ऐसे अनेक गुरु हैं जिनके शिष्यों को Heart Attack आ रहे हैं! अरे जब गुरु रख के उससे Heart Attack आते हैं,

उससे तंदरुस्ती चौपटाती है, आपका दिमाग खराब होता है, आपकी बीबी पगलाती है, घर में सब चौपट है, यहाँ कोई लक्ष्मी जी का स्थान ठीक नहीं, तो ऐसे गुरु का क्या अचार डालने का है? आप उसके पीछे में क्यों लगे हुए हो? उसने क्या दिया? हजारों लोग दौड़ रहे हैं इसलिए हम भी दौड़ रहे हैं। अरे सब गधे हैं तो आप भी गधे होएंगे? ये भी एक सोचने की बात होती है। मनुष्य को सोचना चाहिए कि हम क्यों इसे गुरु मान रहे हैं? दूसरा मानता है माने हम क्यों माने? हमें भगवान ने स्वतन्त्रता दी है और हमने अपनी स्वतन्त्रता में ये जानना है। बहुत से ऐसे गुरु हैं जैसे वो ट्रांस वाले महाराज हैं, वो आपको एक नाम दे देते हैं कि आप भूत (Past) में चले जाते हैं। आपको लगता है आप बड़े भारी आदमी हो गए! किसी भूत का नाम दे दिया आपको, आप भूत का नाम लेने से हो जाते है, ठीक है आप बहुत बड़े आदमी हो गए! शराब आप पिओ, औरतें आप रखो, खाना जो खाओ, जैसे भी सताओ, दूसरों को पीड़ित करो, aggression करो, कुछ भी करो!

बस, आप तो साधू बाबा हो गए। फलाने गुरु ने चार औरतें रखीं, मैंने दस रखीं तो क्या हो गया? उसका धर्म से, मनुष्य से, उसके Human Elements से, कोई भी सम्बन्ध गुरु का नहीं रहता। ये अजीब तमाशा है! और आदमी इसको मानता है! उसको ऐसे गुरु बड़े अच्छे लगते हैं। हमारे यहाँ एक आदमी है, तुम तो सुने हो उसका नाम। वो अंग्रेज लोग उसके चरणों में लोट रहे हैं! मैंने कहा अरे भई तुमको काहे को चाहिए? तुमने तो सब कर दिया तमाशा। तुम उसके गुरुघंटाल हो, उससे क्या सीखोगे? ये Sex की बातें? तुम उससे क्या सीखने वाले हो? तुम्हारे से वो सीखे, ऐसे तुम लोग होशियार हो। तुम क्या उसके गुरुपना लगाए हुए हो? लेकिन इसलिए कि Conscious Keeper है, क्योंकि ये तो अभी राक्षस नहीं हुए न। ये सोचते हैं हम इतने गन्दे काम कर रहे हैं, क्राइस्ट ने तो ये सब काम नहीं किया और हम ये सब धन्धे कर रहे हैं liberations के नाम पर। तो कोई न कोई गुरु बना लो तो उसका Certificate लेकर जाएंगे। वो गुरु बैठा रहेगा नर्क में और ये भी उसके पीछे चले जाएंगे। गुरु ऐसे अच्छा लगते हैं लोगों को कि जो कहे तुम बड़े अच्छे आदमी हो, आ–हा–हा–हा! कोई नहीं, बस पर्स ज़रा इधर रख दो। तुम्हारी बीवी तुमसे संभलती नहीं तो उसको भी इधर भेज दो। मैं सब तुम्हारे काम कर दूंगा। ऐसे भी गुरु लोग हैं दुनिया में जो कहते हैं अपना जो भी पैसा धन संम्पति है तुम्हारे पास, सब आश्रम को दे दो और आप वहाँ पर पहुँच जाओ। ऐसे दूसरों के पैसों पर नज़र रखने वाले गुरु कैसे हो सकते हैं? पहली चीज़ पैसे से। और आपको भी अच्छे लगते हैं ऐसे गुरु क्योंकि आप बहुत पैसे वाले हैं, दिल्ली वाले हैं! काफी दोनों हाथ से पैसा कमाते हैं। कुछ लोग अपने Negative भी पैसा कमा लेते हैं, Under the table और उसका भी इन्तजाम होता है। गुरु भी पाल लिया है, उसका भी इन्तजाम है। चलो भई गुरु भी अपने हैं तो अपन ने अपना अगला जन्म भी ठीक कर लिया और ये जन्म भी अपना ठीक है हमारे गुरु तो कुछ कहते नहीं, बड़े शरीफ आदमी हैं।

जकार्ता में हमें एक और गुरु मिले। जकार्ता के पास सिंगापुर में कुछ सिन्धी लोग आए। माताजी हमको बचाओ। मैंने कहा क्या हुआ? कहने लगे अब तो हमारे गुरु ने हमारी लुटिया डुबो दी। मैंने कहा क्यों? कहने लगे वो तो जाकर बैठे हैं स्विटज़रलैण्ड। मैंने कहा अच्छा। हम यहाँ स्मगलिंग करते थे, हमारा सब माल पकड़ा गया। मैंने कहा बहुत अच्छा

हुआ। अब मत करो। कहने लगे नहीं, हमारे तो गुरु ने कहा ऐसा करो और हमको कुछ तरीके भी बताए और अब वो स्विटज़रलैण्ड बैठे हैं। तो ऐसे गुरुजो पालना चाहते हैं उनका यहाँ स्थान नहीं है, सीधा हिसाब, मैं हाथ जोड़ती हूँ।

मेरे पास दो ही शिष्य रहें इसमें कोई हर्जा नहीं। जिसको सत्य चाहिए वो यहाँ आएं। पहली चीज़, जिनको सत्य नहीं चाहिए, जो असत्य के पीछे भागना चाहते है, वो मेहरबानी से तशरीफ ले जाएं। लेकिन आप ग़र सत्य खोज रहे हैं तो मैं मेहनत करने के लिए तैयार हूँ। और सब कुछ करने को तैयार हूँ। उसी की प्रतिष्ठा होती है जो सत्य पर खड़ा होता है। परमात्मा ऐसे आदमी से कभी नहीं, कभी नहीं खुश हो सकते जो आदमी ऊपर एक और पीछे एक बात करता हैं; ढोंगी पना और ये सब चीज़ें यहाँ चलने नहीं वाली। जो वास्तविक में अपना उद्धार चाहता है और कल्याण चाहता है उसके लिए हम हाज़िर हैं उसकी हरेक सेवा करने के लिए। क्योंकि हम आपकी माँ हैं हम आपसे झूठ नहीं बोलेंगे। आपकी किसी भी झूठ बात को हम Support नहीं करेंगे आप बुरा नहीं मानना। अत्यन्त प्रेम से हम तुमसे कहेंगे, तुमको दुख नहीं देंगे, अपमान नहीं करेंगे। लेकिन हम जो बात कहेंगे उसको तुमको सुनना पड़ेगा। इस शर्त हम पार कराएंगे और आगे चलाएंगे और तुमको पार होकर के और दुनिया को देना पड़ेगा। जैसे कोई दीप जलता है तो कोई उसको पलंग के नीचे नहीं रख देता। वो बुझ जाएगा, उसको ऑक्सीजन में जलना चाहिए। इसी प्रकार जो पार हो जाता है उसको दूसरों को देना पड़ेगा। अभी जैसे, अभी एक किस्सा सुना रहे थे कि एक औरत आई थी तो लेकर के आए मेरे पास में। तो पाँच मिनट में उसकी आँखें ठीक हो गई। वो अन्धी हो गई थी, उसको हॉस्पिटल में डाला था। पाँच मिनट में देखने लग गई। वास्तविकता है। सुब्रमन्यम ने सिर्फ कहा था कि मैं तुमको Drive करके पहुँचा देता हूँ। तो Driver बनकर आए थे। तो वो तो पार हो गए और ये लड़की भी ठीक हो गई। उसके बाद एक D.I.G. साहब को भी हमने काफी मेहनत करी। उसके बाद उनको चक्कर पड़ गया! मैंने कहा भई तुमको हीरा ढूंढना है, मोती ढूंढना है? क्या चाहिए? हीरे मोती के लिए ग़र तुमको करना है तो नौकरी छोड़ो और तुमको मिल जाएगा हीरा मोती। दूसरे को इधर लाकर रखो, डकैती करो। चोरी–छिपे करो, वो भी अच्छा है। जादू वाले के पास काहे को जा रहे हो? उसकी शक्ल से नज़र नहीं आ रहा वो कैसा आदमी है? सुना नहीं मेरा। अभी वो बता रहे थे कि अब मर रही है वो जवान लड़की है। 35 वर्ष से ज्यादा उसकी उम्र नहीं होगी। वो मर रही है! उसका गला घुट रहा है! अब चलो माँ उसको बचाने! बताओ मैं क्या करूं? तुम सबको छोड़कर उसको बचाने जाऊं? Heart Attack आ जाते हैं लोगों को। ये सोचना चाहिए कि तुम्हारे गुरु क्या कर रहे हैं? और ग़र किसी का हो असल गुरु वो तो पहले ही जान लेते हैं, पहचान लेते हैं। जो तुम्हारी कुण्डलिनी खराब कर दे, जो तुम्हारे इस मार्ग को अवरुद्ध कर दे वो गुरु कैसा? जिसकी वजह से तुम पार नहीं हो सकते, तो भी उसको छोड़ेंगे नहीं, उसको पकड़े रहेंगे, पकड़े रहेंगे, पकड़े रहेंगे! अभी यही 132 लड़के लड़कियाँ लंदन में मेरे पास आए और बोलते हैं हमारे सिर में Blockage हो गया माताजी, पता नहीं क्या Blockage हो गया? समझ में नहीं आता। उनके भी इलाज हैं। मोहम्मद साहब ने बहुत इलाज बताये हैं ऐसे दुष्टों के, नानक साहब ने भी बताए और वही इलाज से ठीक हुए हैं सब। और तुम लोग भी समझ लो कि

सत्य चाहना है, असलियत चाहना है, पार होना है, हमको अपनी हस्ती को जानना है, हमारे अन्दर जो छिपी हुई सम्पदा हैं उसको हमको Release करना है। उनके शिष्यों को देखो। उनको शिष्यों से देखना चाहिए, इनके जो शिष्य हैं क्या वो धर्माचरण कर रहे हैं? उन को देखो क्या वो शरीफ आदमी हैं? एक कहते हैं हमारी तो बस ध्यान लगा रहता है सारा। मैंने कहा क्या? तीन–तीन घण्टे हम बैठे रहते हैं। मैंने कहा बिल्कुल आलसीपना के धंधे। किसी औरत को बड़ा अच्छा है। मुझे अगर धन्धा नहीं करना है तो मेरे गुरु ने दीक्षा दे दी है, बैठी है तीन–तीन घण्टे। बच्चे मेरे रो रहे हैं, पति उसके बगैर खाना खाए दफ्तर चले गए। धंधा निकाला हुआ है। मेरे गुरु ने मुझे दीक्षा दे दी, नाम दे दिया, बस मैं बैठा हुआ हूँ। निष्क्रियता अगर धर्म का लक्षण होता तो ये श्री कृष्ण हाथ में सुदर्शन चक्र लेकर यहाँ क्यों आए थे? बैठते कहीं निष्क्रिय बन के जंगल में जाकर के। शादी भी करेंगे और बीवी बच्चे उनको नहीं संभालेंगे। ये कोई धर्म का लक्षण होता है? और ये कहने लगे हमारे गुरु ने हमें दीक्षा दी है, 'ये नहीं खाओ, वो नहीं खाओ, ऐसा नहीं करो, वैसा नहीं करो। हाँ शराब जरूरी चीज़ है, शराब के लिए इसीलिए मना किया हुआ है। शराब, सिगरेट के लिए इसलिए मना किया गया है क्योंकि, आप जानते हैं, सिगरेट से कैंसर हो जाता है। वो सब क्या पागल थे जिन्होंने मना किया है? शराब ज़रूर मना किया है। शराब इसलिए मना करा हुआ है, कि शराब आपके चेतना के विरोध में पड़ता है, Consciousness के विरोध में पड़ता है। शराब के पीने से आपकी Consciousness विचलित हो जाती है। आपका Liver खराब हो जाता है। Liver में आपका चित्त है और चित्त खराब होते ही आपकी Realisation खत्म हो जाएगी। ये मनुष्य धर्म के विरोध में है। बिल्कुल राक्षसी है, विश्वास करो। आन्ध्र प्रदेश के लिए अभी कल ही किसी ने सवाल पूछा–आन्ध्र प्रदेश में गई थी चार साल पहले, मेरे चार टेप्स हैं, उन्हे आप सुन लीजिए, आए थे जो मुझे ले गए थे, आए थे कल और अभी आएंगे थोड़ी देर में। उनसे पूछ लीजिए मैने उनसे कहा कि यहाँ तम्बाकू मत तुम चलाओ। गुरु गोविन्द जी एक बार तम्बाकू के खेत में गए थे तो उनका घोड़ा उल्टा दौड़ा। पूछ लो किसी से, किसी ने पढ़ा हो तो। तम्बाकू के वहाँ पर खेत के खेत लगे हुए हैं जैसे कोई Tulip लग जाती है लंदन में, और सब बड़ी बड़ी मोटरें लेकर के मुझे लेने आए। मुझे आए हँसी। मैंने कहा इससे अच्छा तो बैलगाड़ी में आते लेकिन कुछ धर्म लेकर के आते। सारी दुनिया भर के लिए वहाँ से वो लोग तम्बाकू भेजते हैं। कितना पाप इनके पुश्तन पुश्त पड़ा होगा! अरे बाप रे! अरे बाप रे! मैने कहा कि इसको उखाड़ कर फेंक दो। तो कहने लगें कि हम क्या करें? मैंने कहा कि यहाँ पर कपास लगाओ, यहाँ का कपास बहुत बढ़िया होगा, तुम लगाओ एक दो ने सुना, बाकी सब तो मुझसे इतने नाराज़ हो गए कि मुझे चिट्ठी भी नहीं भेजी। माताजी बहुत खराब हैं और हमारे ऐसा कह रही हैं, वैसा कह रही हैं। ठीक है अब हालत देखिए। सारे खेत भर गए पानी से। मैंने यही कहा था कि समुद्र आप पर खौलेगा एक दिन। समुद्र क्या है? साक्षात पिता स्वरूप है। आपको सिखाता है, गुरु है, साक्षात गुरु है आपको सिखाता है और गुरु के विरोध मैं बैठती है शराब और सिगरेट। इसलिए मना किया है। और तीसरी चीज़ जो बहुत बुरी है वो है जुगाड़। अभी हमारे एक सहजयोगिनी है उनके अड़ोस पड़ोस में सब ताश खेलते हैं। औरतों को तो चक्कर हो गया, सवेरे से उठे, कॉफी पार्टी शुरू हुई, ताश चलने लगे। अब उसके हाथ में

एक फोड़ा आ गया। मेरे पास आई बोली माताजी इसको ठीक करो। मैंने कहा एक दो दिन तो इससे नहीं बोलेंगे बेचारी से, बहुत दर्द होता है, ये करो, वो करो। देखो तुम ताश खेलती हो? कहने लगी हाँ। और पैसे भी लगाती हो? कहने लगी हाँ। Promise करो कि कभी नहीं छुओगी ताश। खेलो ताश, ताश खेलने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन गर पैसे पर उतरे तो गए क्योंकि ये मनोरंजन का व्यवधान है। गर किसी चीज़ से आप मनोरंजन करते हैं तो इसमें आप पैसे के कम्पीटीशन से मनोरंजन करते हैं तो आपने अपने चित्त को विक्षुब्ध कर लिया। सीधा हिसाब है समझने का, अब हम हैं आपके साथ, मजे से बैठे हैं, आप हमारे मित्र हैं जैसे ही आपमें मित्रता पैसे के दम पर आई, मित्रता खत्म हो जाती है। होती है कि नहीं होती है? कोई भी कैसा भी हो, सच बात है कि नहीं? कोई सा भी अच्छा Relation Ship तोड़ना करना हो तो पैसे का झगड़ा खड़ा करो, फौरन हो जाएगा। जब तक आप पैसे का झगड़ा खड़ा नहीं करोगे तब तक आपकी मित्रता बनी रहती है। सूक्ष्म में यही बात होती है। इसलिए गर ताश भी खेलना हैं और दोस्ती के लिए खेल रहे हो तो खेलो। बड़े दुश्मन हो सकते हैं न, इससे बढ़कर दुश्मनी और कोई नहीं हो सकती। कितनों की आहें, कितनों का शाप। छोटे–छोटे बच्चे घर में छोड़कर के औरतें अपनी ताश खेल रही हैं। काहे को माँ बनी, नशेड़ी बन जाती! जंगल में बैठकर के सब नशेड़ियाँ खेलती। आपस में इन बच्चों के ऊपर में माँ बनकर आने को किसने कहा था आपसे? फिर उनके बच्चे भी नशेड़े बने? आदमी लोग भी नशेड़े, शराबी गंजेड़ू। मैं क्या करने यहाँ आई हूँ? दिल्ली में बहुत ज्यादा इसका जोर चला हुआ है। पंजाबी लोग तो सोचते हैं जब तक वे ताश नहीं खेलेंगे वो पंजाब ही के नहीं हैं। बड़ा दुःख लगता है। जिस नानक ने इस बड़ी धरती पर जन्म लिया, दत्तात्रेय का साक्षात् अवतरण जो हुआ, उनके जीते जी तो इतना सताया उनको कि बस रे बस और अब जब वो मर गए तो पंजाबी बनकर और उनकी जान लो सब लोग! उनको जिस चीज़ से अत्यन्त ग्लानि होएगी वही सारे कार्य आप लोग करते जाओगे तो क्या कहा जाएगा? जो अपने पिता स्वरूप, जिन्होंने अपने लिए इस संसार में जन्म लेकर के, मनुष्य का जन्म लेना कोई आसान थोड़े ही हैं, इतनी मेहनत की, उनके साथ कितनी हम लोग ज्यादती कर रहे है?

अब आप लोगों को मैंने ये बताया है कि किस चीज़ को मैं मना कर रही हूँ। क्योंकि मैं माँ हूँ मैं मना करूंगी। गर आप बिजली में अपना हाथ देंगे तो मैं कहूंगी बेटे इसमें हाथ मत दो और आपको समझना चाहिए कि माँ का दिल जितना टूटता है आपका अपने लिए नहीं टूट सकता। इसलिए मेरी बात का कोई भी बुरा नहीं मानना। तुम्हारे हित के लिए, तुम्हारे कल्याण के लिए एक माँ ही मेहनत कर सकती है। इतने लोग realised souls हैं दुनिया में तुमको नहीं मालूम। इतने गुरु हैं, सब जंगल में बैठे हैं और हिमालय में बैठे हैं। मेरे से मिलने आते हैं, मैं कहती हूँ क्या कर रहे हैं वहाँ बैठकर के? तुम लोगों को मैं क्या करूं? वहाँ तुम्हारे को मैं क्या मर्तबान में भरकर रख दूं? क्या करूं? तुम वहाँ पर बैठे हो, क्या करूं तुमको। कहने लगे माँ बारह साल तुम मेहनत करो, फिर आएंगे। ये बड़े खराब लोग होते हैं। हम तो नहीं आने वाले? किसी को उनके पास भेजो तो टाँगे वाँगें तोड़ देते हैं। कहते हैं, बड़े जालिम लोग हैं, बड़े बेकार लोग हैं, उनको कुछ नहीं हो सकता, इनको मरने दो। ऐसे कहते हैं। तुम्हीं हो, तुम्हारे अन्दर इतनी हिम्मत है, तुम्हारे अन्दर ही इतना प्यार है इनके लिए जो

इतनी मेहनत कर रही हो। हम लोग के बस का नहीं। जो आया है उसी को मारने लग गए। डंडा लेकर के उसके पीछे पड़ गए। अब यही पण्डितों ने, जो मंदिरों में बैठकर के तुम्हारे पैसे खा रहे हैं, इन्होंने मरवाया कितनों को। और ये जो पोप बने घूम रहे हैं इन्होंने ही क्राइस्ट को क्रूसीफाई किया और अब भी कर रहे हैं। इन लोगों के पैरों में जा रहे हो, ये क्या कर्म करेंगे? सवा रुपये की श्रद्धा पर चलने वाले लोगों के पास जाने की क्या जरूरत है? बहुत सी अनाधिकार बातें होती हैं। क्या बताऊं, जो देखी हैं। पता नहीं कब लोगों की आँखे खुलेंगी? कबीर इतना कह गए, अखण्ड पाठ रखा है सब लोग वहाँ बैठे हैं अखण्ड पाठ में। अरे अखण्ड पाठ का मतलब ये होता है कि अखण्ड उसकी तरफ चित्त देकर सुनो। कोई सुनने वाला नहीं। इस तरह की चित्त करने से कैसे तुम लोग समझोगे भाई? और जो कुछ कहा गया है उसको करो न, उसको रटने से नहीं होता है। सब कुछ कह गए हैं, सब कुछ बता गए हैं और जो सहज है वो अनेक वर्षो से है। जब से Creation हुआ तब से सहजयोग है सिर्फ यही है कि आज सहजयोग उस हद तक पहुँच गया जहाँ आपका connection उस अनाादि से हो सकता है। सहज अनेक तरीके से चलता आया, जब पहले पृथ्वी बनाई गई उस पर जब उसको ठण्डा, गर्म किया गया, जब उसके अन्दर निर्वित्ती हुई उसके बाद जब उसमें जीव जन्तु आ गए, जब मनुष्य आए, हरेक चीज़ जो है सहज ही होती गई। कृष्ण का भी सहजयोग है। रास उसका वो मटके का फोड़ना, सभी कुछ सहजयोग है। मोहम्मद साहब का सारा काम सहजयोग ही रहा। सब सहज ही करते आए। आज सहजयोग उस जगह पर पहुँच गया है जहाँ पर कि आपका amass, सामूहिक रूप से realization होना है। इसकी ज़रूरत तो थी ही लेकिन आज एतिहासिक समय आ गया है। एतिहासिक समय आना पड़ता है। Historical Time जिसको कहते हैं वो आ गया है। जब Time आ जाता है तभी फूल भी फलते हैं, जब Time आता है तभी बहार आती है। इसी प्रकार समझ लीजिए पहले एक ही दो फूल खिलते थे, आज अनेक फूल खिलने का समय आ गया है। उसकी जरूरत थी, आपको वचन दिए थे और जबकि एक आदमी पार होता था तो उसको पकड़कर मारते थे क्योंकि उसकी बात समझ में नहीं आती थी, लेकिन आज जब आप हज़ार आदमी पार हो जाएंगे तो सबको उनकी बात समझ में आ जाएगी।

अब ये कुण्डलिनी क्या है? इसके बारे में अभी तक इतना किसी ने खोलकर बताया नहीं। क्राइस्ट ने कहा I will appear before you in the tongues of flames । इसाई लोगों से जाकर पूछो इसका क्या मतलब है? किसी को पता नहीं। कबीर दास, नानक साहब ने सबने ईडा पिंगला नाड़ी, शून्य शिखर, सब बातें अपनी कविताओं में कह डालीं। वो गोपनीय रहीं। इसकी वजह ये है कि उस समय जो कुछ कहा भी था उसी के लिए जान ले डाली और खोलकर कहने और समझने के लिए भी मनुष्य में उतना ज्यादा माद्दा नहीं था। हालांकि आपको आश्चर्य होगा कि आज वो माद्दा ज्यादा है। मनुष्य कितना भी लगता है गिरा हुआ उसका माद्दा बढ़ा हुआ है। ऐसे सभा में बैठकर यदि कोई कृष्ण के जमाने में lecture देता तो कोई सुनने वाला था? इसलिए गोपी की लीला करनी पड़ी, उनकी गगरियाँ तोड़नी पड़ीं और उसमें से vibrated यमुना का पानी उनकी कुण्डलिनी पर गिराना पड़ा। ये सब नाटक इसलिए किया गया क्योंकि उस समय ऐसे आप लोगों की तरह बैठ कर लोगों से बात चीत नहीं

की जा सकती थी। लेकिन आज आप लोग ऐसे बैठे हैं। आप में खोज बहुत जोरों में है। इस वजह से सहजयोग फलित हुआ है। अनेक देशों में हुआ है, खासकर लन्दन में सहजयोग ने बहुत जोरों में अपना पैर जमा लिया है। ये एक बात है कि अंग्रेज थे बड़े दुष्ट, इसमें कोई शक नहीं, वो रहे होंगे पर उनके बच्चे बहुत अच्छे हैं, उनके बच्चे वाकई में साधू हैं और उन्होंने वास्तव में बहुत गहरी खोज की है जीवन में, बड़ी गहरी खोज की है। उसके फलस्वरूप बहुत गहरी खोज की है। यहाँ तक कि वे गांजा पीने लग गए। यहाँ से भेजे थे न आपने बहुत सारे गांजा पिलाने वाले उन्होंने उनको गांजा पिला दिया, ये कर दिया। सब करने के लिए तैयार थे खोज के विषय में। और इतने पढ़े लिखे हैं कि कुण्डलिनी के बारे में वे सब कुछ जानते हैं वो जानते हैं कि सही है या गलत है। जैसे उन्होंने सत्य पाया एक दम उसे पकड़ लिया। आपको आश्चर्य होगा कि लन्दन में मेरे सिर्फ चार lecture हुए, कुल मिलाकर चार और अभी तीन सौ बढ़िया वहाँ पर सहजयोगी तैयार हैं। बढ़िया। क्योंकि तैयार चीज़ थी। सूखी लकड़ी होती है आग जल्दी से पकड़ लेती है। अभी Airport पर कह रहे थे कि माँ बच्चों में एकदम से प्रज्जवलित कर दो। मैंने कहाँ बेटा ये गीली लकड़ी है, इसको पहले सुखाना पड़ेगा, मेहनत करनी पड़ेगी। जब धूप आएगी उसमें सुखाऊंगी। प्यार की धूप में जब ये सूखेंगे तब कहीं जाकर ये पनपेंगे। कोई आसान नहीं है। इसलिए अपने को माँ के प्यार में रखें, अपने से प्यार करें और सारी बात को एक खुले हुए दिमाग से सोचें।

ये कुण्डलिनी हमारे अन्दर जो है साढ़े तीन कुण्डलों में रहती है इसलिए इसको कुण्डलिनी कहते हैं। 'कुण्डल' जो कि घुमाई हुए चीज़ है जिसको कि हमारे यहाँ इसे सर्पाकार कहते हैं। सर्पाकर जब होता है, सर्प जब बैठता है तो सर्पाकार होकर के मराठी में इसको वेटोड़े कहते हैं, वेटोड़े शब्द बहुत अच्छा है जो घूमकर के एक के ऊपर एक चढ़ जाती है। इस तरह की चीज़ है ये कुण्डलिनी। इसको Coils आप कह सकते हैं। एक के अन्दर एक साढ़े तीन Coils हैं। अब साढ़े तीन क्यों है? तो इसका भी कारण है। आप Automatic watch गर देखें जो Automatic चलती है तो इसमें साढ़े तीन Coils लगाने पड़ते हैं। इसमें गणित है। अनन्त की बात है जिसकी वजह से होता है। अब इसके details में मैं जाऊंगी तो वो एक चीज़ चल पड़ेगी। लेकिन जो भी सोचा है वो Engineering First class है, उसमें कोई शंका नहीं। अब ये साढ़े तीन की कुण्डलिनी यहाँ बिठा दी है। ये बीज का अंकुर है, ये बीज Premule जिसको अंगेजी में कहते हैं, वो है और इसके नीचे में जो चक्र पहले से बना हुआ है एक दो तीन चार इसमें चार इसके पंखुड़िया हैं। ये चक्र, इसको मूलाधार चक्र कहते हैं। मूलाधार नहीं कहते, मूलाधार चक्र। और ये जो त्रिकोणाकार जो जगह है माँ सबकी अपनी माँ है, समझ लो आपकी अपनी टेप है। जहाँ बैठी हुई है ये आपकी अपनी माँ हैं। आपके बारे में सब कुछ जानती है इसलिए आपकी टेप है। हर एक की अलग–अलग माँ है और बार–बार ये आप ही के साथ जन्म लेती है। जहाँ जहाँ आप जन्म लेते है वहीं ये जन्म लेती हैं और ये जो कुण्डलिनी है इसको आप किसी भी तरह से छू नहीं सकते, किसी भी तरह से आप जागृत नहीं कर सकते। आप सिर के बल खड़े हो जाइए, पढ़िए लिखिए, कुछ करिए किसी से नहीं हो सकता। 'न योगे न 'सांख्येण'। सब से अच्छे तो हमारे आदिशंकराचार्य थे। उन्होंने कह दिया कि योग और सांख्य से नहीं, माँकी कृपा से जागेगी क्योंकि इसकी जो माँ है जब तक वो

नहीं आएंगी संसार में तब तक ये जागती नहीं। कभी–कभी निराकार में अर्थात माँ के प्रेम की वजह से कोई कोई लोग पा लेते हैं, इसलिए वो निराकारी होते हैं, ज्यादातर निराकार की बात करते हैं। जैसे कि आप कह सकते हैं बुद्ध के बारे में हुआ। कि बुद्ध एक बार थक कर बैठे थे तब स्वयं साक्षात् आदिशक्ति ने ही उनको जागृति दी और वो पार हो गए। तो उन्होंने ईश्वर है ही नहीं ऐसा कहा। आप भी जब पार हो जाते हैं तो आपको ठण्डा–ठण्डा आता है और आप पार हो जाते हैं। आप थोड़ी देखते है कि ईश्वर है या नहीं। ये तो मैं बता रही हूँ कि ईश्वर है या नहीं। उसकी वजह ये है कि सूक्ष्म, अतिसूक्ष्मता से जब कुण्डलिनी ऊपर को चढ़ती है तो अन्दर से गुजरती हुई जाती है, बाहर का मामला उसे कुछ दिखाई नहीं देता। जब चित्त आपका अतिसूक्ष्म से अन्दर से घुसता है तो बाहर का मामला दिखाई नहीं देता है। जैसे अभी आप बैठे हुए हैं तो आपको क्या मालूम बाहर का? दिल्ली आपको थोड़े ही दिखाई देगी। आप aeroplane से आएंगे तो आपको सारी दिल्ली दिखाई देगी। लेकिन गर आप घर के अन्दर घुसे हों तो आपको घर ही दिखाई देगा, उसका भी बाहरी हिस्सा नहीं दिखाई देगा। इसी तरह से कुण्डलिनी जब अतिसूक्ष्म उठती है तो आपको बाहर का कोई तरीका दिखाई नहीं देता। आप ये भी नहीं जानते कि ईश्वर है या नहीं है। सिर्फ आपके अन्दर से ठण्डक–ठण्डक सी आने लग जाती है, चैतन्य की लहरियाँ आने लग जाती हैं और इसका effect आप देखते हैं। अब तो आपकी माँ हैं यहाँ और हम एक चीज़ आपको मैं बता सकती हूँ, उसका proof भी दे सकती हूँ।

अब ये जो मूलाधार चक्र है इसमें श्रीगणेश बसते हैं। श्री गणेश का मतलब ये होता है कि ये प्रतीक हैं हमारे अन्दर एक symbol हैं। किस चीज़ का symbol हैं, Innocence का, अबोधिता का, पवित्रता का। जब ये माँ ने सृष्टि बनाई पूरी तो सृष्टि बनाने से पहले उसमें संसार में पवित्रता भरी। कोई माँ होएगी, उसका बच्चा पैदा होने वाला होएगा तो सबसे पहले हर चीज़ में हजार तरीके से सफाई करेगी बच्चे को कहीं गन्दगी न लग जाए। कैसी भी माँ हो, चाहे वो अनपढ़ हो चाहे वो कुत्ती ही क्यों न हो, चाहे वो कोई भी माँ हो, पहले अपने बच्चे के लिए साफ सुथरी जगह बना देगी कि मेरे बच्चे पर किसी का Attack नहीं आ जाए। ये उसकी ममता की निशानी है। तो उसने श्रीगणेश को बनाकर के यहाँ बिठा दिया। पवित्रता को उसने बिठा दिया दरवाजे के ऊपर में और जो लोग कहते हैं Sex से कुण्डलिनी जागृत होती है वो अपने माँ के साथ Sex करने को कह रहे हैं। कम से कम हिन्दुस्तानी होकर के इसको समझो। अंग्रेज तो इसको समझ नहीं सकते। उनकी कोई माँ बहन ही नहीं गधों की। तुम लोग तो समझो कि कोई ऐसी बात आपको समझाए तो क्या इसको मानना चाहिए? जो समझाता है उसको कहो अपनी माँ के साथ रहो। ऐसी गन्दी बातें करने की ज़रूरत नहीं। कितना बड़ा राक्षस है, जो कहता है कि कुण्डलिनी की जागृति जो है Sex से होती है कुछ भी नहीं होता है। जब आदमी इस तरह से गलत काम करता है, कोई भी आदमी जो बहुत विषयी होता है और जीवन की जिसने कोई इज्ज़त दुनिया में अपनी नहीं की हुई जिसने बड़े गन्दे कर्म किए है और वो कुण्डलिनी की बातें करने लग जाता है तब गणेश जी उस पर बिगड़ते हैं। और तब वो नाचना शुरु करता है चीखना शुरु करता है, बीच में ही उठ उठ देखता है, आफत मचाता है। ये कुण्डलिनी में गड़बड़ करने से होता है। जो सद्चरित्र है उसमें

कभी कुण्डलिनी ऐसा काम नहीं करेगी। वो तो माँ ही है तुम्हारी। वो तो वरदान के लिए है तुम्हारे, तुम्हारे पुर्नजन्म के लिए है, वो ऐसा नहीं कार्य करती। पर गणेश गुस्सा हो जाते हैं। तांत्रिक लोगों ने इसका बड़ा फायदा उठाया। हालांकि मैं ये कहूंगी कि माँ बच्चे से पूरी गलती कभी नहीं कहने वाली, इसी वजह से हो शायद। माँ कभी ये नहीं कहती कि Completely Condemned। माँ का यह स्वभाव होता है। मैं ये कहूंगी कि शुरु में जो गलती हुई होगी, हो सकता है। मैं अपने स्वभाव के अनुसार कहूंगी। हो सकता है कि मनुष्य ने अपने मूलाधार चक्र पर गणेश जी को देखा होगा, उनकी सिर्फ सूण्ड ही देखी होगी तो सोचा होगा कि यही कुण्डलिनी है और इसीलिए उन्होंने गड़बड़ करी होगी। हो सकता है। इसलिए Basically, शुरु से ही, बुनियादी तौर पर मनुष्य को Condemn नहीं किया जाता। लेकिन जब उन्होंने देखा कि इस तरह से काम करने से हमारे अन्दर कुछ–कुछ अजीब–अजीब सिद्धियाँ आ जाती हैं तो उन्होंने सोचा कि यही शक्ति हो सकती है। सिद्धियाँ कैसे आती हैं? आप जब कोई से भी चक्र पर, विशेष कर इस चक्र पे गलत काम करते हैं, जैसे कि समझ लीजिए गणेश जी का मन्दिर है, तांत्रिकों ने ऐसा किया, दक्षिण में एक मन्दिर में ऐसा दिखाया है कि गणेश जी का अपनी माँ के साथ गंदा सम्बंध है। ये भी किया, तांत्रिक लोंगों ने कुछ छोड़ा नहीं। गर गणेश जी के मन्दिर के सामने या मन्दिर के अन्दर बैठ कर के आपने व्यभिचार किया तो पहले तो आपके अंदर गर्मी आ जाएगी बहुत या आपके अन्दर बहुत ज्यादा blisters आ जाऐंगे। कोई न कोई बहुत बड़ी तकलीफ हो जाएगी आपको। कुछ लोग नाचने लग जायेंगे कुछ उड़ने लग जाऐंगे। तो भी आपने नहीं सुना, आप करते रहे जबरदस्ती तो, जिसको Negative तांत्रिज़्म कहते हैं, वो शुरु हो जाएगी। माने उस जगह से गणेश जी हट जाऐंगे। उस मन्दिर से गणेश जी का चित्त हट जाएगा। वो निकल जाऐंगे। और गणेश जी हटते ही साथ अपवित्रता अन्दर आ जाएगी। ये दोनों देखिए। दोनो साइड इनकी और उनकी जुड़ी हुई हैं। Left & Right Sympathetic Nervous System में से Left में जो कि आप देख रहे हैं, Left Side में पूरा Collective Subcounscious है। Right Side के तरफ में पूरा Collective Supra Conscious है। जितने मरे हुए भूत हैं उसमें जिसको मन चाहेगा वो आ सकता है और दुनिया भर की आपको सिद्धियाँ आ सकती हैं। आप घोड़े का नम्बर भी बता सकते हैं आपके हाथ में से मूर्तियाँ निकल सकती हैं, आपके हाथ में से कुमकुम निकल सकता है और घोड़े का नम्बर आदि वगैरा। अब मनुष्य को ऐसा नहीं सोचना चाहिए क्योंकि मनुष्य के पास बुद्धि है। मनुष्य को ये सोचना चाहिए कि परमात्मा को क्या इसमें Interest हो सकता है कि हमें हीरे की अंगूठी दे? पहली चीज़। क्या आपको हीरे की अँगूठी चाहिए? फिर नहीं चाहिए आपको तो फिर ली क्यों? फिर ये भी सोचना चाहिए कि ऐसे हीरे की अँगूठी देने वाले ये जो लोग होते हैं वे अपने देश को सारा कल्याण क्यों नहीं कर देते? सब अमीर लोगों को, जिनके पास बड़ी–बड़ी गाड़ियाँ हैं, उनको हीरा देने में क्या रखा है? इसके बारे में भी कबीर नें बहुत लिखा है। नानक साहब नें तो पूरा एक Chapter ही लिख दिया है। ये खेचरी आदि, ये शक्ल ऐसा बना, अंतड़ियाँ अंदर ले लेना, आदि जो फालतू की चीज़ें हैं इन लोगों ने लिखा कि इससे थोड़ी भगवान मिलता है। लेकिन इनको कौन पढ़ता है? आजकल तो लोग रजनीश को पढ़ते हैं क्योंकि भगवान का नाम लेकर कैबरे डांस देखने को मिले तो कोई क्यों

ना जाए? वो भी मुफ्त! मनुष्य की वृत्ति ऐसी हो गई है, इसलिए ऐसा हो रहा है। तो जब हम ये सोचते हैं कि ये सिद्धि आ गई आदमी में तो हम उसके चरण में जाने लगते हैं। जब उसके अन्दर जाने लगते है तो गणेश जी आपमें लुप्त हो जाते हैं। ज्यादातर गणेश जी के लुप्त हो जाने से Prostate Gland की बीमारियाँ शुरु हो जाती हैं। दूसरी Side देखिए। ये तो Indulgence की हम बात कर रहे हैं, दूसरी साइड आप देख लिजिए। अभी एक साहब आए थे आज ही, बेहद शुद्ध आदमी हैं, इन्होंने अपने यहाँ गणेश जी की पूजा रखी है उन्होंने। पूजते हैं सुबह–शाम और उनका जो है मूलाधार चक्र पकड़ा है? एक साहब और हैं, हमारे बड़े भारी सहयोगी हैं वो आए मेरे पास बड़े भारी गणेश भक्त हैं, उनका Prostate Gland का ऑपरेशन होने वाला है! संकष्टि का दिन था। मैंने तो कुछ पूछा नहीं उनसे, कहा चना खाओ, हमारा तो चना ही प्रसाद है। आप जानते हैं। तो दूसरे साहब उनके साथ में थे, कहने लगे इनका तो आज उपवास है। मैंने कहा संकष्टि के दिन उपवास? किसने बताया तुमसे? कहने लगे सभी बोलते हैं। मैंने कहा सभी बोलते हैं पर जरा सोचो दिमाग से कि जिस दिन श्री गणेश का जन्म हुआ, जिस दिन पवित्रता माँ लेकर आई, उस दिन तुम लोग उपवास कर रहे हो! ये उसका क्या आदर कर रहे हो कि अनादर? जिस दिन कोई अपने घर बड़ा आदमी आता है तो उस दिन हम कितना जश्न मनाते हैं? ये खिलाओ वो पिलाओ, और जिस दिन श्री गणेश आपके घर में आते हैं उस दिन आप उपवास करते हैं। कुछ विचार करो, वो दिन क्या उपवास करने का है या जश्न मनाने का? तो उनके दिमाग में आया, बड़े समझदार आदमी हैं, ब्राह्मण हैं अग्निहोत्री ब्राह्मण, उनके यहाँ पहले बहुत यज्ञ वज्ञ होते थे लेकिन समझदारी उनमें इतनी है कहा माँ लाओ, वो सब चना खा लिए आपको आश्चर्य होगा, पूछ लें उनसे चिट्ठी लिख करके पूना में रहते हैं, उनके प्रोस्ट्रेट ग्लैड का एक दम ठीक हो गए। उनको ऑपरेशन नहीं करना पड़ा। आदमी अगर बीचों–बीच रहे, ज्यादा Extreme पना नहीं करे तो सब ठीक हो जाता है। कौन कहता है अपना इतना सिरदर्द लो दुनिया भर का? मारे आफत कर लेंगे, हठयोग में आंतड़ियाँ निकाल कर रख देंगे! उनसे पूछो। अभी इनको तीन साल बाद ठीक किया मैंने। इनकी तो उनकी पूरी आंतड़ियाँ ही मेरे सामने निकल आती थीं। मारे घबड़ाहट के मैंने कहा भैया दो साल तुम मेरे पास मत आना जब तेरा ये बंद होगा तमाशा, ऐसे–ऐसे कलाटियाँ मारते थे मेरे सामने कि कुछ पूछो नहीं। ये सब करने को किसने कहा है? अरे क्या पहलवानी करनी है या सिनेमा एक्ट्रैस बनना है? आराम से रहो। हाँ बहुत अति मत करो, बहुत ज्यादा खाना भी नहीं खाना चाहिए, भूखे भी नहीं मरना चाहिए। साधारण तरह से घर गृहस्थी के जैसे रहो। अभी बैठे हैं इनसे पूछिए बताऐंगे इनकी क्या हालत थी। तीन साल इनका Treatment किया इनकी आंतड़ियों का तभी जाकर ठीक हुए, इनकी तो हालत खराब थी। तो बहुत ज्यादा हठ योग में जाने की जरूरत नहीं। हठ योग संसारिक आदमियों के लिए नहीं। हठ योग तो जंगलों में जाओ, वहाँ कोई गुरु होते है पहुँचे हुए, पहुँचे हुए गुरु होना चाहिए, ये गुरुघंटाल नहीं। वो आए यहाँ, उनका पेट इतना बड़ा था, हठयोग लेकर यहाँ पहुँचे। क्योंकि ये किसी गुरु के पास जाते हैं तो कुछ हाथ नहीं लगता है तो बस आसन–वासन लेकर आये और पैसे बनाये। आसन तो 1\10 भी नहीं है हठ योग के। यम नियम, अत्याहार, ईश्वर प्रणिधान, मनन, कितनी चीजें उसमें हैं। उसमें से

एक छोटी सी चीज है चक्रों की सफाई करनी है, वो भी पता होना चाहिए कि कौनसा चक्र कहाँ पकड़ा हुआ है किस प्रकार पकड़ा है, वही चीज मंत्रों की भी है। कि मंत्र का बोलना जो है वो भी अब आपसे कह दिया ये मंत्र जपो आज एक ओंकारवादी आये थे। अरे भाई ओंकार तो यहाँ की चीज है। अब आपका पेट का चक्र पकड़ा है, आप ओंकार–ओंकार क्या कर रहे हो? यही पकड़ जाएगा आपका। अब किसी ने बताया कृष्ण का नाम लीजिए, सबको Cancer of Throat हो रहा है, सबको हो रहा है, सब वहाँ से आते हैं मार खाये हुए, माँ हमारा कैंसर ठीक करो। अब आप सोचिये वहाँ श्री कृष्ण का वास है कंठ में, Cervical Plexus में। आपको मैं कितने ही नाम बता दूँ अब मैं उनको क्या ठीक करूँ? मैंने कहा अब आश्रम बनाने की जगह आप एक कैंसर हास्पीटल खोल दीजिए। एक नम्बरी भिखारी, उस राजा के नाम पर भीख माँगते घूमते है, कुछ शर्म नहीं आती। ये सब भिखारी की जात है। हरे कृष्णा करते फिरते हैं, सारा विशुद्धि चक्र पकड़ गया है इनका, कैंसर उनके हो रहा है। इनका कैंसर तो सिगरेट पीने वालों से भी बदतर होता है। अब इनको कौन समझाए? सबकी हालत खराब हो जाएगी। एक चार–पाँच साल में Cancer of Throat के Patient हो जाऐंगे तब छोड़ेंगे।

उससे ऊपर का जो चक्र है, जिसे कि नाभी चक्र यहाँ कहना चाहिए, हालांकि बीच में एक चक्र और पड़ता है। ये जो नीचे का चक्र दिखाया है जिसको कि मूलाधार चक्र कहते हैं, उसमें हमारे शरीर में जिसे Pelvic Plexus कहते हैं वो Control होता है। अब ये Pelvic Plexus जो है ये Gross चीज है और उसी से हमारी जननेंद्रियाँ वगैरह हैं। उसमें भी चार Plexus हैं, डॉक्टर भी इस चीज को जानते हैं। इसके भी चार Sub Plexus हैं। पर ये Gross में बाहर हैं परन्तु ये Subtle में अन्दर में ये चक्र है। जैसे है कि Subtle Prime Minister बैठे हैं लेकिन उनकी Secretariate बाहर काम कर रही हैं। इसी तरह की चीज है कि Subtle में गणेश जी बैठे हुए हैं, उनके भी चार हाथ हैं, उसके भी अर्थ हैं और उनसे जो कार्यान्वित है, वह Pelvic Plexus है जो, उसके भी चार Sub Plexus हैं। सब जितने भी चक्र हैं इनसे चालित जो भी Plexus हैं उतने ही उनके भी पंखुड़ियाँ हैं। इससे आगे आप देख रहे हैं कि मूलाधार चक्र है। मूलाधार चक्र ये जो भव सागर है अपने पेट में, अपने पेट ही में भवसागर है। यही विराट की शक्ल बनाई हुई है। इसके पेट में भी एक भवसागर है जिसमें एक चक्र है जिसे नाभि चक्र कहते हैं। ये भी Subtle में, पीछे की तरफ, रीढ़ की हड्डी में है। लेकिन वो चालित करता है Solar Plexus को और ये जो भवसागर है, सागर स्वरूप है। जो संसार के सारे सागर हैं इसी से बनाए गए हैं और यही गुरु का तत्व है। गुरुतत्व जो है ये जल तत्व है। और गुरु का तत्व है, इसमें ही है दत्तात्रेय आदि गुरु हैं वो बनाए गए हैं। और इनके दस मुख्य अवतार हुए हैं। इनमें से राजा जनक, नानक, मोहम्मद, सब एक ही तत्व के अवतार हैं। इसलिए मुसलमान और सिक्खों की लड़ाई बिल्कुल बेकार की बात है। नानक साहब तो संसार में दोनों को एक करने आए थे। बाद में मुसलमान गधे हो गए और उन्होंने आफत मचा दी। और अभी भी जिस चीज को उन्होंने मनाही की थी वो दोनों ने ही, एक ही बिल्कुल एक ही चीज है, दो चीज नहीं, बिल्कुल एक चीज है और उसका आपको प्रत्यक्ष है कि एक बार नानक साहब मक्के की तरफ में पैर करके लेटे थे तो किसी ने कहा इधर मक्का है, इधर क्यों पैर किए? तो उन्होंने कहा

चलो इधर मैं पैर कर लूँ, उधर ही मक्का आ गया। जहाँ उनके चरण थे वहीं मक्का आ गया। अगर वो मोहम्मद साहब नहीं थे तो कैसे आ गया? सोचने की बात है, ये इसकी पहचान है। तो ये जो हमारा भवसागर है इसमें जो आदमी बहुत ज्यादा कट्टर होता है जाति का, जिसमें कट्टरता होती है जाति की, वो आदमी पार नहीं हो सकता। मानें मैं मुसलमान, मैं हिन्दू, मैं फलाना, मैं ब्राह्मण वो पार नहीं हो सकता। ये भवसागर का Problem है और इसके बीच में जो नाभि चक्र है, ये नाभि चक्र जो है, ये हमारे धर्म की रक्षा करता है। 'यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारते'। इसमें विष्णु और लक्ष्मीजी का स्थान है, लक्ष्मीनारायण का स्थान है। और जब–जब धर्म की ग्लानि हो जाती है तब–तब साक्षात् परमात्मा ही जन्म लेते हैं क्योंकि ये जो कृष्ण आपने देखे हैं या जो विष्णु जी हैं यही हमारे सृजन तत्व के हैं यानि evolutionary हैं। इसलिए वो जन्म लेते हैं। शिवजी ने कभी भी जन्म नहीं लिया। ब्रह्मदेव ने एक ही बार जन्म लिया है जो कि इस चक्र में बसते हैं और इसी से चारों तरफ घूम कर और उसका सम्बंध नाभि से है। इसलिए यह ब्रह्मदेव और सरस्वती का स्थान है और वो चारों तरफ घूम कर और इस भवसागर को बचाते हैं और मनुष्य में धर्म की स्थापना करते हैं। मनुष्य के धर्म दस हैं मुख्यतः और इसलिए दस बहुत बड़े गुरु हो गए। जैसे कि सोने का धर्म होता है, आप कहते हैं कि सोना कभी खराब नहीं होता untarnishable है। इसी तरह मनुष्य में दस धर्म होते हैं, जब इस धर्म से वह च्युत हो जाता है तो वह दानव हो जाता है। गुरुओं नें बताया है कि शराब नहीं पीने की क्योंकि मनुष्य अपने धर्म से च्युत हो जाता है। इसलिए उन्होंने मना किया है और शराब आपके धर्म के विरोध में बैठती है। मनुष्य को गर दानव बनाना है तो उसे शराब दीजिए। गर एक दानव बना घूम रहा है तो ऐसी जगह जाने की जरूरत क्या है? और ऊपर से उस पर कविता लिखते हैं। और ये मुसलमान जो अपने को बहुत बड़ा मुसलमान कहलाते हैं, इनसे बढ़कर शराब पीने वाला तो कोई है ही नहीं। सिक्खों का क्या हाल लन्दन में हो रहा है? शर्म आती है। वो एक हेल्मेट लगाने के पीछे में मार आफत मचा दी, जब शराब पीने पर आते हैं तो क्या अंग्रेज और क्या रशियन पियेंगे? पहले तो चोरी छिपे पीते थे अब तो खुलेआम। सबसे बड़ी चीज है जो हमे बता गए हैं उसके थोड़े से भी रास्ते पर चलो वो पार हो सकता है। लेकिन अब कोई शराबी कबाबी वहाँ से आए और मेरे ऊपर हक लगाए कि माँ हमें पार कर दो, तो उसका क्या अधिकार है? बताइए आप। उसका कोई अधिकार होता है पार होने का? जब उसने एक छोटी सी भी बात अपने पिता की नहीं सुनी तो उसको कैसे हम पार करायें? और जब वह पार नहीं हुआ तो जाकर के मेरी बदनामी करेगा कि हाँ वो तो ऐसे ही हैं, वो तो हाथ घुमाती हैं, जादू करती हैं मंत्र करती हैं। और आप क्या हैं? उनसे पूछना चाहिए आपने क्या किया आज तक? आपने किसे पार किया है? आपने किसका भला किया है? आपने किसीकी तंदरुस्ती बढ़ाई है, किसीको ठीक किया है, कुछ किया है? माँ को तुम बुरा बोलते हो तुम्हारी क्या हस्ती है? लेकिन यहाँ तो जो उठा वो ही बोल सकता है। किसी को भय तो है ही नहीं किसी के खिलाफ बोलने में। अब इससे ऊपर में, मैं अभी आपको संक्षिप्त में बता रही हूँ क्योंकि विषय बहुत बड़ा है। लेकिन मैं कल आपको conscious और subcounscious mind पर बताऊँगी।

ये चक्र जिसे हृदय चक्र कहते हैं और हृदय चक्र में श्री जगदम्बा का स्थान है, शक्ति का

स्थान है, जो सब जगत की जननी है उसका स्थान है। क्योंकि जब–जब भवसागर में बड़े–बड़े राक्षसों का जन्म हुआ और उन्होंने सारे जितने सात्विक लोग हैं उन्हें सताना शुरु कर दिया तब वो स्वंय साक्षात् आकर के उनका हनन करती हैं, उनको खत्म कर देती हैं। इसके लिए आपको देवी भागवत पढ़ना पड़ेगा, देवी पुराण पढ़ना पड़ेगा। फिर मार्कण्डेय जैसा कोई बड़ा गुरु नहीं हुआ, मार्कण्डेय भी बहुत बड़ी शक्ति है, बड़ी महान शक्ति थी मार्कण्डेय भी। और श्री आदि शंकराचार्य जो थे वो तो अभिभूत थे माँ से। उन्होंने तो कुछ लिखा ही नहीं वो तो बस माँ की स्तुति ही गाते रहे सुबह शाम। गर कोई शंकराचार्य को पढ़े तो उन्होंने कोई भी विवरण खास दिया नहीं, बस वो तो सौन्दर्य लहरी और ये चैतन्य लहरी, जिसे हम Vibration कहते हैं, यही गाते रहे। बहुत बड़े पुत्र थे वो। अब उन्हीं के सहारे आजकल बैठे हुए हैं। मैंने सुना कि वो बड़ा भारी छत्र सोने का बनवा रहे हैं। अब क्या कहिए? अपने सिर पर है वो और अपने ऊपर में छत्र बना रहे हैं, किसी दिन गिर विर गया तो चोट ही लग जाएगी उनको। मतलब गिरेगा तो मेरा नाम मत रखना, लेकिन बता रही हूँ मैं आपको। कम से कम इतना बता देना कि उनके सिर पर चोट न लगे, गिरे तो चारों तरफ फैहरे बीच में बैठे रहें। अब उसी में बैठकर विमान में वो शायद स्वर्ग जाने वाले है और सब लोग उनकी पूजा में जाते हैं, खास कर जो South Indian हैं इनका तो कचूमर बना रखा है। मैंने एक महिला से पूछा कि भई तुम्हारा हीरे का हार कहाँ गया? वो मैंने दान में दिया। मैंने कहा किसको? कहने लगी इनको। मैंने कहा अच्छा। कहने लगी इनका बन रहा है ना उसमें हीरे भी लगने चाहिएं। मैंने कहा उसमें हीरे लगाओ और ऊपर में चार पाँच हाथी भी खड़े कर दो एक–एक तमाशा दुनिया में हो रहा है। जरा देखो तो सही क्या ये भगवान के नमूने हैं? ऐसे होते हैं भगवान के लोग? अरे भगवान के लोग तो बादशाह होते हैं, बादशाहत होती है उनकी, उनको क्या देने वाले हो तुम? बादशाहत ये होती है कि जमीन पर सो जाऐं तो भी बादशाह हैं, चाहे महलों में रहें तो भी बादशाह हैं, चाहे कहीं भी रहें तो भी बादशाह हैं। उसको कहना चाहिए भगवान का आदमी या ये जो उसका मुकुट लगाकर के घूमेंगे। यहाँ पर हीरे जड़ाकर के, गधों में हीरे लगाने से वो कोई राजा नहीं होते? उनको ऐसा लगता है गधों को अपने कि दुम में थोड़े से हीरे जड़ा लो तो दुम कट जाएगी। अच्छा तो ये देवी जी का स्थान है। देवी जी जो हैं हृदय चक्र में शिवजी का स्थान है। हृदय में आत्मा स्वरूप शिवजी बसते हैं हर समय। मैं इसके लिए हमेशा उदाहरण देती हूँ, आजकल Modern बड़ा अच्छा उदाहरण है, जिस तरह से Light में एक छोटा सा दीप जलता रहता है गैस के या अपने गैस घर में होती है देखा होगा उसमें एक छोटी सी फिलकर जलती रहती है। जैसे ही Light आ जाती है, Light कहने से या यूँ कहिए गैस की धारा आ जाती है, माने कुण्डलिनी ऊपर आ जाती है, इसकी Light उसको पकड़ लेती है। और आप की जो चेतना है उसमें Light आ जाती है? आपकी चेतना अभी enlightened नहीं है, उसको किसी तरह से हृदय के पास पहुँचाना चाहिए और हृदय जहाँ पर शिवजी का स्थान है असल में सदाशिव की पीठ ये है, स्थान वो है परन्तु पीठ ये है, कुण्डलिनी जैसे ही यहाँ पर छू जाती है ऐसे ही हृदय आलोकित हो जाता है। ये है सदाशिव का स्थान, इसे हम कहते हैं की ब्रह्मरन्ध्र से ऊँचा सदाशिव का स्थान है। जैसे ही कुण्डलिनी वहाँ छू लेती है आपकी चेतना आलोकित हो जाती है। तभी फिर ब्रह्म आपमें स बहने लगता

है। ये जो बह रहा है वो साक्षात ब्रह्म है। आप ऐसे हाथ करके देखिए, मैं जो भी बात कह रही हूँ सच है या झूठ है? आपको फौरन Vibrations आएंगी। ये ब्रह्म आपके अन्दर से बह रहा है। ब्रह्म जो है आत्मा का प्रकाश है और आत्मा ही परमात्मा की परछायी है। परमात्मा की परछायी अपने अन्दर जो है, प्रतिबिम्ब जो है वो आत्मा स्वरूप है। परमात्मा सदाशिव स्वरूप मानने चाहिए क्योंकि उन्हीं के Manifestation से बाद में आपको ब्रह्म देव और विष्णु ये तीन aspects निकलते हैं। माने पहले तो एक सदाशिव स्वरूप होता है और फिर उसके तीन aspects बन जाते हैं जिसको हम कह सकते हैं सदाशिव स्वरूप या शिव स्वरूप, जो कि हमेशा existence मात्र है, उनकी वजह से हम existed हैं। आज गर हमारा हृदय बन्द हो जाए तो खत्म हो जाएंगे। अस्तित्व जिसे कहते हैं, existence जो है, वो शिव स्वरूप है। उसके बाद में जो ब्रह्म स्वरूप है वो Creator है, मतलब वो सृजन करते हैं, सारे संसार की निर्वृत्ति करते हैं। और तीसरा स्वरूप जो है विष्णु जी का, वो सृजन माने उत्क्रान्ति करते हैं Evolution करते हैं। उनकी वजह से हमारे अन्दर धर्म बैठता है; हरेक Elements के धर्म बैठते हैं, हरेक सृष्टि का, हरेक चीज का धर्म बैठता है। आम का पेड़ लगाओ तो आम निकलेगा, ये सब काम जो हैं इनकी सृजन शक्ति करती है। माने उनकी जो जिसे कहना चाहिए जो उत्क्रान्ति होती है। शिवजी का स्थान यहाँ पर है। अब शिवजी नाराज़ हो जाते हैं बहुत जल्दी, भोले आदमी हैं ना, बहुत जल्दी नाराज़ हो जाते हैं, खास कर के कोई जरा सी भी गलती कर दो तो बहुत जल्दी गुस्से हो जाते हैं। उनको मानने के लिए तो साक्षात् आदिशक्ति को उनके चरण पकड़ने पड़ते हैं जब गुस्से हो जाते हैं। तो उनको भई गुस्सा नहीं करना चाहिए। अब वो गुस्सा काहे से होते हैं, वो गुस्सा इस लिए होते हैं जब मनुष्य का चित्त आत्मा की ओर नहीं होता। मनुष्य है अब जो हठ योगी हैं, जो आसन–वासन करते हैं, so called हठ योगी, तो रात दिन वो अपने शरीर को मारते रहते हैं। शरीर की तरफ जिस आदमी का ज्यादा चित्त गया गुस्से हो जाएंगे। जो आदमी बहुत ज्यादा मेहनत करता है और सोचता है मुझे ये भी करना चाहिए, वो भी करना चाहिए, धन कमाना चाहिए घर बनाना चाहिए, घर बनाने के बाद aeroplane बनाना चाहिए, aeroplane बनाने के बाद में पता नहीं क्या बनाना चाहिए। इस तरह के जो आदमी होते हैं उनसे बड़े रुष्ट हो जाते हैं शिव जी, इस लिए लोगों को heart attacks आते हैं क्योंकि चित्त आत्मा की ओर नहीं। चित्त को आत्मा की ओर रखो, खास कर आपके दिल्ली शहर में यह बहुत commmon चीज़ है। इसको मैं बहुत mild शब्दों में कहती हूँ कि imbalance, उससे लोग खुश होते हैं। नाराज़ नहीं होते हैं माने right side की activity ज्यादा है। आप मेहनत कर रहे हैं, आराम हराम है, चलो मेहनत करो, मेहनत करो, मेहनत करो, पैसा कमाओ, देश का development होना चाहिए। develop माने क्या वो इंग्लैण्ड जैसा चाहिए जहाँ पर की 10% लोग तो suicide करते हैं 10% लोग पागल खाने में जाते हैं, 10% लोग अनाथालय में बैठे हैं 10% लोग बच्चे जो हैं वो भांग खाते हैं, इसी प्रकार 10% करते करते 1% कोई बैठ जाऐ तो वो सहयोग करते हैं। ये हालत है। वैसा आपको बनाना है यहाँ? जहाँ की एक grand mother है अपने grandson से शादी करती है। ये अंग्रेज अपने ऊपर rule करते थे पहले, गधे कहीं के, इनको गधा कहूँ कि क्या कहूँ? ऐसे तो गधा भी नहीं करता होगा। और common चीज है grandfather, grand

daughter से शादी करता है, grandmother, grandson से शादी करती हैं! उन्हें शर्म नहीं आती। London में very common रोज news paper में उनके वो आते रहते हैं, क्या? love letter। सबेरे पेपर खोलो तो लगता है क्या गीता लिखी हुई है? ये अधर्मी लोगों ने यहाँ इतने दिन राज किया उस वक्त उतने गधे नहीं थे। अब बहुत ही गधे हो गए हैं। अब तो liberated हो गए हैं न। वहाँ के बूढ़े तो इतने गधे हो गए, इतने गधे हो गए हैं कि सब उन्हें silly old कहते हैं वहाँ पर। और वहाँ की लड़कियाँ बड़ी होशियार हैं। उन्होंने नाम बनाए हुए हैं, वो उन्हें sugar daddy कुछ कहते हैं एक बूढ़े को बैठा रखा है, उसका पैसा खाती रहती हैं, घूमती रहती हैं आराम से। 15 साल की लड़कियाँ बड़ी होशियार होती हैं। 13 साल से होशियार हो जाती हैं। 15 साल से नोचना शुरु करती हैं, बस पैसा कमाने से मतलब। तो क्या हुआ? चार शादी हो गई तो क्या हुआ? और आदमी भी उनकी बात मानते हैं, बुद्धू कहीं के। बूढ़ों को vanity हो जाती है, उनको वहाँ Inferiority complex होता है, क्योंकि कोई wisdom ही नहीं है उनके अन्दर में। अपने यहाँ गर कोई बूढ़ा होगा चीज़ है, बाबा बुजुर्ग हैं, आइए, बैठिए। उनसे बगैर पूछे हमलोग कोई काम नहीं करते। क्योंकि वहाँ के बूढ़े जो हैं इतने गधे हैं उनके कौन चरण छुए? अमरीका तो भैया, उनका नाम ही न लो। वो तो उनके नाना हैं। गधे कहीं के, वो तो वहाँ common हैं और अभी London में भी उसका rule निकला है वहाँ London में कि उसका कायदा तुड़वाया वहाँ पर, वो तो छोड़ो कायदा तुड़वा रहे हैं वहाँ पर कि माँ–बाप माँ–बाप का सम्बन्ध जो बच्चों से होता है उसका जो कायदा होता है वहाँ पर वो कायदा है। अपने यहाँ ऐसा कोई कायदा नहीं। गोबर खाने का कौन सा कायदा है कि गोबर नहीं खाओ। एक तो मनुष्य को ऐसे ही समझ में आता है और अभी उसके कायदे के पीछे में लड़ रहे हैं वो लोग। ये जो कायदा है उसको मिटाओ और वो भी openly parliament में जाकर बेटी और बाप और बेटा और माँ, बोलो तो! अब उन गधों से क्या सीखने का है? क्या development कर रहे हो बाबा? जैसे ही पैसे ज्यादा आ गए उसके पैर निकलते हैं। पहले तो शराब, जो आदमी शराब पीता है उसको तो promotion देना ही चाहिए। न उसको एक पैसा ज्यादा देना चाहिए, पैसा ज्यादा हो गया तभी तो शराब पी रहा है। गर भूखा मर रहा होता तो क्या पीता? वहाँ के Politicians ने उनको चौपटाया है उनको बस क्या है? उनको तो बस ये है किसी तरह से बस पैसे मिल जायें, वोट मिल जाये, फिर जो करना है करो। ये तुमको कायदा पास करवा देगा, बस तुम हमको वोट दो। क्योंकि Politicians में भी वहाँ कोई धर्म तो है नहीं। तो ये भी कायदा वहाँ पास होने वाला है बहुत कोशिश हो रही है कि ये जो कायदा बना हुआ है absurd, उसको हटा देना चाहिए। बहन–भाईयों पर भी नहीं। वहाँ आपको आश्चर्य होगा अपनी बहन के साथ जायें London में कोई होटल में जगह नहीं मिलेगी। बहन भाई को allowed नहीं है। ये चाहे तो आप और औरत को ले आ सकते हैं। आपको आश्चर्य हो रहा है वहाँ लोग सोचते हैं ये कैसे हिन्दुस्तान में हो रहा है? ये हो ही नहीं सकता। हमने कहा हमारे यहाँ अपने भाई तो छोड़ दो, पर किसी को गर भाई मान लिया तो सारा घर उसे मानता है, तुम हो कहाँ? ये तो अपने पांवों के धूल के बराबर नहीं है, इनको तो बहुत दिन तक अपने से सीखना है। तुम्हारे अन्दर जो सहज बातें हैं वो उन गधों के अन्दर में घुसती नहीं हैं। अभी मेरे

शिष्यों की बात छोड़ो, बहुत ही सभ्य हैं, कहने लगे इसका मतलब माँ हमारे अन्दर कोई संस्कृति नहीं। इसका मतलब यही हुआ बेटे। तो समझ लो। कहने लगे हमारी आँख बहुत इधर–उधर दौड़ती है कमसे कम इसको रोको। गणेश सब अपने साथ रखते हैं कि हे गणेश हमें पवित्र बनाओ। तो मैंने कहा इसके लिए तुम पृथ्वी पर अपनी आँख लगाकर चलो। गर तुमने अपने पृथ्वी पर आँख लगाई तो ठीक होगा। आपको आश्चर्य होगा कि सिर्फ वही देख के चलते हैं, ऊपर आँख ही नहीं उठाते। वहाँ के जो Seeker हैं वो बड़े भारी पहुँचे हुए Seeker हैं। वो जो एक बार कह देते हैं, अब वो कान पकड़े हुए हैं। उनका वही हो गया। बहुत हो गया कहने लगे इसका कोई अंधेर है। अब आप सोचिए क्राइस्ट पर Picture निकाल रहे हैं कि क्राइस्ट का और उनकी माँ का बुरा सम्बंध था। मैंने कहा, "हिन्दुस्तान में ये पिक्चर नहीं चल सकती। ये तुम इधर ही चला लो।" तो वो उस पर rule लाना पड़ेगा, ये पिक्चर नहीं बनेगी जब तक मैं जिन्दा हूँ। वो बेचारी वहाँ शरीफों का कोई मार्ग नहीं रहा। ये रजोगुण में जब आप आते हैं, Right Side में रजोगुण हैं, तमोगुण से उठकर रजोगुण में जब आप आते हैं, आप देख रहे हैं बीच में सतोगुण है। तो बीचोंबीच रहना चाहिए। इसलिए बुद्ध ने कहा है कि बीचोंबीच रहना चाहिए। जो मनुष्य बहुत रजोगुण में उतरता है वह अति में जाता है और अति में जाने के कारण ही उसमें अतिक्रमण हो जाता है।

अब आप समझ रहे हैं कि किस तरह से मैंने आपको चक्रों के बारे में बताया। मूलाधार चक्र और मूलाधार, उसमें बहुत अंतर है– मूलाधार जिसमें कुण्डलिनी स्थित है और मूलाधार चक्र जिसमें कोई नहीं जा सकता। अत्यन्त पवित्र चीज है। उसको Information सिर्फ माँ से आती है। आप किसी ऐसे व्यक्ति या किसी अवतरण के सामने जाते हैं, जिसको कि Authority है, तभी ये कुण्डलिनी हिलती है और वो मूलाधार चक्र से कहती है कि हाँ ठीक है। तब वो release करते हैं यहाँ से उसमें शक्तियाँ दोनों Side से ताकि जरा सी Tension कम हो जाए और फिर कुण्डलिनी उठती है धीरे–धीरे और नाभि चक्र से गुजर के हृदय चक्र से गुजर के ऊपर जाती है। हृदय चक्र के एक Side में, इस side में मैंने कहा आपसे, शिवजी का स्थान है और उस Side में जबकि यहाँ से आपके लक्ष्मीनारायण दस अवतरण लेकर के Revolve करे तब आठवें अवतरण में जब रामजी का अवतरण हुआ वो स्थान उनका है। लेकिन रामचन्द्र जी बराबर बीचोंबीच में नहीं हैं वो Right Side में हैं, माने रजोगुण में उनको बिठाया गया। उनको ये भी भुला दिया गया था कि वो अवतरण हैं क्योंकि उनको रजोगुण पर बिठाकर के उनकी मर्यादा बनानी थी कि ये मर्यादा है क्योंकि Ideal King के रूप में वो आए थे मर्यादापुरुषोत्तम। इसलिए पुरुष की जो मर्यादा है वो रामचन्द्र हैं। और जिस मनुष्य में मर्यादा नहीं होती उसका ये चक्र पकड़ता है। बहुत से लोग सोचते हैं अब हमें freedom मिली तो बस मर्यादा छोड़ो। दूसरे जिस मनुष्य में अपने पिता के प्रति श्रद्धा नहीं होती उसका ये चक्र पकड़ता है। Left heart उसका पकड़ता है जिसको अपनी माँ के प्रति श्रद्धा नहीं है और जिसको अपने पिता के प्रति श्रद्धा नहीं होती या जो अपने पिता के प्रति दुर्व्यवहार करता है उसका ये चक्र पकड़ता है, और दूसरा गर किसी ने अपने बच्चों के साथ दुर्व्यवहार किया उसका भी ये चक्र पकड़ता है। ये बीच वाला चक्र है वो जब औरतों को पकड़ता है उससे Breast Cancer होता है जिसे sense of insecurity आ जाए जब

ये चक्र पकड़ता है। तीनों चक्रों में मनुष्य को palpitation or breathing trouble ये सब बीमारियाँ होती हैं। ये तो बीमारी की बात हुई लेकिन इससे भी बहुत subtle बातें हैं। इससे ऊपर के चक्र को मैं कल समझाऊँगी आप सब को। ये चक्र जो कंठ पीछे में यहाँ है उसे विशुद्धि चक्र कहते हैं। इसमें श्री राधाकृष्ण का स्थान है। श्री राधाकृष्ण के स्थान पर जाकर के इनका अवतरण पूरा होता है वहाँ पर 16 petals है और वहीं 16 subplexus हैं और इसी से हमारे आँख–नाक ये सब माथा यहाँ का Portion जिससे कि लोगों को sinus आदि की तकलीफें होती हैं, मुँह जबड़ा नाक आदि जो कुछ भी है सब इसी से होता है। अब ये बहुत ज़रूरी चीज है कि इस चक्र को खूब अच्छी तरह से समझें। इसके बारे में आपको मैं कल बताऊँगी। और इससे ऊपर में जो है आज्ञाचक्र ये भी बहुत जरूरी चक्र है, इसके बारे में मैं कल बताऊँगी। इसके बाद सहस्रार है।

इस तरह आपने देखा है कि किस प्रकार सात चक्रों में से कुण्डलिनी आपो–आप उठती है। कुण्डलिनी किस तरह से उठती है किस तरह से चलती है ये मैं परसों बताऊँगी आपको, और ये भी बताऊँगी कि conscious, subconscious और collective subconscious और supraconscious और collective supraconscious और supraconscious और collective consciousness में आप किस प्रकार जागृत होते हैं। इस तरह से पूरी तरह मैं आपको scientifically पूरी बात समझाऊँगी। आप लोगों ने जो भी Lecture सुना है उसमें से स्वंय साक्षात vibration बहते रहते हैं। इससे भी लाभ हुआ है और कल जब आप आयेंगे सवेरे तो जागृति करेंगे। आप लोग meditation पर बैठें, उसके बाद थोड़ा सा जम जाने के बाद में शाम को फिर ये सब बताऊँगी आपको। उसके बाद शायद दिल्ली में उन लोगों ने दिल्ली में भी मेरा प्रोग्राम रखा है। आप लोग आयें, फिर उसके बाद मैं London चली जाऊँगी और फिर से आऊँगी अगले साल। जो बात मैंने कही वो फिर दोहराऊँगी। Lecture सुना और उसके बाद चले गए। ऐसा नहीं करो। अपनी इज्जत करो। अपनी सम्पदा को पाओ। अपनी सम्पदा को पाते ही आपका जितना physical, emotional, mental problem है, सब खत्म हो जाएगा और आप उस दशा में पहुँच जाएँगे जिसे साक्षी स्वरूप कहते हैं। और आपके हाथ से अविरल परमात्मा की ये dynamic शक्ति है, बहती रहेगी। छोटी सी कहानी बताकर मैं अपना Lecture खत्म करूँगी। राधाजी को मुरली से एकबार बहुत ईर्ष्या हो गई तो उन्होंने जाकर श्री कृष्ण से कहा कि तुम्हारे मुंह में ये मुरली क्यों लगी रहती है? तो कृष्ण नें कहा कि तुम मुरली से जाकर पूछ लो। उन्होंने मुरली से जाकर पूछा तुम्हारी क्या विशेषता है? तुम्हारी क्या Speciality है? तो मुरली नें हंस कर कहा कि तुमको नहीं मालूम मेरी विशेषता है कि मैं सब विशेषता खो चुकी हूँ, मैं खोखली हो गई हूँ। मेरे अन्दर से वह बहता, बजता है। इसी प्रकार आप खो जाते हैं और इसलिए परमात्मा ने आपको बनाया है कि आप उनकी मुरली बन जाएं। आपके अन्दर से वो कार्यान्वित होंगे तो आप जानियेगा। उसके कार्य को भी आप जानिएगा, उसकी अगम्य लीला को आप जानियेगा, उसकी सर्वव्यापी शक्ति को आप जानिएगा। ये सब, सब कुछ आपका अपना हो सकता है। बुद्धि जो आपकी है वह सीमित है, उसको थोड़ा सा कहना भैया तू जरा ठण्डी रह। सीमा से पार जाने के लिए उसमें सीमित चीजें नहीं चलती इसमें असीमित में कूदना है। अत्यंत सूक्ष्म

है और सूक्ष्म चीजों के लिए अपनी बुद्धि थोड़ी सूक्ष्म होनी चाहिए। हर समय आपका मन लपटा रहे बाहर और बाहरी चीजें आप सोचते रहें तो काम नहीं बनता। थोड़े सूक्ष्म में आ जाओ, सूक्ष्म में आते ही सारे gross तो क्या, जड़ जीव–जन्तु का ऐसे ही आप control कर सकते हैं। पर सूक्ष्म को पहले पाना चाहिए, बहुत ही आसान चीज है, इसमें कोई मुश्किल नहीं है। मैं London में थी तो London में लोगों ने कहा माँ बड़ी ठण्डी है, थोड़ी गर्म कर दो। तो मैंने कहा अच्छा तुम्हें Summer चाहिए? कहने लगे हाँ। आप लोगों ने सुना होगा London में दो . तीन Summer बड़े हुए हैं। अभी दिल्ली में हमारा Programme पिछले महीने होने वाला था। हमारे सुबमण्यम साहब ने कहा माँ यहाँ बहुत ठण्डी हो रही है, मायनस 3 डिग्री Temperature हो रहा है, तो क्या करें? मैंने कहा ठीक है, अगले महीने रखें हम, अभी टाईम नहीं है। अगले महीने आयेंगे। तो उन्होंने कहा कि नहीं–नहीं फरवरी तक तो बहुत ठण्ड हो जाएगी। तो मैंने कहा अच्छा तुम रखो तो सही। हमारे आने से एक दिन पहले ही सूर्य देवता शुरु हुए मेहनत करने के लिए और अभी आप लोग आराम से बैठे हैं। तो ये कोई मुश्किल काम नहीं है। पहले सूक्ष्म को पायें, सूक्ष्म को पाते ही साथ में ये क्या है? ये जड़ तो, वैसे ही आपने जड़ को काफी काबू कर लिया है। पर जड़ आपकी खोपड़ी पर बैठ गया है। जैसे की आपमें जड़ है। जैसे Electricity को आपने Manage कर लिया है, लेकिन Electricity के बगैर आपका काम नहीं चलता तो Electricity ने आपको काबू किया हुआ है। लेकिन जब आप पार हो जाते हैं और उस दिशा में आप पहुँच जाते हैं जहाँ कि सारे जड़ के ऊपर आप बैठे हैं तो जड़ आपके चरण छूते हैं, जो कुछ करना चाहें आप करवा सकते हैं। इसका महत्व ही नहीं रहता है, फिर तो इसका Interest ही नहीं रहता। तब तो मजे में आदमी अपने में ही रहता है। और सबसे जो चमत्कृति परमात्मा की वो आप लोग हैं। मानव। और फिर उसका मजा आता है जैसे अभी एक साहब वो पैर पर वो आए तो किसी ने बुलाया कि देखो–देखो उनके Vibrations कैसे आ रहे हैं! ऐसे ही तुम्हारे अन्दर से सुगंध बहता रहता है। सुबह से शाम तक उसकी सुगंध को लेते रहो और उसको पाओ, बहुत से लोग मैंने सुना कि कहने लगे माँ के पैर नहीं छुऐंगे तो कुछ भी नहीं कर पाएंगे। हिन्दुस्तान में माँ के पाँव क्या, मैं तो तुम्हारी गुरु तो हूँ नहीं। मेरे पाँव छूने में क्या हर्ज है? गर मैं तुम्हारी माँ हूँ तो मुझसे कुण्डलिनी जागृत करवा लो।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।